ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

ॐ

ॐ पार्श्वनाथ ह्रीं नमः

चिन्तामणि ग्रन्थमाला शोध प्रकाशन पुष्प नः ३

नवरात्रि पूजा विधान

(पद्मावती शुक्रवारव्रत उद्यापन)

(हिन्दी)

गणधराचार्य कुन्थुसागर जी महाराज द्वारा विरचित

निर्देशन

परमविदुषी आर्यिका क्षेमश्री माता जी।

प्रकाशन :

चिन्तामणि ग्रन्थमाला शोध प्रकाशन

श्री दि० जैन मन्दिर जी

श्री १००८ चिन्तामणि भगवान् पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र

मौहल्ला सराय - रोहतक (हरियाणा) १२४००१

प्रथम संस्करण ११०० वि०नि०सं० २५१६ मूल्य : १० रु० सदुपयोग

सन् १९९३

चिन्तामणि ग्रन्थमाला शोध प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र रोहतक

सम्पादन : डा० रामनिवास गुप्त, एम०ए०, आचार्य पी एच०डी०
(अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वैश्य कॉलेज रोहतक)

अध्यक्ष	द्वीप कुमार जैन	दूरभाष ७५५३७
उपाध्यक्ष	शैलेश जैन	दूरभाष ७६८१६
महामंत्री	सतीश जैन	दूरभाष ७७२६८
स० मंत्री	अजय जैन	
कोषाध्यक्ष	ऋषभ चन्द जैन	दूरभाष ७२१५६
प्रबन्धक	अनिल जैन (बैंक वाले)	दूरभाष ७३१८४
स० प्रबन्धक	सुरेन्द्र जैन (भटगाँव वाले)	

प्राप्ति स्थान एवं कार्यालय
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी
श्री १००८ चिन्तामणि भगवान पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र
मौहल्ला सराय, रोहतक (हरियाणा) १२४००१
प्राप्ति स्थान
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर जी
भगवान पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र
ग्राम अडिन्दा, तहसील वल्लभनगर, जिला उदयपुर (राजस्थान)
कम्पोजिंग : सिद्धान्ता लेजर प्रिंटर्स, पुलिस लाइन के सामने, रोहतक। फोन : ७६७७६
मुद्रक : आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना रोड, रोहतक. फोन : 72374

दो शब्द

इस संसार में फँसे प्राणियों को दुःख ही दुःख नजर आता है। सुखी कोई नहीं है। अगर सुख चाहते हो तो धर्म का पालन करो। धर्म ही सुख प्रदान करने वाला है। वर्तमान में लोगों की धर्म में श्रद्धा घट गई है। कोई भी धर्म का पालन नहीं करना चाहता और सुखी होना चाहता है। अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त करने के लिये भव्य प्राणियों को वीतराग-प्रणीत धर्म का पालन करना चाहिये। उससे आत्मशांति मिलेगी, शांति प्राप्त करने का दूसरा उपाय नहीं। अशान्ति से भरे हुए इस समाज को कैसे शांति पहुंचाई जाये ? वर्तमान में लोगों के अंदर अनेक प्रकार के रोग, शोक, धन-नाश, भूत, व्यंतर, डाकिनी, शाकिनी आदि की बाधा व जादू, टोना, टोक का जोर दिखाई पड़ता है। निसंतान होना आदि अनेक समस्याएँ हैं। लोग इन कारणों से थक चुके हैं, कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं। इसलिये कुछ पीर, पैगम्बर, चण्डी, भैरव आदि के पास जाते हैं, अपनी श्रद्धा बिगाड़ कर धर्म में दोष लगाते हैं। इतना करने पर भी संकट नहीं टलता, दुःखी ही रहते हैं। मिथ्या देवों के पास तो चले जायेंगे किन्तु पद्मावती आदि देवों की पूजा अर्चना को मिथ्या समझेंगे। नियम है कि ये सम्यक्ती देव देवियां हैं, नियम से सम्यग्दृष्टि ही हैं। इनकी योग्यतानुसार इनकी सेवा, पूजा, वन्दना, करने में कोई दोष नहीं है। अनेक नगरों में, अनेक लोग अपनी समस्याओं को मिटाने के लिये संतोषी माँ का व्रत करने लगे हैं। यह तो और भी खराब हो गया, इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमारे यहां जैन सिद्धांत में पद्मावती माता का शुक्रवार व्रत है, इसको करें। बहुत कर भी रहे हैं लेकिन इस व्रत का उद्यापन नहीं है, सो उद्यापन कैसे करें ? नवरात्री में क्या करें ? इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए यह (नवरात्रि पूजा विधान) लोगों के उपकार के लिये लिख दिया है। इस विधान को नवरात्री में दस दिन में पूरा करें, जाप्यादि सब विधि विधानानुसार करें। प्रतिदिन सहस्र नाम के सौ-सौ अर्घ्य चढ़ाएँ। यह विधान शुक्रवार व्रत के उद्यापन रूप में भी हैं और नवरात्री में

नौ दिन की पूजा रूप में भी है। इस विधान से अवश्य ही अपनी-अपनी समस्याओं का समाधान मिलेगा, शान्ति प्राप्त होगी, देवी अवश्य प्रसन्न होगी, आशीर्वाद मिलेगा, इसीलिये यह परिश्रम किया है।

लेकिन जिनको पद्मावती देवी के प्रति श्रद्धा है, वही इस विधान को करे, अन्यथा नहीं। श्रद्धा रहित कोई भी कार्य नहीं होता। शुक्रवार व्रत को तीन वर्ष करें। श्रावण महीने के चारों शुक्रवार उपवास या एकासन करें, फिर इस विधान के रूप में उद्यापन कर दें। यह विधान दस दिन में भी हो सकता है। समयाभाव में दो दिन या तीन दिन (शुक्रवार से रविवार) में भी पूरा कर सकते हैं। प्रतिदिन प्रथम कोष्ठ की पूजा करने से सभी मनोकामना पूर्ण होंगी। अपनी शक्ति अनुसार करें। शक्ति को छिपाएँ नहीं। भक्ति को मुख्यता दें, अवश्य ही देवी माँ प्रसन्न होगी, कोई कमी नहीं रहेगी। यह इस काल की कल्पवृक्ष के समान भव्यों को फल देने वाली है। यह महादेवी परम-दयालु है, जैन धर्म व उसके भक्तों पर स्नेह रखती है। जो इसको भक्ति व श्रद्धा से पुकारे उसका कार्य कर देती है। जिनधर्म द्रोहियों को शांत करके जैन धर्म का पालन करने वाला कर देती है। हे माँ, जगत के जीवों को शान्ति प्रदान करो।

इस विधान को छपवाने में रोहतक (हरियाणा) के श्रीमान् सेठ द्वीप कुमार जैन, शैलेश जैन, सतीश जैन, अजय जैन, ऋषभ चन्द जैन, अनिल जैन, सुरेन्द्र जैन, डा० रामनिवास गुप्त एवं अन्य सम्बद्ध सदस्यों ने भार संभाला। सभी महानुभावों को मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद। यह विधान मेरी परम शिष्या आर्यिका क्षेमश्री के आग्रह से बनाया गया है। उसने ही इस ग्रन्थ का आलेख तैयार करने में सहायता भी बहुत की। उसको भी मेरा आशीर्वाद। **श्रीमती सुगनमाला जैन** (माता सतीश जैन) एवं अन्य दानी व धर्मानुयायी विभूतियों ने आर्थिक सहायता देकर, ग्रन्थ के प्रकाशन में सहयोग करने की भावना व्यक्त की है, उन्हें भी मेरा सहर्ष आशीर्वाद।

ग० आ० कुन्थुसागर

सम्पादकीय

जीवन का अन्त मृत्यु है, लेकिन इसका लक्ष्य मोक्ष है। मनीषी कहते हैं, जीवन एक यात्रा है और मृत्यु क्षणिक विश्राम। जैसे कोई यात्री किसी पड़ाव पर थोड़ी देर आराम करके फिर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है, उसी प्रकार व्यक्ति भी मृत्यु के बाद पुनः जन्म लेकर इस यात्रा पर आगे चलता है। परन्तु विश्राम के बाद की यात्रा उसी बिन्दु से आरम्भ होती है, जहाँ पर पूर्व यात्रा समाप्त हुई थी। प्रायः देखा गया है, कुछ व्यक्ति जन्म से ही प्रतिभा-सम्पन्न, साधु स्वभाव, सदाचारी या भक्त होते हैं। यह सब अचानक नहीं हो जाता। जन्म-जन्म के संस्कारों का संचय धीरे-धीरे जीव को किसी लक्ष्य की ओर खींचता रहता है। यही कारण है कि कुछ लोगों में धर्म-प्रभावना अधिक होती है। ऐसे भी लोग हैं जो समाज में अपना स्थान बनाए रखने के लिए धर्म की चादर को ऊपरी तौर पर ओढ़ लेते हैं। वे जीवन-भर दुहरे व्यक्तित्व की मार सहते-सहते नरक के भागी बनते हैं। उनको समझ ही नहीं होती कि धर्म क्या है और यदि वे थोड़ा बहुत समझते भी हैं तो संयम और मर्यादा के अभाव में, तामसिक वृत्तियों की जकड़न का शिकार बन जाते हैं।

धर्म, मोक्ष का साधन है। जो व्यक्ति परोपकार करता है और स्वार्थ से परे रहता है, वही धार्मिक है। इहलोक और परलोक की सिद्धि के लिए लोक-मर्यादा और सदाचार का पालन अपेक्षित है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इनके उपाय हैं। इन उपायों से लोक-जीवन में पीड़ा का निवारण होता है, इसीलिए इन्हें धर्म का अंग माना गया है। यदि सभी लोग झूठ बोलने लग जाएँ या हिंसा में लिप्त हों तो जरा सोचिए, हमारा जीवन कैसा होगा ? ऐसे जीवन की कल्पना से भी डर लगता है।

जीवन में मोक्ष की सिद्धि हेतु दो प्रकार के उपाय सुझाए गए हैं। इनमें एक मार्ग कठोर तपस्या का है। इस मार्ग को वे ही अपना सकते हैं जिन्हें संसार के प्रलोभन न सताएँ, जो ऐहिक जीवन के सुखों का त्याग करने को तत्पर हों, जिनमें इतना संयम हो कि समस्त इन्द्रियों की प्रवृत्तियों

का निग्रह कर सकें, जो प्राकृतिक सुख-दुखों की उपेक्षा करने में समर्थ हों और जिनकी दृष्टि का आधार मानवतावादी चिन्तन रहे। यह काम तपस्वियों का है। ऐसे साधक सर्वदा समाज के लिए पूज्य हैं। इनकी सद्भावना लोक-कल्याण का आधार है।

दूसरा उपाय भक्ति है। सांसारिक मनुष्य कठोर तपस्या करने में समर्थ नहीं हो पाते, अतः वे जिनभक्ति से, मुनियों एवं आर्यिकाओं की सेवा से कर्म बन्धन काटने तथा जिनशासन देवी-देवताओं में श्रद्धा रखने और पूजा करने से सदाचार का पालन करने से अपने कार्यों को सफल बना सकते हैं। इस भक्ति का आधार मन की वृत्तियों को एकाग्र करना है। मन की प्रवृत्ति को रोकना ही योग है। जब किसी एक विषय पर मन को संयमित कर लिया जाए तो मन की एकाग्रता कही जाती है। स्वाध्याय और देवी-देवताओं के प्रति प्रणति भाव से यह एकाग्रता शीघ्र सम्भव है। इसीलिए नवरात्रि पूजा विधान (शुक्रवार व्रत उद्यापन) आदि गृहस्थियों के लिए उपदिष्ट किए गए हैं। जब व्यक्ति दुविधा त्याग कर निर्मल मन होता है तो उसे जीवन का मार्ग सरल और सहज प्रतीत होने लगता है, परन्तु जब तक वृत्तियाँ चित्त पर हावी रहती हैं तो मनुष्य उन्हीं के अनुसार आचरण करता है। चित्त दर्पण के समान है और दर्पण पर जिस रंग के पुष्प रखे जाएँ, वह उसी रंग का दिखाई देता है। यदि दर्पण से पुष्प हटा लिए जाएँ तो वह अपने स्वाभाविक रूप में आ जाता है। यही स्थिति चित्त की वृत्तियाँ निरुद्ध हो जाती है तो मन निर्मल होता है। निर्मल चित्त की अनुभूति आनन्दमय होती है। भक्ति और पूजा के माध्यम से चित्त की यह निर्मलता सामान्य व्यक्ति भी प्राप्त कर सकता है। इस दृष्टि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पुस्तक में जो पूजा विधान दिया गया है, वह समस्त लोक के लिए कल्याणमय हो, यही हमारी कामना है।

श्री १०८ गणधराचार्य कुन्थुसागर जी के हम अत्यन्त आभारी हैं कि इन्होंने लोक-कल्याण हेतु इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करके चिन्तामणि ग्रन्थमाला प्रकाशन, रोहतक को प्रदान की। इनका आशीर्वाद पाकर ही हम यह कार्य निर्विघ्न सम्पूर्ण करने में समर्थ हो पाए हैं।

डा० रामनिवास गुप्त

नवरात्रि पूजा विधान

मंडल नक्शा
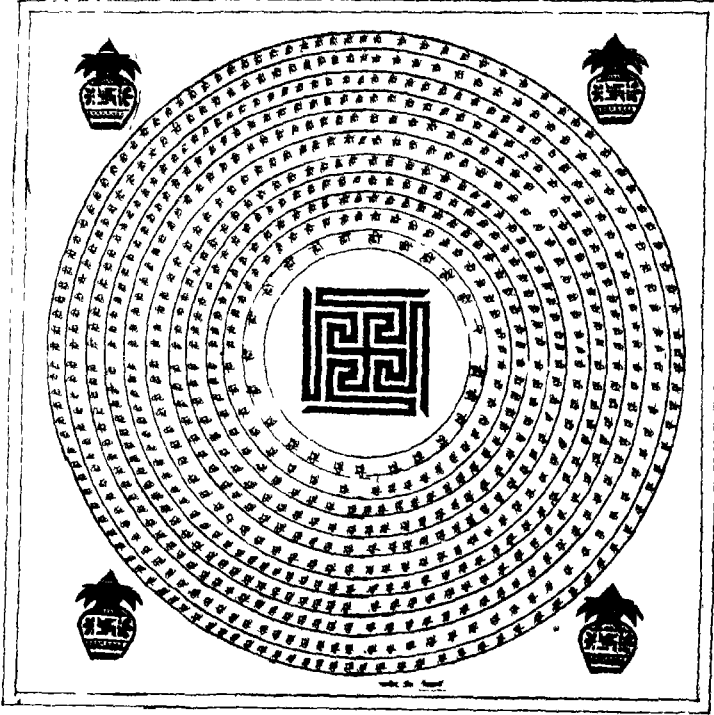
१ उपर्युक्त ढंग से स्वस्तिक बनाकर, इसके ऊपर ह्रीं लिखे।

२ वलय के प्रथम रिक्त अंश में २४ ह्रीं बनाएँ। दूसरे से दसवें रिक्त स्थानों में प्रत्येक में एक सौ ह्रीं लिखें। ग्यारहवें स्थान में १०८ ह्रीं बनाएँ।

प्रस्तावना

'नवरात्रि पूजा विधान' (शुक्रवार व्रत उद्यापन), चिन्तामणि ग्रन्थमाला शोध प्रकाशन, रोहतक का तीसरा पुष्प है। वात्सल्य रत्नाकर, श्रमणरत्न, स्याद्वादकेसरी, जिनागम सिद्धान्त महोदधि, वादिभसूरि, सम्यक्ज्ञान दिवाकर प्रातः स्मरणीय पूज्य श्री १०८ गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी महाराज ने श्रावक-श्राविकाओं के लिए मनवांछित् फल प्राप्ति हेतु इस ग्रन्थ का प्रणयन किया।

दिगम्बर आर्ष परम्परा में जिनशासन, यक्ष-यक्षिणी एवं देव-देवियों को पूजना, पंचामृताभिषेक करना, हरे फल व फूल पूजा में चढ़ाना तथा स्त्री-अभिषेक मान्य हैं। इन मान्यताओं के प्रमाण तिलोयपण्णति, ज्वालामालिनी कल्प, दशभिवतग्रन्थ, हरिवंश पुराण, पद्मपुराण, भैरव पद्मावती, प्रतिष्ठाशास्त्र, शिल्पशास्त्र, त्रिलोकसार, श्रीपाल चरित्र आदि में सर्वत्र उपलब्ध हैं। गणधराचार्य कुन्थुसागर जी महाराज ने 'शंका समाधान' व चिन्तामणि पुष्पांजलि में 'आगम देखें' तथा उपाध्याय कनकनन्दि जी महाराज ने 'जिनार्चना' में उपर्युक्त विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला है। कुछ जिज्ञासुओं का कहना है कि पंचामृताभिषेक के लिए शुद्ध सामान नहीं मिलता, हरे फल पूजा में अर्पित करने से दोष लगता है तथा स्त्री अभिषेक नहीं करना चाहिए क्योंकि नारी अशुद्ध होती है। इस प्रकार की भावना एकांगी एवं तर्कहीन है। पंचामृताभिषेक के लिए शुद्ध सामान मिल जाता है, उसे तैयार करने में श्रम के भय से अभिषेक का त्याग करना उचित नहीं। जब हरे फल खाने में कोई दोष नहीं तो उन्हें पूजा में अर्पित करने से दोष कैसे हो सकता है ? फिर नारी को अशुद्ध मानने में भी कोई औचित्य नहीं। स्त्रियाँ ही आचार्य और मुनियों को आहार देती हैं, वे आर्यिका भी बनती हैं, उनके बिना कोई विधान पूर्ण नहीं होता और सती मैना सुन्दरी ने भगवान का पंचामृताभिषेक किया था। इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री के बिना इहलोक के जीवन में कोई गति नहीं। यदि उसे ही अशुद्ध मान लिया जाए तो शंकालुओं को ध्यान करना चाहिए कि वे तुरन्त गृहस्थ जीवन त्यागकर नारी से दूर कहीं पर्वत कन्दराओं में खो जाएँ। विचार और व्यवहार में द्वैधीभाव रखना श्रद्धा और भक्ति के विपरीत है। वस्तुतः अल्पज्ञ अथवा किंकर्तव्यविमूढ व्यक्ति ही अंधविश्वास और रूढ़िवादिता के आग्रह में द्वैधीभाव के शिकार हो जाते हैं। आश्चर्य का विषय है कि जब जिनेन्द्र भगवान के दर्शनमात्र से निकृष्टतम कर्म का प्रभाव ही क्षीण हो जाता है तो यह अशुद्धि नारी के दाय में ही क्यों आई ? वस्तुतः नारी को अशुद्ध मानकर, पुरुष के लिए ही शुद्धि और मुक्ति का आग्रह करने वाले, स्वमोह की व्याधि से पीड़ित हैं। प्रायः हीन भावना से ग्रस्त व्यक्ति, दूसरे को अकारण ही हीन घोषित करने को उद्यत रहते हैं। अतः उन्हें सलाह दी जाती है कि वे स्व के पिंजरे से मुक्त होकर उन्मुक्त आकाश की स्वस्थ वायु में विचरण करें।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा विधान या किसी भी पूजा में सर्वप्रथम भगवान् का पंचामृताभिषेक किया जाता है, फिर समस्त देव-देवियों एवं यक्ष-यक्षिणियों को अर्घ्य देकर उनके आह्वान की प्रक्रिया होती है। भक्त और साधक प्रार्थना करते हैं कि उनके जीवन में विघ्नबाधा न आए और उन्हें सुरक्षा एवं शान्ति की सुखद स्थिति प्राप्त हो। गौतम गणधर द्वारा रचित 'ऋषि मण्डल विधान' में भी यक्ष-यक्षिणियों के सत्कार एवं प्रतिष्ठा को स्थान दिया गया है। परन्तु जहाँ वीतराग प्रभु की पूजा में द्रव्य अर्पण करते समय 'स्वाहा' शब्द का प्रयोग होता है, वहाँ देवी-देवताओं की पूजा में गृहाण, गृहाण कहा जाता है।

पूजा विधान में जहाँ तक 'ॐ ह्रीं' मंत्र के उच्चारण का प्रश्न है, ॐ शब्द परमेष्ठीवाचक है, ह्रीं का ह् वर्ण भगवान् पार्श्वनाथ का द्योतक है, र् धरणेन्द्र का वाचक है और ई वर्ण पद्मावती

चिन्तामणी भगवान पार्श्वनाथ क्षेत्र रोहतक

श्री दिग. जैन अतिशय क्षेत्र अणिन्दर पार्श्वनाथ
पो. अणिन्दा त. वल्लभ नगर जिला उदयपुर (राज.)
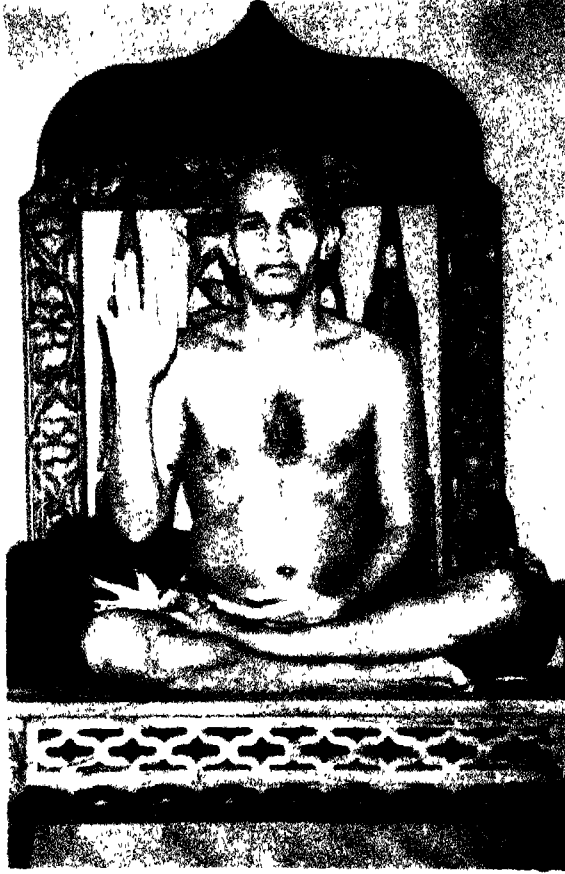
परम पूज्य गणधराचार्य १०८
श्री कुन्थु सागर जी महाराज

कमठोपसर्ग विजयी
श्री १००८ धरणेंद्र पद्मावति सहित पार्श्वनाथ भगवान

स्वर्गीय श्री कैलाश चन्द जैन
सुपुत्र स्व. ला. प्यारे लाल जैन की याद में समर्पित

माता का संकेत करता है। अतः धरणेन्द्र, पद्मावती सहित भगवान् पार्श्वनाथ का ध्यान करना चाहिए। ('प्रतिष्ठासारोद्धार' पृष्ठ ७३, श्लोक १७७)। जहाँ-जहाँ सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्र हैं, वहाँ-वहाँ यक्ष-यक्षिणियों और देव-देवियों से भक्तों का कष्ट निवारण होता है। यह प्रकरण पद्मावती पूजा का विधायक है। इसी प्रकार धरणेन्द्र, यक्षपाल, क्षेत्रपाल आदि की पूजा का विधान भी है।

शासन देवी देवताओं के विषय में सर्वविदित है कि श्री देवसेनाचार्य, वामदेव पूज्य स्वामी, सकलकीर्ति, वसुनन्दि, रविषेणाचार्य, सोमदेव सूरि, श्री पात्र केशरी, नेमिचन्द्र स्वामी, समन्तभद्र, कुन्दकुन्द स्वामी, सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्यों ने आवश्यकता पड़ने पर शासन देवी-देवताओं का स्मरण करके आराधना की। संकट के समय इन्हीं देवी-देवताओं ने विपत्ति का निवारण किया। इन देवी-देवताओं का अनादर करना मिथ्यात्व का द्योतक है। वर्तमान में भी आचार्य एवं साधुवर्ग देवी-देवताओं को यथोचित मान्यता प्रदान करते हैं। श्री १०८ चारित्र चक्रवर्ती, समाधि सम्राट आचार्य शान्तिसागर जी, आचार्य वीरसागर जी, आचार्य प्रवर तीर्थ शिरोमणि सम्राट् आचार्य महावीरकीर्ति जी, आचार्य विमलसागर जी, आचार्य धर्मसागर जी, आचार्य देशभूषण जी, आचार्य सन्मतिसागर जी, आचार्य विद्यासागर जी, आचार्य विद्यानन्द जी, गणधराचार्य कुन्थुसागर जी, आचार्य वर्धमानसागर जी, आर्यिका रत्न ज्ञानमती माता जी, आर्यिका विजयमती माता जी, आर्यिका विशुद्धमति माता जी आदि शासन देवी-देवताओं में आस्था रखते हैं। आचार्यों का कथन है कि प्राचीन शास्त्रों में (जो कि भण्डारों में उपलब्ध हैं) लिखा है कि पार्श्वनाथ भक्त पद्मावती देवी भवावतारों में एक है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि जिनेन्द्रभक्ति जिनशासन देवी-देवता सम्यक् दृष्टि हैं। इन्हें नियम से अवधिज्ञान होता है, फलतः ये हमारी शक्ति और बुद्धि से परे कार्यों को सिद्ध कराने में समर्थ होते हैं। अतः धर्मध्यान की सिद्धि एवं सुख-समृद्धि के लिए भगवान् का पंचामृताभिषेक, हरे फल-फूल का अर्पण, स्त्री अभिषेक की मान्यता तथा सम्यक् दृष्टि-जिनशासन देवी-देवताओं एवं यक्ष यक्षिणियों की पूजा का अनुष्ठान करना चाहिए।

पूज्य गुरुवर गणधराचार्य कुन्थुसागर जी के चरणों में कोटि-कोटि नमन करते हुए, आशा करते हैं कि प्रस्तुत ग्रन्थ 'नवरात्रि पूजा विधान' सभी भक्तों के लिए मंगलकारी होगा। इसका विधान करने या कराने पर व्याधि समाप्त होंगी और सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी।

चिन्तामणि ग्रन्थमाला शोध प्रकाशन, रोहतक से शीघ्र ही 'कुन्थुवाणी' का प्रकाशन किया जा रहा है। हम गुरुवर के श्री चरणों में प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में वे स्वलिखित ग्रन्थों के प्रकाशन का सौभाग्य हमें प्रदान करेंगे।

श्रीमती सुगनमाला जैन, पिथवाड़ा मौहल्ला, रोहतक एवं सभी अन्य दानियों के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में सहयोग देकर कृतार्थ किया। हम चिन्तामणि ग्रन्थमाला की समस्त कार्यकारिणी व सदस्यगण एवं सम्पादक डा० रामनिवास गुप्त के भी हृदय से आभारी हैं, जिन्होंने पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन का कार्य किया।

अन्त में हम पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि वे इस लघु प्रयास का स्वागत करेंगे और समय-समय पर अपने सुझावों से मार्गदर्शन करके चिन्तामणि ग्रन्थमाला को आर्थिक सहयोग देकर जिनवाणी की उपासना का लाभ उठाएँगे।

दीप कुमार जैन
अध्यक्ष

सतीश जैन
महामंत्री

कहाँ क्या है ?

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

नवरात्रि पूजा विधान

(पद्मावती शुक्रवारव्रत उद्यापन)

पद्मावती मण्डल पूजा विधान

पंचरंगों से नक्शों के अनुसार स्वच्छ धुला हुआ एक सुन्दर कपड़ा बिछाकर मंडल माँड दें, उस मण्डल वेदी पर पंच कलशों को पंचरंगा (मौली) धागा बाँधकर नारियल फल रखें। उन कलशों को माण्डले के ऊपर सजाएँ। केले के स्तंभ आशा-पाल के पत्तों की वन्दनवार लगाएँ, चँदोवा बाँधें और मण्डल को खूब सजाएँ। फिर मण्डल के आगे अभिषेक पीठ की स्थापना कर दें। यजमान धुले हुए वस्त्र पहनकर स्थापनापूर्वक पंचामृतभिषेक करें, शान्ति धारा करें, फिर अंगपोच्छन करके माँडले के ऊपर भगवान का स्थापन करें। भगवान के वाम भाग में एक टेबल लगाकर उस पर पद्मावती देवी की मूर्ति को सिंहासन पर विराजमान करें। पद्मावती देवी की मूर्ति को सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषणों से सजाएँ, षोडशभरण पहनाएँ, पूजा प्रारम्भ करें, अंकुरारोपण करें। संकली करण, इन्द्रप्रतिष्ठा, मण्डल वेदी शुद्धि, पंचकुमार पूजा, दशदिक्पाल पूजा, महर्षि उपासनादि करके नवदेवता पूजा करें। फिर पार्श्वनाथ पूजा करें, धरणेन्द्र पूजा करें, उसके बाद मण्डल विधान प्रारम्भ करें। पद्मावती पूजा करें। जो-जो सामान वस्त्राभूषणादि लेकर आये हैं उन सबको पहले ही पहना दे। पूजा में नाम आने पर पुष्पांजलि क्षेपण कर दे, फिर प्रथम कोठे पर चौबीस भुजा का चौबीस अर्घ्य चढा दें। द्वितीय कोठे के ऊपर पद्मावती सहस्रनाम दस पूजाओं में से प्रथम दिन की पूजा के १०० अर्घ्य चढ़ा दें। पूर्ण अर्घ्य चढ़ाकर शान्ति पाठ विसर्जन कर दें। यह प्रथम दिन की पूजा हुई।

दूसरे दिन की पूजा में पंचामृत अभिषेक, संक्षिप्त सकलीकरण, नवदेवता पूजा, पार्श्वप्रभु पूजा, धरणेन्द्र पूजा, पद्मावती पूजा चौबीस भुजा के अलग-अलग अर्घ्य चढ़ा दें। शान्ति पाठ विसर्जन करें। इसी प्रकार प्रतिदिन

पूजा का क्रम रखें। मात्र सहस्रनाम का ही शतक बदलें, बाकी सब विधि दूसरे दिन की विधि के समान करें। दसों दिन इसी प्रकार करके पद्मावती सहस्रनाम के १००८ अर्घ्य १० दिन चढ़ाकर विधान समाप्त करें। होमादिक करके रथोत्सव करें। विधान समाप्त करे। सधर्मी जनों को भोजन कराएं। चतुर्विधि संघ को उपकरणादिक दान दे। शुक्रवार व्रत के उद्यापन में जो लिखा है उसी के अनुसार देन-लेन अपनी शक्तिनुसार कर दे।

विधान की सामग्री

मण्डल : १५ फुट लम्बे, १५ फुट चौड़े तख्त २$^{1}/_{2}$ फुट ऊँचे लगाएँ। १६ फुट लम्बा-चौड़ा एक सफेद कपड़ा लें। (स्थान के अनुसार मण्डल छोटा-बड़ा किया जा सकता है)। आधा-आधा किलो पाँच प्रकार के रंग लें।

५ बड़े लोटे, ५ सुपारी, ५ हल्दी की गांठें, सवा छह रुपये, १०० ग्राम पंचरंगा धागा, २००० नारियल, (मौसमी) पूजा की सामग्री ११ जोड़े, १०० किलो चावल, १० किलो बादाम, १ किलो लौंग, ५ किलो गोले की चिटकी लें। प्रतिदिन १५० अर्घ्य के अनुसार नैवेद्य अलग-अलग बना लें। १० किलो छुआरे आदि अष्ट द्रव्य का सामान लें। (प्रत्येक दिन अष्टद्रव्य में कोई भी हरा फल जैसे सेब, मौसमी, संतरा, केला, अनानास, आम आदि लें। श्रावक अपनी सामर्थ्यानुसार अर्घ्य चढ़ाएँ।)

जितने पूजा करने वाले जोड़े हों, उन्हीं के अनुसार सामग्री घटा, बढ़ा दें। बर्तन, दीपक आदि। अखण्ड दीपक के लिये १० किलो शुद्ध घी, रूई, एक दर्जन माचिस, विधानाचार्य के लिये दो धोती, दो दुपट्टे, दो बनियान आदि लें। झण्डारोहण के लिये केसरिया झण्डा हो। अंकुरारोपण के लिये ११ मिट्टी के सकोरे, सप्त प्रकार का धान्य (प्रत्येक २०० ग्राम), केसरी धोती, दुपट्टे, चौकी पाटे, मालाएँ, धूपदान आदि सब योग्य सामग्री विधानाचार्य तैयार करा दे। विधान में लिखा सभी सामान मोटे-मोटे रूप में है।

पद्मावती के शृंगार का सामान

५ मीटर की साड़ी, २ मीटर ब्लाउज के लिये, मुकुट, हार, चूड़ियाँ, कुण्डल, पायल, कंगन, जेवर का पूरा सैट, ५ बड़ी माला, कुंकुम, काजल, बिन्दी, इत्र, दर्पण, तेल, चुवेला, गजरा, बिछवा, तिलक, भीगे चने आधा किलो, नौ प्रकार की १-१ किलो मिठाई, आधा-आधा किलो नौ प्रकार की मेवा, नौ प्रकार के हरे फल, गन्ना (ईख), सुवर्ण कलश, ५ पान, ५ सुपारी, १०० ग्राम इलायची आदि। प्रतिदिन देवी का पंचामृत अभिषेक करके खूब सजा दें। सुवर्णादिक आभरण आदि शृंगार का सभी सामान प्रतिदिन नौ दिन तक मँगवाएँ, अपनी शक्ति अनुसार जैसा ला सकें वैसा करें।

पद्मावती मूल मंत्र का सवा लाख जाप करें और अन्त में इस मंत्र की दशांग आहुति दें, होम का सामान समिधादि विधानाचार्य से लिखा लें।

जाप्य मन्त्र

(१) ॐ आं क्रों ह्रीं क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै, मम सर्वकार्य सिद्धिं कुरु, कुरु नमः।

सवा लाख या साढ़े बारह हजार इस मंत्र का विधि पूर्वक जाप करें। दशांग होम कुण्ड में आहुति दें। देवी आवश्यक कार्य सिद्ध करेगी।

(२) ॐ ह्रीं नमः।

अथवा इस एकाक्षरी पद्मावती देवी के मंत्र के सात लाख जाप करें। होम कुण्ड में दशांग आहुति दें। देवी आवश्य दर्शन या स्वप्न में दर्शन देगी या सर्वकार्य सिद्धि होगी।

(३) ॐ आं क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय, ह्रीं पद्मावती संहिताय क्रों ह्रैं ह्रीं नमः।

इस मंत्र के सवा लाख जाप करने से सर्व कार्य सिद्धि होगी। यह सर्वकार्य सिद्धि मंत्र है। जैसा योग्य समझें, वही मंत्र लें और दस दिन में जाप कर लें।

नव रात्रि पूजा विधान में इन तीन मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जाप करें, फिर दशांग आहुति दें।

पद्मावती देवी की आरती

ॐ जय जगदम्बे माता, देवि पद्मावति माता,
आरती करूँ मंगलमय, देवो सुख साता।। टेक।।
श्री पार्श्वनाथ शासन देवि हो, सिर पर प्रभु सोहे, । माता, सिर।।
कुक्कुट सर्पवाहिनी माँ के सहस्र नाम मोहे।।१।। ॐ जय।।

पोम्बुजपुर में आप विराजी अतिश अति भारी ।। माता, अति ।।
पुष्पों का वर प्रसाद देकर, आनन्द करतारी ।।२ ।। ॐ जय ।।
मथुरा के जिनदत्तराय की आप करी रक्षा ।। माता, आप ।।
रत्नत्रय की शोभा देती द्वादशांगदक्षा ।।३ ।। ॐ जय ।।
पद्मवर्ण पद्मासन पद्मा पद्महस्त सोहे ।। माता, पद्म ।।
पद्मवासिनी पद्मनयन की पद्मप्रभा मोहे ।।४ ।। ॐ जय ।।
नानामत में विविधनाम से आपकी भक्ती करे ।। माता, आप ।।
तारा, गौरी, वज्रा, प्रकृति, गायत्री नाम धरे ।।५ ।। ॐ जय ।।
कुंकुम, हल्दी, पान, सुपारी, चना, फूल, सजधार ।। माता, चना ।।
दीप, धूप, गंध, केला, श्रीफल, व्यंजन बहुत प्रकार ।।६ ।। ॐ जय ।।
पूर्ण कलश ले नारी सुहागिन इह विधि पूज रचाय ।। माता इह ।।
सुख सौभाग्य बढ़े सेवक का, मन वांछित फल पाया ।।७ ।। ॐ जय ।।

आरती श्री क्षेत्रपाल

करूँ आरती क्षेत्रपाल की जिन-पद सेवक रक्षपाल की ।। टेक ।।
विजय वीर अरु मणिभद्र की अपराजित्त भैरव आदि की ।। करूँ
सिरपर मणिमय मुकुट विराजै, कर में आयुध त्रिशूल जु राजै ।। करूँ
कूकर वाहन शोभा भारी, भूत प्रेत दुष्टन भयकारी ।। करूँ
लंकेश्वर ने ध्यान जो कीना, अंगद आदि उपद्रव कीना ।। करूँ
जभी आपने रक्षा कीनी, उपद्रव टारि शान्तमय कीनी ।। करूँ
जिन भक्तन की रक्षा करते, दुख दारिद्र सभी भय हरते ।। करूँ
पुत्रादि वांछा पूरी करते, इसलिए हम आरती करते ।। करूँ
।। श्री पद्मावती देवी प्रसन्न ।।

सप्त शुक्रवार व्रत विधान तथा कथा

मगध देश में राजगृह नगर के पास विपुलाचल पर श्री महावीर स्वामी का समवरण आने का समाचार, महाराज श्रेणिक ने वनपाल के मुख से सुना और हर्षित होकर महारानी चेलना के साथ सपरिवार वहाँ पहुँचे।

बड़े भक्तिभाव से जय-जयकार करके तीन प्रदक्षिणाएँ देकर श्री वीर प्रभु को त्रिवर नमोऽस्तु किया। फिर वे बारह सभा के मनुष्यों के कोटे में बैठ गये। भगवान की दिव्य ध्वनि, श्री गौतम गणधर की वाणी से सुनकर राजा-रानी ने भक्तिभाव से आनंदित होकर हाथ जोड़ विनती की, हे भगवन्! संसार में दम्पती को अखण्ड सौभाग्य प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिए? इस विषय में कोई एक कथा हमें सुनाइये। तब भगवान के मुख से वाणी निकली। प्राचीन काल में सौराष्ट्र देश में परिभद्रपुरी नाम का नगर था। वहाँ विकारमाप्ता नामक तेजस्वी, महापराक्रमी, न्यायी, धर्मी व प्रजावत्सल राजा था। उसके बहुत रानियाँ थीं। उनमें भूमिभुजादेवी पटरानी पतिव्रता, चतुर व कार्यकुशल थी, इसलिये राजा को मंत्री की तरह सहायता देती थी। दोनों ने अपने राज्यमें खूब धर्म प्रभावना की। उसकी नगरी में श्रुणुयात नाम का एक दरिद्र व्यापारी था। उसकी पत्नी का नाम रुक्मावती था। उसकी जैन धर्म में बहुत श्रद्धा व भक्ति थी। पाप के डर से उससे कोई बुरे कार्य नहीं होते थे। घर में दरिद्रता के कारण वह दुखी थी, इसलिये उसे किसी के पास जाकर बैठना बुरा लगता था और अपने घर में जो था उसी में सन्तुष्ट थी। अपनी बुरी स्थिति के कारण वह किसी से नहीं बोलती थी। अधिक संतान होने के कारण उनकी देखभाल में उसका सारा दिन बीत जाता था। वह सन्तान की इच्छापूर्ति तथा पालन-पोषण में असमर्थ थी। इस दुख से छुटकारा पाने की रात-दिन उसे चिन्ता रहती थी। इससे उसका शरीर दुर्बल हो गया था। क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, उसे कुछ समझ में नहीं आता था। एक दिन पड़ोसिन ने आकर उसे समझाया, देखो! आज भाग्य का दिन निकला है। ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं। गाँव के बाहर बगीचे में श्री विजयाभिनन्दन नाम के मुनीश्वर आये हैं। उनके दर्शनों के लिए गाँव के स्त्री-पुरुषों की भीड़ लग रही है। वे बहुत ज्ञानी हैं तथा भक्तों को हितकारी उपदेश देते हैं, सो हम भी उनके दर्शनों का लाभ लें और इहलोक परलोक के हित को साधकर सद्गति प्राप्त कर लें। इसलिये मैं तुझे बुलाने आई हूँ। तेरी इच्छा हो तो मेरे साथ चल। यह सुनकर रुक्मावती को अत्यन्त हर्ष हुआ। चिंतित मन में शांति हुई। घरेलू दुःखों से छूटने का मार्ग मिले और शांति सुख की प्राप्ति हो, इस भावना से वह उस स्त्री के

साथ जाने को निकली। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि दर्शनों की प्रतीक्षा में अपार जनसमुदाय श्री विजयाभिनन्दन मुनिराज के सामने जय-जयकार कर रहा है। विमान से पुष्पवृष्टि हो रही है। यह दृश्य देखकर रुक्मावती का मन प्रफुल्लित हुआ। उसने मुनीश्वर को सादर नमस्कार किया और श्राविकाओं की सभा में जाकर बैठ गई। मुनीश्वर ने उपदेश प्रारम्भ किया। उसे सुन वह इतनी खुश हुई कि अपने बाल-बच्चों, घर-बार व संसार को भूल गई। मुनिराज ने अपनी अमृतवाणी से सात तत्व का वर्णन किया, जीव तत्व का महत्व समझाया, अनादि संसार के सुख-दुःखों का वर्णन किया, जीव के हित का मार्ग बतलाया और अखण्ड शोभा बढ़ाने वाली व अत्यन्त सुख देने वाली सप्त शुक्रवार व्रत की क्रिया बतलाई। वह क्रिया रुक्मावती ने ध्यानपूर्वक सुनी। वह क्रिया इस प्रकार थी -

विधान - श्रावण महीने में प्रत्येक शुक्रवार को उपवास अथवा एकाशन करें, शक्ति अनुसार पूजा सामग्री लेकर श्री जिन मंदिर में जाकर दर्शन स्तुति स्तोत्रादि द्वारा भगवान की भक्ति करें और १००८ श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर की, श्री धरणेन्द्र, श्री पद्मावती सहित पंचामृत अभिषेक पूर्ण करके पद्मावती देवी की मूर्ति को दूसरे एक ऊँचे आसन पर विराजमान करें। नाना प्रकार के वस्त्रालंकारों से उनका शृंगार करें। दीप, धूप, फूलों के हार, केले के खम्भ इत्यादि साधनों से मण्डप सजावें, हल्दी, कुंकुम, भीगे हुये चने आदि लेकर पंचोपचार पूजा करें। बाद में श्री पद्मावती महादेवी को मणि मंगलसूत्र आदि आभूषण पहनावें। फिर आटे के दो दीपक सहित जयमाला बोलकर तीन प्रदक्षिणाएँ देकर पूर्णार्घ्य चढ़ावें। तदनन्तर महादेवी के मंत्र की आरती करके शांति भक्तिपूर्वक विसर्जन करें। फिर सप्त शुक्रवार की कथा सुनें। श्री पद्मावती के सहस्त्र-नाम के प्रत्येक बीजाक्षर मंत्र को बोलकर एक-एक चुटकी कुंकम या लवंग पुष्प चढ़ावें। प्रत्येक शतक में अर्घ्य चढ़ावें, गंधोदक सेचन करें। "ॐ आं क्रों ह्रीं ऐंक्ली हंसौं श्री पद्मावती दैव्ये नमः, मम सर्व विघ्नोपशांतिं कुरु कुरु स्वाहा।" इस मंत्र का लाल कनेर के फूलों से १०८ बार त्रिकाल जाप करें। यदि कनेर के फूल उपलब्ध न हों तो जाती व गुलाब पुष्प से जाप करें। आखिरी शुक्रवार को ऊपर कही गयी सारी क्रिया परिपूर्ण करके श्री पद्मावती माता को साड़ी पहनावें, षोडशालंकार से

शृंगार कराएँ और नीचे लिखी सामग्री लेकर उनकी गोद भरें। पाँच हरी चूड़ियाँ पहनावें, पाँच हल्दी गाँठ, पाँच खोपरा, कुंकुम के पाँच चौपड़े, पाँच नींबू, पाँच केले, पाँच छुहारे, पाँच मखाने, बतासे आदि इस प्रमाण को लेकर उत्तम नारियल तथा चोली का वस्त्र लेकर गेहूँ या चावल से पाँच सुवासनी स्त्रियों द्वारा गोद भराएँ।

गोद भरते वक्त नीचे लिखा मन्त्र पढ़ें -

जयस्फटिक रुपदंभामनी, पद्मावती अवहरिणी।
धरणेन्द्रराज कुलयक्षिणी, दीर्घ आयुरारोग्यरक्षिणी।।

उसके बाद कुटुम्बीजनों को भीगे चने, हल्दी, कुंकुम, मखाना, बतासा, गुड़, खोपरा, पान, सुपारी इत्यादि गोद का प्रसाद बोलकर बाँटे। एकत्र सौभाग्यवती स्त्रियों को हल्दी कुंकुम लगाएँ। बाद में जय-जयकार करके मंगल गीत गाजे-बाजे के साथ गा, घर वापिस आएँ। इस प्रकार पाँच वर्ष पर्यन्त यह व्रतविधि पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

उद्यापन विधि - पाँचकोनी कुम्भों की स्थापना करें। पाँच कलश स्थापित करें। पंचवर्णी रेशमी सूत बाँधकर पाँच कोने तैयार करें। चारों दिशाओं में केले के खम्भ खड़े करें। हाँडी, गोला, झाड़ आदि से सजावट करें, आटे के दीपक से आरती उतारें, चमर ढलावें, कुंकुम मिश्रित अक्षत एवं फूलों की वृष्टि करें। श्री पद्मावती देवी का विधान करें। पाँच पकवान के पाँच नैवेद्य अर्पण करें। श्री देव, शास्त्र, गुरु, पद्मावती देवी और सुवासिनी बहिन को दोने में फूल रखकर, फूल पर कुंकुम और मोती रखकर चढ़ावें और देवें। पाँच-पाँच मंगल वस्तुएँ श्री जिन मंदिर में चढ़ावें। आर्यिका को आहारदान तथा वस्त्रदान करें। पाँच दम्पती को इच्छित भोजन देकर सन्तुष्ट करें। इस प्रकार से यदि उद्यापन करने की शक्ति न हो तो दूना व्रत करें। ऐसा करने से उद्यापन करने का फल मिलता है।

माँ, बाप, बहिन, भाई, ननद, देवर, जेठानी, सास, ससुर सबके आशीर्वाद से पति परमेश्वर का आखिर तक अच्छा सहवास मिले। सुसंतान सहित सुखी संसार बने, आनन्द से समय बीते, साथ-साथ धन और संतान की वृद्धि, आरोग्यता, दीर्घ आयु एवं भूत पिशाचादिक का भयनाश इत्यादि सुखों की प्राप्ति होकर चारों तरफ कीर्ति फैलती है। इस व्रत की महिमा

अपरम्पार है। परन्तु श्री जिन-धर्म पर एकनिष्ठ भक्ति रखें। जीवनपर्यन्त श्री पद्मावती माताजी की सेवा नियमित रूप से करने की परम्परा से मोक्ष मार्ग की सिद्धि होती है।

स्त्रियों के लिए कुमारी अवस्था में "आत्मकुंकुम" हल्दी और यौवन अवस्था में 'सप्तकुंकुम' निश्चय से दुर्गति निवारक है, परन्तु इस जन्म में भी -

"कज्जल कुंकुम कांच कवरी कर्णशेखरम् ।
एवं पंच प्रकीर्त्यानि ककाराणि पुरन्ध्रीणाम् ।"

अर्थ - काजल, कुंकुम, काँच, चोटी एवं कर्णफूल ये।

सौभाग्यवती स्त्री के प्रसाधन कहे गये हैं। सौभाग्यवती कहलाने वाली महाभाग्यवती को ऊपर कहे पाँच ककार की जीवन के आखिर तक प्राप्ति होती है। अखण्ड सौभाग्यवती कहलाकर बड़े गौरव से उसका आयुपर्यन्त यश फैलता है। "आत्मकुंकुम" सप्तकुंकुम इन व्रतों के महत्व का वर्णन श्री धरणेन्द्र देवराज की चंचल जिह्वा द्वारा भी किया जाना अति कठिन है। यह महाकल्याणकारी है। बरसाती तुच्छ नदी के प्रवाह के समान क्षणभंगुर जीवन को निस्सार समझकर संसार बढ़ाना मूर्खता है। इस भवसागर से पार होने के लिए विचारशील व्यक्ति को यह व्रत करणीय है। इसलिए महिलागण इस व्रत के पालन में अबला की तरह अति कोमल न हों। स्त्री जन्म को इसी भव में सार्थक कर लें। अगला जन्म उच्च कुल में होगा, ऐसा निश्चय से नहीं कहा जा सकता, इसलिए नर से नारायण बनने का यही उत्तम साधन है। बार-बार नरभव प्राप्त नहीं होता, इसलिए जागरूक होकर उत्साह व प्रसन्नता से व्रत धारण करें, उससे सुख की प्राप्ति होगी। इस प्रकार रुक्मावती ने मुनीश्वर के मुखारविन्द से व्रत का माहात्म्य, विधि और फल सुनकर अपनी दरिद्रता की बिना परवाह किये मुनिराज के पास व्रत लेने का मन में निश्चय किया। उसने मुनिराज को नमोऽस्तु करके अपना भाव व्यक्त किया। मुनिराज ने पंचपरमेष्ठि की साक्षी में उसको व्रत दिया। श्री गुरुमुख से व्रत लेकर प्रसन्न मन से रुक्मावती घर गयी और शक्य साधन सामग्री से व्रत शुरु किया। उसी गाँव में उसका गुरुदेव नाम का भाई रहता था। वह बड़ा सेठ था। उसने अपने पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार के

निमित्त गाँव के सारे नागरिकों को एक सप्ताह पर्यन्त इच्छित भोजन कराकर संतुष्ट करने के भाव से घर-घर निमंत्रण भेजा, परन्तु अपनी बहन को निमंत्रण नहीं भेजा क्योंकि वह दरिद्र थी। अगर आयेगी तो देखकर लोक में निन्दा होगी, सोचकर उसे याद तक नहीं किया। गाँव के छोटे-बड़े सब लोग खा-पीकर जब उसी के दरवाजे के सामने से जाने लगे तो उसे आश्चर्य हुआ और सोचने लगी कि मैं और मेरा भाई एक ही हाड़-मांस, रक्त, पिण्ड के हैं। उसने सब लोगों को तो संतुष्ट किया है, मैंने उसके ऐसे क्या घोड़े मारे हैं ? फिर सोचा काम की धाँधली में भूल गया होगा, इसलिए बेकार उस पर रोष करके अपने सोने जैसे भाई को दोष देना ठीक नहीं। निमंत्रण नहीं भेजा तो क्या हुआ, भाई ही का तो घर है, जाने में क्या हर्ज है। ऐसा विचार करके वह बाल-बच्चों सहित जीमने गयी। बच्चों को सामने लेकर स्त्रियों की पंगत में बैठी। थोड़ी देर बाद उसका भाई, कौन आया कौन रहा, यह जानने के लिए वहाँ घूम रहा था, उसका ध्यान बहिन की तरफ गया तो पास आया और गुस्से में बोला, बहिन, तू आज यहाँ कैसे आयी ? तेरी गरीबी के कारण मैंने जानकर तुझे नहीं बुलाया। तेरे पास न अच्छे कपड़े हैं, न गहने। तुझे ऐसी दरिद्र देखकर मुझे लोग हँसेंगे। इसलिए आज आयी तो आयी मगर कल मत आना, समझी ? बहिन बेचारी लज्जित होकर नीची गरदन कर, खाकर बच्चों को लेकर घर गई। दूसरे दिन भी बच्चे कहने लगे, माँ आज भी मामा के यहाँ खाने के लिए जायेंगे। यह सुनकर माँ के पेट में खलबली मची। उसने बच्चों को बहुत डाँटा। मगर वे माने नहीं, उनकी हठ के कारण फिर मन में विचार किया कि कैसा भी हो अपना भाई ही तो है, बोला तो क्या हुआ, अपनी गरीबी है तो सुनना ही पड़ेगा। मगर आज का निर्वाह तो होगा, सोचकर दूसरे दिन भी बच्चों को लेकर भाई के घर गई और खाने को बैठी। कल की तरह ही भाई की सवारी पंगत में आने पर उसने उसे देखा और बोला, बहिन कैसी भिखारिन है ? कल तुझे मना किया था तो भी आज सुअरनी की तरह बच्चों को लेकर आ गयी ? तुझे शर्म कैसे नहीं आयी ? आज आयी तो आई अगर फिर कल आई तो हाथ पकड़कर निकाल दूँगा। उसने यह चुपचाप सुन लिया और खाने के बाद उठकर अपने घर चली गयी। तीसरे दिन भी इसी प्रकार हुआ। तब

भाई को खूब गुस्सा आया और उसने उसको धक्के देकर बाहर निकाल दिया। उसे बड़ा दुःख हुआ। घर आकर फूट-फूटकर रोयी। उसके मन में विचार आया कि मैंने कौन-सा घोर पाप किया जिससे इस जन्म में मुझे घोर दरिद्रता की मार पड़ रही है। सच है अनन्त जन्मों के पापों की राशि इस दरिद्रता की अवस्था है। इसकी अपेक्षा तो मुझे नरक के दुःखों में भुन जाना ही अच्छा होता। अब यह यम यातना सही नहीं जाती। इससे तो मरण अच्छा क्योंकि वह तो एक बार ही भोगना पड़ता है। परन्तु दरिद्रता का दुःख जीवनपर्यन्त भोगना पड़ता है, धिक्कार है, मेरे ऐसे जीने को। हे पद्मावती देवी। हे अम्बिका माता। तू ही मेरी सहायता कर माँ। मुझे जगत में किसी का आधार नहीं, आसरा दे माता। इस प्रकार करुण क्रन्दन करके वह खूब रोई, रोते-रोते उसे नींद आ गयी। नींद में उसे स्वप्न आया। उसके रुदन की ध्वनि श्री पद्मावती देवी के कानों पर जा टकराई, महादेवी तत्काल मुकुट, कुण्डल, हार आदि पहन, एक हाथ में धर्मचक्र लिए हुये जगमगाती पोशाक पहन उसके पास आकर खड़ी हो गयी और कहने लगी - हे महाभागे। तू दुःखी न हो, घबरा मत, तू जो आचरण कर रही है उस सप्त शुक्रवार व्रत को मैं अच्छी तरह जानती हूँ। आज तुझे दरिद्रता सम्बन्धी अतिशय दुःख हुआ है, तथापि तेरा कष्ट अत्यन्त तेज से युक्त है -

कष्टाधीनं हि दैवं, दैवाधीनं सुकृतफलं तथैव ।
"सुज्ञावाक्या चरिता भुक्ति : मुक्ति : तदधीना ।"

अर्थ - कष्टाधीन दैवयोग है। दैवाधीन ही पुण्य का फल है इसलिए महान पुरुषों के द्वारा कथित मार्ग पर चलना चाहिए। उसके अधीन संसार के भोग व मुक्ति हैं। तू ध्यान दे और एक निष्ठापन से श्री जिन परमात्मा का चिन्तन कर, उससे तेरा कल्याण होगा। ऐसा कहकर वह देवी अदृश्य हो गयी। रुक्मावती ने नींद से जागकर देखा तो वहाँ कोई नहीं दिखाई दिया। यह क्या चमत्कार है ? कहकर वह उठ बैठी, मगर उसका मस्तक शून्य हो गया। उसे कुछ भी नहीं सूझा तो फिर वह जिन मंदिर में जाकर शांतचित् से श्री पद्मावती महादेवी का मुखकमल देखने लगी। तब उसे वह मूर्ति हँसती हुई दिखायी दी। उस वक्त रुक्मावती दोनों हाथ जोड़ विनती करने लगी, हे देवी। महामाते। अम्बिके। पद्मावती माता।।

शरण मी पाया धांवगे धांव या ठाया ।।
अनाथ झाली तुमची दुहिता । भूवरी नुरला मजला त्राता ।।
भाऊ-भाऊ म्हणुनि आता । कोठे जाऊ । तुझेचि मनमनवाहू ।।

अर्थ - मैंने तुम्हारी शरण को पाया है। मेरी रक्षा करो, मुझे सन्मार्ग पर लगाओ। तुम्हारी लड़की अनाथ है। इस जगत में मेरा कोई रक्षक नहीं रहा। भाई, भाई, कहती हुई अब कहाँ जाऊँ, मैंने तुम्हें ही अपने मन में धारण किया है।

इस प्रकार बहुत देर तक प्रार्थना व भक्ति करने के बाद उसे भान हुआ कि घर में बच्चे भूख से व्याकुल होंगे, सोचकर ध्यान से उठी और घर को चली। घर आकर देखा कि बच्चे कामदेव के अवतार के समान दिख रहे हैं। घर में धन धान्य की भरभराहट होने लग रही है, जगह-जगह वैभव खुलने लग रहे हैं। हर एक काम में यश वृद्धि हो रही है और सामने नयी नवकोनी हवेली बनकर तैयार है। घर में लक्ष्मी की बाढ़ ऐसी आयी हुई है कि शायद सावन मास में बहने वाली नदी का प्रवाह भी उससे कम ही होगा। जहाँ तहाँ आनन्द है। सच देखा जाये तो उसे दो वक्त के खाने की भी मारामार थी वहाँ अब पाँच पकवान की थालियाँ भरी दिखने लगी हैं। अनेक प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त हैं। सब तरह से घर में भरभराहट है। उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गयी है। यह कीर्ति सुनकर उसका भाई आश्चर्यचकित हुआ। अपनी बहिन का आदर सत्कार करना चाहिए, विचार कर स्वयं उसके घर आया और बहिन से बोला, बड़ी बहिन, तुम कल मेरे घर खाने को आना। ना मत करना, तुम आओगी तो ही खाना खाऊँगा, नहीं तो मैं भी खाना नहीं खाऊँगा, समझी ? बहिन ने सोचा - चलो, अपना भाई बड़े सम्मान से बुलाता है, अब हम श्रीमंत हुए तो गर्व नहीं करना, इसका इस समय अपमान करना ठीक नहीं। सिर्फ इसको अपने किये हुए का पश्चात्ताप हो और सन्मार्ग प्रर्वतक होकर अहंकार छोड़े, ऐसा विचारकर वह अच्छे गहने तथा बढ़िया ओढ़नी पहनकर उत्तम शृंगार कर सम्मान से भाई के घर गयी। भाई बड़ी आस्था से राह देख रहा था। उसके आने के साथ उसे पाँव धोने को गरम जल दिया। पाँव पोंछने को रुमाल दिया। थाली परोसने पर दोनों बहिन-भाई बड़े प्रेम से पास-पास खाने को बैठे। बिछे हुए

पाटे पर बहिन ने बदन पर से ओढ़नी उतारकर रक्खी, भाई ने समझा गरमी लगती होगी। बाद में उसने शरीर पर से गहने उतारकर रक्खे। भाई ने सोचा अपनी कोमल बहिन को बोझ लगता होगा सो उतारे हैं। परन्तु उसके बाद बहिन ने पहला चावल का ग्रास उठाया और ओढ़नी पर रक्खा। पूरण पोली उठाई और हार पर रक्खी। भाजी उठाई कण्ठी पर रक्खी, लड्डू उठाया भुजाबंद पर रक्खा, जलेबी उठायी मोती के कंगन पर रक्खी। यह देखकर भाई ने पूछा, बड़ी बहिन! तुम यह क्या करती हो ? बहिन ने शान्त मुद्रा से कहा, मैं जो करती हूँ वह ठीक है। जिनको तुमने खाने को बुलाया है उनको मैं खाना दे रही हूँ। उसको कुछ समझ में नहीं आया, फिर उसने विनती की, बहिन! अब तो तुम खाओ। तब बहिन ने कहा, हे भाई साहब! आज मेरा खाना नहीं है, इस लक्ष्मी बहिन का है, मेरा खाना मैं पहिले ही खा चुकी हूँ। ऐसा सुनकर भाई के मन में पश्चात्ताप हुआ। उसने उसके पाँव पकड़े, बीती हुई गलती की क्षमा माँगी। बहिन भी उस समय बहुत दुःखी हुई और दोनों आपस में गले मिले। बाद में दोनों आनन्द से खाने बैठे। मन में जो शल्य था वह निकाल दिया। जिनकी कृपा के प्रभाव से अपार सम्पत्ति प्राप्त हुई उन पद्मावती माता जी की दोनों कुल के छोटे-बड़े सभी कुटुम्बीजन सेवा करने लगे और अपनी अनगिनत सम्पत्ति का उपयोग अनेक व्रत उद्यापन, चतुर्विध संघ को दान, जिन मंदिर जीर्णोद्धार, सिद्ध क्षेत्र-क्षेत्रादिक सम्बन्धी धर्म कार्यों में करने लगे। सहस्त्रनाम मंत्र का क्रम से कुंकुम अर्चन करने लगे। इन सब परिणामों को देखकर वहाँ के राजा ने भी भक्ति से दृढ़ होकर जिन धर्म की खूब ठाट-बाट से प्रभावना की। बाद में थोड़े समय में सर्व-कुटुम्बीजनों ने राजा सहित जिन दीक्षा धारण कर घोर तप किया और वे चतुर्गति का नाशकर अंत में मोक्ष को गए।

।। इतिसप्त शुक्रवार व्रत विधान कथा सम्पूर्णा ।।

सर्वोपद्रव-शान्तिकरण मंत्र

मंत्र - ॐ अरहंताणं जिणाणं भगवंताणं महापभावाणं होउ नमो, ॐ माई साहिं तो सव्व दुःक्खहरौ, जोहिजिणाणंपभावो पर मिट्डीणंच जंच माहप्पं संघं मि जोणु भावो अवयर उज्लं मिसोइथ।

विधि - इस मंत्र से पानी २१ बार मंत्रित कर पिलाने से सर्व प्रकार के रोग, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत इत्यादि शांत होते हैं।

मंत्र - ॐ ह्री श्री क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं नमः।

विधि - इस मंत्र का सवा लाख जाप करें तो सर्व प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं। सर्व रोग शांत होते हैं।

मंत्र - ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षे क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः।

विधि - इस मंत्र का साढ़े बारह हजार जाप करने से क्षेत्रपाल प्रत्यक्ष दर्शन देकर वरदान देते हैं।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रों ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मीं पूरय पूरय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि - धनतेरस की रात को ४० माला, चौदस को ४२ माला और दिवाली के दिन ४३ माला उत्तर दिशा की ओर मुख करके लाल माला से लाल वस्त्र पहनकर करें तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

मंत्र - ॐ आं क्रों ह्रीं क्लीं ह्यौं पद्मावत्यै नमः।

विधि - इस मंत्र का सवा लाख विधिपूर्वक जप करने से देवी जी प्रत्यक्ष दर्शन देती हैं और साढ़े बारह हजार जाप करने से स्वप्न में दर्शन देती हैं।

मंत्र - ॐ ऐं श्रीं क्लीं वद्-वद् वाग्वादिनी ह्रीं सरस्वत्यै नमः।

विधि - इस मंत्र की ५ माला नित्य फेरने से अतिशय बुद्धिमान होता है। विद्या बहुत आती है।

सरसों, हींग, नीम के पत्ते, वच और सर्प की केंचुली, इन सबको कूटकर धूप बना लें व उस धूप को खेने से शाकिनी आदि दोष दूर होते हैं।

सफेद आक (अर्क) की जड़ को कान में बाँधने से सर्प विष दूर होता है। श्वेत कंटकारि की जड़ को पुष्य नक्षत्र में लेकर एक वर्ण वाली गाय के दूध के साथ पीवे तो बंध्या भी पुत्रवती होती है।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

मंगलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनावोधी-न्दवः स्थायिन : ।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यानुगतास्ते पाटकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।। १ ।।
सम्यग्दर्शनवोधवृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं
मुक्तिश्रीनगराधिनाथजिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।। २ ।।
नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तराः विंशति -
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिपष्टिपुरुपाः कुर्वन्तु मे(ते) मंगलम् ।। ३ ।।
देव्योऽप्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः
श्रीतीर्थंकरमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ।
द्वात्रिंशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।। ४ ।।
ये सर्वौपधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाप्टांगमहानिमित्तकुशला येऽप्टविधाश्चारणाः ।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि वलिनो ये वुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।। ५ ।।

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हतां ।
शेषाणामपि चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।। ६ ।।
ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररुप्याद्रिषु ।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।। ७ ।।
ये गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।। ८ ।।
इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसम्पत्प्रदं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थकंराणामुषः ।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मी ।। ६ ।।
।। इति श्रीमंगलाष्टकम् ।।

पंचामृत अभिषेक पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायकमनन्तचतुष्टयार्हम्
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ।। १ ।।
ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपनप्रस्तावनाय पुष्पांजलिः ।।
(नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर आभूषण और यज्ञोपवीत धारण करना।)
श्रीभन्मन्दरसुन्दरे (मस्तके) शुचिजलैर्धौतैः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं तत्पादपद्मस्रजः ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकमिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रांककणशेखराण्यपि तथा जन्माभिषेकोत्सवे ।। २ ।।
ॐ ह्रीं श्वेतवर्णे सर्वोपद्रवहारिणि सर्वजनमनोरंजिनी परिधानोत्तरीयं धारिणि हं हं झं झं सं सं तं तं पं पं परिधानोत्तरीयं धारयामि स्वाहा ।

ॐ नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरुपं यज्ञोपवीतं धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नमः स्वाहा।

(तिलक लगाने का श्लोक)

सौगंध्यसंगतमधुव्रतझङ्कृतेन
संवर्ण्यमानमिव गंधमनिंद्यमादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्यं
पादारविंदमभिवंद्य जिनोत्तमानाम्।। ३।।

(भूमि प्रक्षालन का श्लोक)

ये सन्ति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता,
नागा प्रभूतबलदर्पयुता भुवोऽधः।
संरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।। ४।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।।

(पीठ प्रक्षालन का श्लोक)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवैर्यदनेकवारम्।
अत्युत्तममद्य तदहं जिनपादपीठं,
प्रक्षालयामि भवसम्भवतापहारि।। ५।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।।

(पीठ पर श्रीकार वर्ण लेखन)

श्रीशारदासुमुखनिर्गतबीजवर्णं
श्रीमंगलीकवरसर्वजनस्य नित्यं।
श्रीमत्स्वयं क्षपति तस्य विनाशविघ्नं
श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे।। ६।।

ॐ ह्रीं श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा।।

(अग्निप्रज्वालन क्रिया)

दुरन्तमोहसन्तानकान्तारदहनक्षमम्
दर्भैः प्रज्वालयाम्यग्निं ज्वालापल्लविताम्बरम्।। ७।।

ॐ ह्रीं अग्निं प्रज्वालयामि स्वाहा।।

(दशदिक्पाल को आह्वान)

इन्द्राग्निदण्डधरनैर्ऋतपाशपाणि -
वायूत्तरेण शशिमौलिफणीन्द्रचन्द्राः ।
आगत्य यूयमिह सानुचराः सचिह्नाः ।
स्वं स्वं प्रतीच्छत बलिं जिनपाभिषेके ।। ८ ।।

(दशदिक्पाल के मंत्र)

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ, इन्द्राय स्वाहा ।। १ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ आगच्छ, अग्नये स्वाहा ।। २ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ आगच्छ, यमाय स्वाहा ।। ३ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैर्ऋत आगच्छ आगच्छ, नैर्ऋताय स्वाहा ।। ४ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ आगच्छ, वरुणाय स्वाहा ।। ५ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ आगच्छ, पवनाय स्वाहा ।। ६ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ आगच्छ, कुबेराय स्वाहा ।। ७ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ आगच्छ, ऐशानाय स्वाहा ।। ८ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेंद्र आगच्छ आगच्छ, धरणेंद्राय स्वाहा ।। ६ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ आगच्छ, सोमाय स्वाहा ।। १० ।।

नाथ त्रिलोकहिताय दशप्रकार-
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्तजगत्त्रयाय ।
अर्घं महार्घगुणरत्नमहार्णवाय,
तुभ्यं ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ।। ६ ।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिदशदिक्पालकेभ्यो इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतां स्वाहा ।।

(क्षेत्रपाल को अर्घ)

भो क्षेत्रपाल ! जिनप्रतिमांकभाल ।
दंष्ट्राकराल जिनशासनरक्षपाल ।।
तैलाहिजन्मगुडचन्दनपुष्पधूपै-
र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वर यज्ञकाले ।।

विमलसलिलधारामोदगन्धाक्षतोघैः,
प्रसवकुलनिवेद्यैर्दीपधूपैः फलौघैः ।

पटहपटुतरौघैः वस्त्रसद्भूषणौघैः
जिनपतिपदभक्त्या ब्रह्मणं प्रार्चयामि ।। १० ।।

ॐ आं क्रौं अत्रस्थ विजयभद्र- वीरभद्र-मणिभद्र-भैरवापराजित-पंचक्षेत्रपालाः इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं धूपं चरुं बलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञभागं च यजामहे प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्यतामिति स्वाहा ।।

(दिक्पाल और क्षेत्रपाल को पुष्पांजली)

जन्मोत्सवादिसमयेषु यदीयकीर्तिं,
सेन्द्राः सुराः प्रमदभारनता स्तुवन्ति ।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्धया
पुष्पांजलिं मलयजार्द्रमुपाक्षिपेऽहम् ।। ११ ।।

(जहां भगवान विराजमान करेंगे) इति पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(कलशस्थापन और कलशों में जलधार देना)

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरुप्य-
ताम्रारकूटघटितान् पयसा सुपूर्णान् ।
संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्
संस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकान्ते ।। १२ ।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंच्छ केशरी महापुण्डरीक पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधिशुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालितं परिपूरितं नवरत्नगंधपुष्पाक्षताभ्यर्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झौं झौं वं मं हं सं तं पं द्रां द्रीं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

(अभिषेक के लिये प्रतिमा जी को अर्घ चढ़ाना)

उदकचन्दनतंदुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमंगलगानरवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।। १३ ।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद् गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।

(बिम्बस्थापना)

यं पांडकामलशिलागतमादिदेव
मस्नापयन् सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि ।
कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पैः
संभावयामि पुर एव तदीयबिम्बम् ।। १४ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा ।

(मुद्रिकास्वीकार)

प्रत्युप्तनीलकुलिशोपलपद्मराग-
निर्यत्करप्रकरबद्धसुरेन्द्रचापम् ।
जैनाभिषेकसमयेऽङ्गुलिपर्वमूले ।
रत्नाङ्गुलीयकमहं विनिवेशयामि ।। १५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मुद्रिकाधारणं ।।

(जलाभिषेक १)

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटि-
संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिम्
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टै-
र्भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिंचे ।। १६ ।।

मंत्र - (१) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

मंत्र - (२) ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसन्तं वृषभादि वर्धमानान्तं चतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे— देशे— नाम नगरे एतद् —— जिनचैत्यालये सं —— मासोत्तम मासे — पक्षे तिथौ —— वासरे प्रशस्त-ग्रहलग्न-होरायां मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

नोट : पिछले पृष्ठ के मन्त्र संख्या १३ में से कोई एक मंत्र बोलना चाहिये। अर्घ - उदक चंदन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(शर्करारसाभिषेक २)

मुक्त्यंगनानर्मविकीर्यमाणैः पिष्टार्थकर्पूररजोविलासैः।
माधुर्यधुर्यैर्वरशर्करारौघैर्भक्त्या जिनस्य वरसंस्नपनं करोमि।। १७।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति शर्करास्नपनम्।

अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चैः,
हस्तैः स्तुता सुरवरासुरमर्त्यनाथैः।
तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा,
सद्यः पुनातु जिनबिम्बगतैव युष्मान्।। १८।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति इक्षुरसस्नपनम्।

अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

नालिकेरजलैः स्वच्छैः शीतैः पूतैर्मनोहरैः।
स्नानक्रियां कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिनः।। १९।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति नालिकेररसस्नपम्।

अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

सुपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकारिभिः।
सहकाररसैः स्नानं कुर्मः शर्मैकसद्मनः।। २०।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति आम्ररसस्नपनम्।

अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(घृताभिषेक ३)

उत्कृष्टवर्ण-नव-हेम-रसाभिराम-
देहप्रभावलयसङ्गमलुप्तदीप्तिम्।
धारां घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेयां
वन्देऽर्हतां सरभसं स्नपनोपयुक्ताम्।। २१।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति घृतस्नपनम्।

अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(दुग्धाभिषेक ४)

सम्पूर्ण-शारद-शशांकमरीचिजाल-
स्यन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहैः।

क्षीरैर्जिनाः शुचितरैरभिषिच्यमानाः ।
सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ।। २२ ।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति दुग्धाभिषेकस्नपनम्।
अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(दध्यभिषेक ५)

दुग्धाब्धिवीचिपयसंचितफेनराशि-
पाण्डुत्वकांतिमवधीरयतामतीव ।
दध्नां गता जिनपतेः प्रतिमा सुधारा,
सम्पद्यतां सपदि वांछितसिद्धये वः ।। २३ ।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति दधिस्नपनम्।
अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(सर्वौषधि ६)

संस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहैः
सर्वाभिरौषधिभिरर्हत उज्ज्वलाभिः ।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला-
कालीयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः ।। २४ ।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति सर्वौषधिस्नपनम्।
अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(चतुःकोणकुंभकलशाभिषेकः ७)

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपुंसां, पूर्णैः सुवर्णकलशैर्निखिलावसानम् ।
संसारसागर विलंघनहेतु सेतुमाप्लावये त्रिभुवनैकपतिं जिनेन्द्रम् ।। २५

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति चतुः कोणकुम्भकलशस्नपनम्।
अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(चन्दनलेपनम् ८)

संशुद्धशुद्धया परया विशुद्धया कर्पूरसम्मिश्रिततचन्दनेन ।
जिनस्य देवासुरपूजितस्य विलेपनं चारु करोमि भक्त्या ।। २६ ।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति चन्दनलेपनं करोमीति स्वाहा।
अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

(पुष्पवृष्टि ९)

यस्य द्वादशयोजने सदसि सद्गंधादिभिः स्वोपमा-
नप्यर्थान्सुमनोगणान्सुमनसा वर्षति विश्वक् सदा ।
यः सिद्धिं सुमनः सुखं सुमनसां स्वं ध्यायतामावह-
त्तं देवं समुनोमुखैश्च सुमनोभेदैः समभ्यर्चये ।। २७ ।।

मंत्र - ॐ ह्रीं सुमनः सुखप्रदाय पुष्पवृष्टि करोमि स्वाहा।

(मंगल आरति १०)

दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपैः पात्रार्पितं प्रतिदिनं महतादरेण ।
त्रैलोक्यमंगल सुखालयकामदाहमारार्तिकं तव विभोरवतारयामि ।। २८ ।।

(इति मंगल आरति अवतरणम्)

(पूर्णसुगंधितकलशाभिषेक ११)

द्रव्यैरनल्पघनसार चतुःसमाढ्यैरामोदवासितसमस्तदिगंतरालैः ।
मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुंगवानां त्रैलोक्यपावनमहं स्नपनं करोमि ।।
।।२९।।

मंत्र - ॐ ह्रीं —— इति पूर्णसुगंधिजलस्नपनम्।

अर्घ - उदकचन्दन —— अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।

अथ शांतिमंत्र

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते। श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगण परिवेष्टिताय, शुक्लध्यानपवित्राय। सर्वज्ञाय। स्वयंभुवे। सिद्धाय। बुद्धाय। परमात्मने। परमसुखाय। त्रैलोक्यमहीव्याप्ताय। अनन्तसंसारचक्रपरिमर्दनाय। अनंतदर्शनाय। अनंतज्ञानाय। अनन्तवीर्याय। अनन्तसुखाय सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यपथं कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यायिका - श्रावक - श्राविकाप्रमुख-चतुस्संघोपसर्गविनाशनाय, घातिकर्मविनाशनाय अघातिकर्मविनाशनाय, अपवायं छिंद छिंद, भिंद भिंद। मृत्युं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। अतिकामं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। रतिकामं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। क्रोध छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। अग्नि छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वशत्रुं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वोपसर्गं

छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वविघ्नं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वचौरभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वदुष्टभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वमृगभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वमात्मचक्रभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वपरमंत्रं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वशूलरोगं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वक्षयरोगं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वकुष्ठरोगं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वक्रूररोगं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वनरमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। गजमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वाश्वमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वगोमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वमहिषमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वधान्यमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्ववृक्षमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वगलमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वपत्रमारी छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वपुष्पमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वराष्ट्रमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वदेशमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्व विषमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्व वेतालशाकिनीभयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्ववेदनीयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वमोहनीयं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द। सर्वकर्माष्टकं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द।

ॐ सुदर्शन-महाराज-चक्रविक्रमतेजोबलशौर्यवीर्यशांतिं कुरु कुरु। सर्वजनानन्दनं कुरु कुरु। सर्वभव्यानन्दनं कुरु कुरु। सर्वगोकुलानन्दनं कुरु कुरु। सर्वग्रामनगरखेट कर्वटमटंबपत्तनद्रोणमुखसंवाहानदनं कुरु कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु कुरु। सर्वदेशानन्दनं कुरु कुरु। सर्व यजमानानन्दनं कुरु कुरु। सर्वदुःखं, हन हन, दह, दह, पच, पच, कुट, कुट, शीघ्रं, शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिर्व्यसनवर्जितम् ।
अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तिरस्तु विधीयते ।।

शिवमस्तु। कुलगोत्रधनधान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्यमल्लिवर्द्धमान पुष्पदन्त शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहशान्त्यर्थं गन्धोदकधारावर्षणम् ।।)

(गन्धोदकवन्दनमंत्रः)

निर्मलं निर्मलीकारं पवित्रं पापनाशनम् ।
जिनगन्धोदकं वन्दे कर्माष्टकनिवारणम् ।।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये। नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गापमृत्युविनाशनाय सर्व परकृतक्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्व क्षामडामरविनाशाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हं नमः सर्वशान्ति कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

।। इति महाशांतिमंत्र ।।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।। १।।
ॐ ह्रीं अनादि-मूल-मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)
चत्तारि मंगलं - अरहंत मंगलं,
सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा,
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंत सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धसरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि।।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना)

अपवित्रः पवित्रो वा सुस्थितो दुःस्थितोपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं सर्वपापैः प्रमुच्यते।। १।।
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।। २।।
अपराजित मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः।। ३।।

एसो पंच-णमोयारो सव्व-पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ।।४।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं ।।५।।
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनं ।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं ।।६।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी-भूत-पन्नगाः ।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे ।।७।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।२।।
ॐ ह्रीं श्री अरहंतसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।२।।
(यदि अवकाश हो, तो यहाँ पर सहस्त्रनाम पढ़कर दश अर्घ देना चाहिये । नहीं तो आगे लिखा श्लोक पढ़कर अर्घ चढ़ाना चाहिये ।)
उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः ।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ।।३।।
ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिनसहस्त्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(स्वस्ति मंगलं)

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम् ।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां सुकृतैकहेतु,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेष मयाभ्यधायि ।। १ ।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिन-पुंगवाय,

स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय ।
स्वस्ति-प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय ।। २ ।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय ।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय,
स्वस्ति-त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय ।। ३ ।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः ।
आलंवनानि विविधान्यवलंब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं ।। ४ ।।
अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ।। ५ ।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
(यहाँ पर प्रत्येक भगवान के नाम के पश्चात् पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः ।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः ।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः ।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः ।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः ।
श्रीधर्म स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशांतिः ।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः ।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः ।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ।

इति जिनेन्द्रस्वस्तिमंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नित्याप्रकंपाद्‌भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः ।
दिव्यावधिज्ञान-बल प्रबोधाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। १ ।।

(यहां से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृ-पदानुसारि ।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः ।। २ ।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ३ ।।
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः ।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयोः नः ।। ४ ।।
जंघावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः ।
नभोङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ५ ।।
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनोः गरिम्णि ।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ६ ।।
सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः ।
तथा प्रतिघातगुणप्रधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ७ ।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः ।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ८ ।।
आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशीर्विषं विषा दृष्टिविषं विषाश्च ।
सखिल्ल-विडजल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। ९ ।।
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधुस्रवंतोप्यमृतं स्रवंतः ।
अक्षीणसंवास-महानसश्च स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। १० ।।

।। इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं ।।

'न धर्मः धार्मिकैः विना'

(धर्मात्मा पुरुषों के बिना धर्म नहीं ठहर सकता।)

श्वा अपि देवः अपि देवः श्वा जायते धर्म किल्विषात्

(पुण्य से कुत्ता भी देव और पाप से देव भी कुत्ता हो जाता है।)

नवदेवता पूजा

गीत छन्द

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिन आगम जिनेश्वरमूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं —— अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं —— अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को नीर से पूजूँ मुदा।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।१।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिन धर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्मजरा मृत्युविनाशनाय जलं—।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन,देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।। नव०।।२।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व साधुजिन धर्म जिनागमजिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधि के फेन सम सित तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सु चढ़ायके।। नव०।।

ॐ ह्रीं — अक्षतं ——।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगंधित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।। नव०।।४

ॐ ह्रीं — पुष्पं ——।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतु पूजहूँ नत भाल मैं।। नव०।।५।।

ॐ ह्रीं — नैवेद्यं ——।

कर्पूर ज्योति जगमगे दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।। नव०।।६।।

ॐ ह्रीं — दीपं ——।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।७।।

ॐ ह्रीं — धूपं ——।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।। नव०।।८।।

ॐ ह्रीं — फलं ——।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह बस अर्घ से पूजत मिले।। नव०।।९।।

ॐ ह्रीं — अर्घ्यं ——।

दोहा

जलधारा से नित्य मैं, जगकी शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य (९, २७ या १०८ बार)

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन-धर्म जिनागमजिन-चैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

सोरठा

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।१।।

(चाल - हे दीनबंधु श्रीपति---)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।। २।।
आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करे घनी।।३।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज अतमा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।४।।
जिन धर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिनकी ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।५।।
जिन चैत्यकी जो वंदना त्रिकाल करै हैं।
वे चित्स्वरुप नित्य आत्म लाभ करै हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।६।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेत ही जजूँ।

सम्पूर्ण "ज्ञानमती" सिद्धि हेतु ही भजूँ । ।७ । ।

दोहा

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम । ।८ । ।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्यचैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा— ।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः ।

गीताछन्द

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से नवदेवता पूजा करें ।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें । ।
नवनिधि अतुल भंडार लें, फिर मोक्ष सुख भी पावते ।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते । ।६ । ।

इत्याशीर्वादः

श्री पार्श्वनाथ पूजा

गीता छन्द

वर स्वर्ग आनत को विहाय, सुमात वामा सुत भये ।
अश्वसेन के सुत पार्श्व जिनवर, चरण जिनके सुर नये । ।
नवहाथ उन्नत तन विराजै, उरग लच्छन पद लसै ।
थापूँ तुम्हें जिन आय तिष्ठो, करम मेरे सब नसै । ।१ । ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर, सर्ववषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अथाष्टक-नाराच छन्द

क्षीरसीम के समान अम्बुसार लाइये,
हेमपात्र धारकैं सु आपको चढाइये ।

पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा,

दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल० ।

चन्दनादि केशरादि स्वच्छ गन्ध लीजिये ।

आप चरण चर्च मोहताप को हनीजिये ।। पार्श्व० ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं० ।

फेन चन्द के समान अक्षतान् लाइकै ।

चरण के समीप सार पुंजको नसाइये ।। पार्श्व० ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं० ।

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइये ।

धार चरण के समीप कामको नसाइये ।। पार्श्व० ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्प० ।

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सने ।

आप चरण अर्चते क्षुधादि रोग को हनै ।। पार्श्व० ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् ।

लाय रत्नदीप को सनेहपूर के भरूँ ।

वातिका कपूर वारि मोह ध्वांत कूँ हरूँ । ।पार्श्व० ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं० ।

धूपगन्ध लेय कै सु अग्निसंग जारिये ।

तास धूप के सुसंग अष्ट कर्मवारियो ।। पार्श्व० ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं० ।

खारिकादि चिरभटादि रत्नथाल में भरूँ ।

हर्ष धारिकै जजूँ सुमोक्ष सुक्खको वरूँ ।। पार्श्व० ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्त्ये फलं ।

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चरु लीजिये ।

दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तै जजीजिये ।। पार्श्व० ।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं० ।

पंच कल्याणक

शुभआनत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये ।

वैशाखतनी दुतिकारी, हम पूजैं विघ्न निवारी ।।१।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा द्वितीयायां गर्भमंडल मण्डिताय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यः ।

जनमे त्रिभुवन सुखदाता, एकादशी पौष विख्याता ।
स्यामा तन अद्भुत राजे, रवि कोटिक तेज सु लाजे ।।२।।

ॐ ह्रीं पोषकृष्णैकादश्यां तपोमगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रायार्घ्य

कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावन भाई ।
अपने कर लोंच सु कीना, हम पूजैं चरन जजीना ।।३।।

ॐ ह्रीं पोष कृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्रायार्घ्यम् ।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवलज्ञान उपाई ।
तब प्रभु उपदेश जु कीना, भवि जीवन को सुख दीना ।।४।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थी दिने केवलज्ञानप्राप्ताय श्री पार्श्वनाथायार्घ्यम् ।

सित सातै सावन आई, शिवनारि वरी जिनराई ।
सम्मेदाचल हरि माना, हम पूजै मोक्ष कल्याना ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला सप्तम्यां मोक्षमंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथायार्घ्यम् ।

जयमाला ।

पारसनाथ जिनेन्द्र तने वच, पौनभखी जबतें सुन पाये ।
कर्‍यो सरधान लह्यो पद आन भये पद्मावति शेष कहाये ।।
नाम प्रताप टरै संताप सु भव्यन को शिवशरण दिखाये ।
हे विश्वसेन के नन्द भले, गुणगावत हैं तुमरे हरखाये ।।१।।

दोहा- केकी-कंठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ।
लक्षण उरग निहार पग, बन्दों पारसनाथ।।२।।

पद्धरि छन्द

रची नगरी छहमास अगार, बने चहुं गोपुर शोभ अपार ।
सुकोट तनी रचना छवि देत, कंगूरन पै लहकैं बहु केत ।।३।।
बनारस की रचना जु अपार, करी बहुभाँति धनेश तैयार ।
तहां विश्वसेन नरेंद्र उदार, करै सुख वाम सु दे पटनार ।४ ।
तज्यो तुम आनत नाम विमान, भये तिनके घर नन्द सु आन ।
तबै सुरइन्द्र-नियोगन आय, गिरिंद करी विधि न्हौन सुजाय ।।
पिता घर सौंपि गये निज धाम, कुबेर करै वसु जाम सुकाम ।
बढै जिन दोज मयंक समान, रमै बहु बालक निर्जर आन ।६ ।
भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत महा सुखकार ।

पिता जब आनकरी अरदास, करो तुम ब्याह वरैं मम आस ।७ ।
करी तब नाहिं, रहै जगचन्द, किये तुम काम कषाय जु मन्द ।
चढे गजराज कुमारन संग, सु देखत गंगतनी सु तरंग । ।८ । ।
लख्यो इक रंक करैं तप घोर, चहुँदिशि अगनि बलै अतिजोर ।
कही जिननाथ अरे सुन भ्रात, करै बहुजीवन की मत घात ।६ ।
भयो तब कौप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय सजीव ।
लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव ब्रह्मऋषिसुर आय । ।
तबै सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निजकंध मनोग ।
कियो बन मांहिं निवास जिनंद, धरे व्रत चारित आनंदकंद । ।
गहे तहँ अष्टम के उपवास, गये धनदत्त तने जु अवास ।
दियो पयदान महा-सुखकार, भई पनवृष्टि तहां तिहिंवार ।१२ ।
गये तब कानन मांहिं दयाल, धरयो तुम योग सबहिं अघ टाल ।
तबै वह धूम सुकेत अयान, भयो कमठाचर को सुर आन ।१३ ।
करैं नभ गौन लखे तुम धीर, जु पूरब वैर विचार गहीर ।
कियो उपसर्ग भयानक घोर, चलो बहु तीक्ष्ण पवन झकोर ।१४ ।
रह्यो दसहुं दिशि में तम छाय, उगी बहु अग्नि लखी नहि जाय
सुरुण्डनके बिन मुण्ड दिखाय, पडै जल मूसलधार अथाय ।१५ ।
तबै पदमावति कंथ धनिंद, नये युग आय तहाँ जिनचन्द ।
भग्यो तब रंकसु देखत हाल, लह्यो त्रय केवलज्ञान विशाल ।१६ ।
दियो उपदेश महा हितकार, सुभव्यन बोधि समेद पधार ।
सुवर्णभद्र जहँ कूट प्रसिद्ध, वरी शिव नारि लही वसुरिद्ध ।१७ ।
जजूं तुम चरन दुहूं कर जोर, प्रभु लखिये अब ही मम ओर ।
कहे 'बखतावर रत्न' बनाय, जिनेश हमें भवपार लगाय ।१८ ।

घत्ता

जय पारस देवं, सुरकृत सेवं, वंदत चरण सुनागपति ।
करुणा के धारी, परउपकारी, शिवसुखकारी कर्महती । ।१ । ।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
जो पूजै मनलाय भव्य पारस प्रभु नितही,
ताके दुख सब जाँय भीति व्यापै नहिं कितही ।

सुख संपति अधिकाय पुत्र मित्रादिक सारे,
अनुक्रम सों शिव लहै 'रतन' इमि कहै पुकारे ।२०।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलि)

धरणेन्द्र का अर्घ्य

नागेन्द्रों के राजा तुम हो, इसीलिये धरणेन्द्र कहाये ।
जिन शासन की सेवा करते, पूजा करने हम आये ।।
जलफलादि वसु द्रव्य सजाकर कनक थाल मैं भर लाया ।
आवाहनादि स्थापन करके मैं अर्घ चढाने तव आया ।।

ॐ आं कों ह्रीं हे परिवार सहित धरणेन्द्र देवाय अत्रागच्छ इदं पाद्यं, गंधं, अक्षत पुष्पं, चरुं दीपं, धूपं, फलं, अर्ध्यचयज्ञ भागंयजा महे प्रतिगच्छतां प्रतिगच्छतां अर्घसमर्पयामि ।।

शांति धारा, पुष्पांजलिंक्षिपेत् ।

नवरात्रि पूजा विधान

(पद्मावती शुक्रवारव्रत उद्यापन)
पद्मावती की मूल मंडल पूजा

प्रारम्भ

श्री पार्श्वनाथ जिन भक्त कृतोपसेवा।
धरणेन्द्र प्रिय जिननाथ, कृतोपसेवा।।
कमठोपसर्ग कृत दूर जिनोपसेवा।
पद्मावति कृत सहाय, सुखोपसेवा।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र प्रिये पद्मावति देवि अत्रागच्छ २
ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र प्रिये पद्मावति देवि अत्र तिष्ट २
ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र प्रिये पद्मावति देवि अत्र सन्निहितो भव-भव—

प्रासुक जल की झारी भरकर, तुम ढिग लेकर आया हूँ
पद्मावती देवी की देखो, पूजा करने आया हूँ
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं
जल की धारा देने से माँ, सुख सभी मिल जाते हैं।।१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि जलं समर्पयामि।।

गन्ध सुगन्धित लेकर माता, तुम चरणों में आया हूँ।
अर्चन कर सुख पाने को माँ तुम ढिग अब मैं आया हूँ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं।
गन्ध की धारा देने से माँ, सुख सभी मिल जाते हैं।।२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि दिव्य गन्धं समर्पयामि।।

दिव्य अखण्डित तंदुल लेकर, तुम चरणों में आया हूँ।
पद्मावती देवी की पूजा करके, मन में हर्षाया हूँ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं।
दिव्य अक्षतों के अर्चन से माँ सुख सभी मिल जाते हैं।।३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि अक्षतं समर्पयामि।।

बेला, चमेली, पुष्प सुगन्धित, लेकर अब मैं आया हूँ।
दिव्य सुवासित फूलों से माँ पूजा करने आया हूँ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते, कष्ट सभी मिट जाते हैं।
पुष्प सुगन्धित की पूजा से माँ सुख सभी मिल जाते हैं।।४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि पुष्पं समर्पयामि।।

घेवर पूड़ी और जलेबी थाली भरकर लाया हूँ।
दिव्य चरु से अर्चन करके सुख संपति को पाता हूँ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते कष्ट सभी मिट जाते हैं।
नैवेद्य की पूजा से माता सुख सभी मिल जाते हैं।।५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि नैवेद्यं समर्पयामि।।

घृत का दीपक लेकर माता तुम चरणों में आया हूँ।
दिव्य प्रकाश की इच्छा लेकर तुम चरणों में आया हूँ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते कष्ट सभी मिट जाते हैं।
दीपक की ज्योति से माता सुख सभी मिल जाते हैं।।६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि दीपं समर्पयामि।।

धूप दशांगी लेकर माता तव चरणों में आया हूँ।
सभी प्रकार के कर्मो को मैं आज मिटाने आया हूँ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते कष्ट सभी मिट जाते हैं।
धूप दशांगी खेने से माँ सुख सभी मिल जाते हैं।।७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि धूपं समर्पयामि।।

केला, आम, सुपारी आदि ले सुवर्ण थाल भर आया हूँ।
दिव्य मधुर सुपक्वफलों को 'अब मैं लेकर आया हूँ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते कष्ट सभी मिट जाते हैं।
दिव्य फलों की पूजा से माँ सुख सभी मिल जाते हैं।।८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि दिव्य फलं समर्पयामि।।

जल चन्दनादिक वस्तु द्रव्य सजाकर, तुम ढिग लेकर आया हूँ।
अष्ट द्रव्य से थाल सजाकर तुम अर्चन को आया हूँ।।
दुःख सन्ताप सभी मिट जाते कष्ट सभी मिट जाते हैं।
अष्टद्रव्य के अर्चन से माँ सुख सभी मिल जाते हैं।।९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि अष्टद्रव्यं समर्पयामि।।

जल सुगन्धित लायके पद्मावति चरण चढायके।
चरणों में शीश नवायके सभी के दुःख नशाय के।।१०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि पाद्यं समर्पयामि।। जल धारा छोड़ें।।
पंचामृतादि सद् द्रव्यों से, अभिषेक आपका कर दीन्हा,
आपने माता सब जीवों के दुःख दारिद्र को हर लीन्हा।।११।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि पंचामृतद्रव्यं समर्पयामि।।
मिष्ट मधुर इक्षुदण्ड से पूजा आपकी कर दीन्हीं।
माता आपने आज सभी की इच्छा पूरी कर दीन्हीं।।१२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि इक्षुदण्डार्चनं समर्पयामि।।
चना फुलाकर लेकर आया देवी की पूजा को आज।
इसकी पूजा से मिलता, सुख शांति धन समृद्धि आज।।१३।।
ॐ आं क्रों ह्री हे पद्मावति देवि चणकार्चनं।।
थाली भरकर पकवानों की तव चरणों में आया आज।
पकवानों की पूजा से मां मिटे जगत दुःख सन्ताप।।१४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि पक्वान्नार्चनम्।।
नानाविध वस्त्रों को मैं लेकर आया देवी आज।
वस्त्रों की पूजा से माता दुःख दारिद्र मिट जाय।।१५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि दिव्य वस्त्रार्चनम्।।
केयूर मुण्डल हार मुकुटादि, भूषण से करूँ पूजा आज।
आभूषण से पूजा करके पाऊँ, धन वैभव को आज।।१६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि षोडषाभरणार्चनम्।।
कुंकुम, केशर, गन्ध सु लेकर तिलक लगाता तेरे भाल।।
दिव्य ज्ञान हो जावे मेरा, मिटे सर्व जगत सन्ताप।।१७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि तिलकार्चनम्।।
छत्र चँवर मंगल द्रव्यों को लेकर आया माता आज।
मंगल की मैं कामना करता होवे जगत में शांति आज।।१८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि छत्र चामरादि अर्चनम्।।
शुद्ध सुवर्ण का कलश बनाकर, विशुद्ध जल भर ले आया।
सुवर्ण कलश के अर्चन से माँ, सुख शान्ति को हमने पाया।।१९
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि सुवर्ण कलशार्चनम्।।

निर्मल दर्पण लेकर आया स्वच्छ अति निर्मल देखा भाव।
दर्पण की निर्मलता कहती करो सभी मिल निर्मल भाव।।२०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि दर्पणार्चनम्।।
वस्त्रादिक की झण्डी लेकर तव चरणों में आया आज।
इसकी पूजा से मिटते है इस जगत के सभी सन्ताप।।२१।।
ॐ आं क्रों ह्री हे पद्मावति देवि पताकार्चनम्।।
नानाविध वाद्य बजाकर नाचूँ गाऊँ देखो आज।
तीन प्रदक्षिण देकर माता तुमको नमन करूँ मैं आज।।२२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि वाद्य, नृत्य, गीत, प्रदक्षिणा, नमस्कार।।
वसुविध द्रव्यादि को लेकर करता हूँ मैं पूजा आज।
अष्ट महानिधि को पाने आया हूँ चरणों में आज।।२३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे पद्मावति देवि अर्घ्य समर्पयामि।।

शान्तये शान्तिधारा पुष्पांजलि
चौबीस आयुधों के प्रत्येक अर्घ्य
प्रथम कोष्ठ पर चढ़ावे।
प्रथम पुष्पांजलि क्षेपण करें।

अथ-जयमाला

प्रथम हाथ में खंग जु शोभे माता तेरे देखो हाथ।
दुष्टों का निवारण करके शान्ति देती देखो आप।।१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं प्रथम हाथ में खंग आयुद्धधारिणी हे पद्मावति देवि. अर्घ्य।।
खाण्डायुध का धारण करके शोभित होती माता आज।
दूजे हाथ की शोभा इससे मेटो जगत के सभी सन्ताप।।२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दूजे हाथ में खाण्डायुध धारिणी हे पद्मावति, अर्घ्य समर्पयामि।।
तीजे हाथ में मुसल धारकर धर्म की सेवा करती हो।
मुसलधारिणी कहलाती, जग में शान्ति करती हो।।३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे मुसलधारिणि पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।
चौथे हाथ में हल जो शोभे, हलायुधि कहलाती हो।
हे जगदम्बे देवी तुम तो सबकी व्याधा हरती हो।।४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे हलायुध-धारिणि पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।

सर्पायुध को कर में लेकर, दुष्ट बंधन का काम करो।
हे पद्मावति देवि तुम दुर्जन जन का मान हरो।।५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सर्पायुध धारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।
वन्हि के आयुद्ध को धारो हे जगदम्बे माता तुम।
षष्टम् हाथ का आयुध जानो नाश करो पापों का तुम।।६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वन्हि आयुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।
चक्रायुध को धारकर, करे दुष्ट संहार।
सप्तम हो आयुधपति, करो धर्म प्रचार।।७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रायुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।
शक्ति शस्त्र हे महिमावान तुम हो अष्टम आयुधवान।
दुष्ट देख सब दिश भगजाय, ऐसी तुम हो महिमावान।।८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शक्ति आयुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।
तारायुध कर धारकर, करे प्रकाश महान्।
इस आयुध का काम है मिटे दुःख सन्ताप।।१०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तारा आयुधधारिणि, हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।
रत्नत्रय का चिन्ह है त्रिशूल आयुध जान।
दशमहाथ का शस्त्र है करे कर्म संहार।।११।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिशूल आयुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।
खर्पर हाथों धारकर ग्यारम आयुध धार।
भिक्षा मांगे प्रेम की, प्रेम की ज्योति जलाय।।१२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खर्परआयुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।
पद्मावति जगद्पूज्य, करो विश्व कल्याण।
डमरु आयुध धारकर करो धर्म प्रचार।।१३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं डमरुआयुध धारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।
नागपाश को धारकर नाग रूप बन जाय।
यह बंधन अति विकट है बंधन छूटे नाय।।१४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागपाश आयुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्यसम-र्पयामि।।
डंडा को ले हाथ में शोभे अति महान।
दुष्ट जन को दंडित करें, हरे सभी का मान।।१५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं डंडायुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्य समर्पयामि।।

पाषाण को ले हाथ में, शोभे अति महान् ।
दुष्टों के सिर पर पड़े हरे सभी का मान । ।१६ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं पाषाण आयुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि । ।
मुदगर को ले हाथ में करे दुष्ट संहार ।
अज्ञानी भागे फिरैं, हरे सभी का मान । ।१७ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं मुद्गर आयुधधारिणि पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि । ।
फरसा को ले हाथ में करे दुष्ट संहार ।
दुष्ट जन भागे फिरैं हरो सभी का मान । ।१८ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं फरसाआयुध धारिणि पद्मावति, देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि । ।
कमलायुध से युक्त हो कोमल कमल महान ।
इस आयुध का काम है शोभा करे महान । ।१९ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं कमलायुध धारिणि पद्मावति, देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि । ।
अकुंश आयुध धारकर, अंकुश कर ले आज ।
जग जीवों का हित करे, करे जीव उद्धार । ।२० । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं अंकुश आयुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि । ।
आम्रायुध को धारकर छाया सम बन जाय ।
शीतलता प्रदान करें मिटे जगत सन्ताप । ।२१ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं आम्रायुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि । ।
छत्रायुध को धारकर छत्रपति कहाय ।
छत्र सम शोभे अति एकछत्र हो जाय । ।२२ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं छत्रायुद्ध धारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि । ।
वज्रायुध को धारकर वज्र सम बन जाये ।
इस आयुध का काम है करे दुर्जन संहार । ।२३ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं वज्रायुधधारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि । ।
वृक्षायुध से होत है शीतलता महान ।
जग के जीवों को मिले सुख शान्ति महान । ।२४ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं वृक्षायुध धारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि । ।
जीवों को वरदान दे वरद आयुध जान ।
माला ले कर में फिरै करे जीव कल्याण । ।२५ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं वरद्माला युद्ध धारिणि हे पद्मावति, देव्यै अर्घ्यं सर्मपयामि । ।

चौबीस भुजा जगदम्बिके करो जगत कल्याण ।
अपने हित के कारणे कीन्हीं पूजा आज ।।२६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चौबीस भुजा में स्थित चतुर्विंशति आयुध सहित
हे पद्मावति, देव्यै पूर्णार्घ्यं समर्पयामि ।।
शांतिधारा, पुष्पांजलिंक्षिपेत् ।

द्वितीय कोष्टोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पद्मावती सहस्र नामावलि अर्घ्य
पद्मावती सहस्र नाम के, अर्घ्य चढ़ाऊँ आज ।
नमन करूँ त्रियोग से, पुष्पांजलि करूँ आज ।। पुष्पांजलि

द्वितीय कोष्ठ का अर्घ्य शतक

पद्मावती जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।१ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावत्यै नमः, अर्घ्य ।
पद्मवर्णा जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।२ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्महस्तायै नमः, अर्घ्य ।
पद्माहस्ता जगत्पूज्या, सर्व संकटहारिणी,
पूजा करूँ वसु द्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।३ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्महस्तायै नमः, अर्घ्य ।
पद्मिनी जगत्पूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।४ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मिन्यै नमः, अर्घ्य ।
पद्मासना जगदपूज्या सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।५ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मासनायै नमः, अर्घ्य ।

पद्मकर्णा जगदपूज्या सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से सर्व संकट हारिणी ।।६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मकर्णायै नमः, अर्घ्यं ।
पद्मास्या जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।७ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मास्यायै नमः, अर्घ्यं ।
पद्मलोचना जगदपूज्या सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से दुःख दारिद्र नाशिनी ।।८ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मलोचनायै नमः, अर्घ्यं ।
पद्मा जगत्पूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।९ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मायै नमः, अर्घ्यं ।
पद्मदलाक्षी जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।१०
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मदलाक्ष्यै नमः, अर्घ्यं ।
पद्मवनस्थिता जगत्पूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।११ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मवनस्थितायै नमः, अर्घ्यं ।
पद्मालया जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।१२ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मालयायै नमः, अर्घ्यं ।
पद्मगन्धा जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।१३ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मगन्धायै नमः, अर्घ्यं ।
पद्मरागा जगदपूज्या सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।१४ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मरागायै नमः अर्घ्यं ।
उपरागिका जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी ।।१५ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं उपरागिकायै नमः, अर्घ्यं ।

पद्‌मप्रिया जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी।।१६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्‌मप्रियायै नमः, अर्घ्यं।
पद्‌मनाभि जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी।।१७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्‌मनाभ्यै नमः, अर्घ्यं।
पद्‌मांगी जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी।।१८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्‌माग्यै नमः, अर्घ्यं।
पद्‌मशायिनी जगत्पूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी।।१९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्‌मशायिन्यै नमः, अर्घ्यं।
पद्‌मवर्गवती जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी।।२०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्‌मवर्गवत्यै नमः, अर्घ्यं।
पूता जगदपूज्या, सर्व संकट घरिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी।।२१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पतायै नमः, अर्घ्यं।
पवित्रा, जगत्पूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी।।२२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पवित्रायै नमः, अर्घ्यं।
पापनाशिनी जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसु द्रव्य से, दुःख दारिद्र नाशिनी।।२३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पापानाशिन्यै नमः अर्घ्यं।
प्रभावती जगदपूज्या, सर्व संकट हारिणी,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से दुःख दारिद्र नाशिनी।।२४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रभावदयै नमः, अर्घ्यं।
प्रसिद्धा तव नाम है दुःख करो अति दूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर।।२५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रसिद्धायै नमः, अर्घ्यं।

पार्वती तव नाम है, दुःख करो अति दूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, आनन्द हो भरपूर ।।२६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पार्वत्यै नमः, अर्घ्य ।
पुरवासिनी तव नाम है, दुःख करो अति दूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, आनन्द हो भरपूर ।।२७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पुरवासिन्यै नमः, अर्घ्य ।
प्रज्ञा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, आनन्द हो भरपूर ।।२८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रज्ञायै नमः, अर्घ्य ।
प्रह्लादिनी तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, आनन्द हो भरपूर ।।२९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रह्लादिन्यै नमः, अर्घ्य ।
प्रीता तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, आनन्द हो भरपूर ।।३०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रीतायै नमः, अर्घ्य ।
पीतामा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, आनन्द हो भरपूर ।।३१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पीतामायै नमः, अर्घ्य ।
पद्माम्बिका तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, आनन्द हो भरपूर ।।३२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्माम्बिकायै नमः, अर्घ्य ।
पातालवासिनी तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से, आनन्द हो भरपूर ।।३३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पातालवासिन्यै नमः, अर्घ्य ।
पूर्णा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।३४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्णायै नमः, अर्घ्य ।
पद्मयोनि तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।३५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मयोन्यै नमः, अर्घ्य ।

प्रियंवदा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।३६ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रियंवदायै नमः, अर्घ्य ।
प्रदीप्ता तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।३७ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रदीप्तायै नमः, अर्घ्य ।
पाशहस्ता तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।३८ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पाशहस्तायै नमः, अर्घ्य ।
परा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।३९ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं परायै नमः, अर्घ्य ।
परा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४० ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं परायै नमः, अर्घ्य ।
परम्परा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४१ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं परम्परायै नमः, अर्घ्य ।
पिंगला तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४२ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पिंगलायै नमः, अर्घ्य ।
परमा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४३ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं परमायै नमः, अर्घ्य ।
पूरा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४४ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पूरायै नमः, अर्घ्य ।
पिंगा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४५ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पिंगायै नमः, अर्घ्य ।

प्राची तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४६ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्राच्यै नमः, अर्घ्य ।
प्रतीची तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४७ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रतीच्यै नमः, अर्घ्य ।
परकार्यपरा तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४८ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं परकार्यपरायै नमः, अर्घ्य ।
पृथिवी तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।४६ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पृथिव्यै नमः, अर्घ्य ।
पार्थिवी तव नाम है, दुःख करो अतिदूर,
पूजा करूँ वसुद्रव्य से आनन्द हो भरपूर ।।५० ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पार्थिव्यै नमः, अर्घ्य ।
पृथिवीपति भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।५१ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रथिवीपत्यै नमः, अर्घ्य ।
पल्लवा भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।५२ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पल्लवायै नमः, अर्घ्य ।
प्राणदा भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।५३ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्राणदायै नमः, अर्घ्य ।
पांत्रा भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।५४ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पांत्रायै नमः, अर्घ्य ।
पवित्रांगी भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।५५ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पवित्रांग्यै नमः, अर्घ्य ।

पूतना भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।५६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पूतनायै नमः, अर्घ्य ।
प्रभा भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।५७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रभायै नमः, अर्घ्य ।
पताकिनी भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।५८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पताकिन्यै नमः, अर्घ्य ।
पीता भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।५६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पीतायै नमः, अर्घ्य ।
पन्नगाधिपशेखरा भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पन्नगाधिपशेखरायै नमः, अर्घ्य ।
पताका भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पताकायै नमः, अर्घ्य ।
पद्मकटिनी भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मकटिन्यै नमः, अर्घ्य ।
पतिमान्य भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पतिमान्यायै नमः, अर्घ्य ।
पराक्रमा भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पराक्रमायै नमः, अर्घ्य ।
पादाम्बुजधरा भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पादाम्बुजधरायै नमः, अर्घ्य ।

पुष्टि भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६६ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पुष्ट्यै नमः, अर्घ्य ।
परमागमबोधिनी भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६७ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं परमागमबोधिन्यै नमः, अर्घ्य ।
परमात्मा भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६८ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं परमात्मायै नमः, अर्घ्य ।
परमानन्दा भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।६९ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं परमानन्दायै नमः, अर्घ्य ।
प्रसन्ना भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।७० ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रसन्नायै नमः, अर्घ्य ।
पात्रपोषिणी भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।७१ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पात्रपोषिण्यै नमः, अर्घ्य ।
पंचबाणगति भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।७२ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पंचबाणगदयै नमः, अर्घ्य ।
पौत्री भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।७३ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पौत्र्यै नमः, अर्घ्य ।
पाखंडघ्नी भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।७४ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पाखंडध्न्यै नमः, अर्घ्य ।
पितामही भी नाम है शान्ति दाता काम,
जगत शान्तिदायिनी मेरी इच्छा पूर ।।७५ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पितामह्यै नमः, अर्घ्य ।

प्रहेलिका का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।७६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रहेलिकायै नमः, अर्घ्य।
प्रत्यंचा का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।७७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रत्यंचायै नमः, अर्घ्य।
प्रथुपापौधनाशिनी का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।७८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रथुपापौधनाशिन्यै नमः, अर्घ्य।
पूर्णचन्द्रमुखी का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।७९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्णचन्द्रमुख्यै नमः, अर्घ्य।
पुण्या का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।८०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पुण्यायै नमः, अर्घ्य।
फुलोमा का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।८१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं फुलोमायै नमः, अर्घ्य।
पूर्णिमा का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।८२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्णिमायै नमः, अर्घ्य।
प्रथा का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।८३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रथायै नमः, अर्घ्य।
पाविनी का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।८४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पाविन्यै नमः, अर्घ्य।
परमानन्दा का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय।।८५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं परमानन्दायै नमः, अर्घ्य।

पंडिता का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।८६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पंडितायै नमः, अर्घ्य ।
पंडितेडिता का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।८७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पंडितेडितायै नमः, अर्घ्य ।
प्रांशुलभ्या का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।८८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रांशुलभ्यायै नमः, अर्घ्य ।
प्रमेया का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।८९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रमेयायै नमः, अर्घ्य ।
प्रमा का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रमायै नमः, अर्घ्य ।
प्राकारवर्तिनी का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्राकारवर्तिन्यै नमः, अर्घ्य ।
प्रधाना का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रधानायै नमः, अर्घ्य ।
प्राथिता का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्राथितायै नमः, अर्घ्य ।
प्राथ्यां का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्राथ्र्यायै नमः, अर्घ्य ।
पटुदा का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पटुदायै नमः, अर्घ्य ।

पंक्तिपूरणी का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९६ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पंक्तिपूरण्यै नमः, अर्घ्य ।
पातालस्था का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९७ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पातालस्थायै नमः, अर्घ्य ।
पातालेश्वरी का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९८ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पातालेश्वयै नमः, अर्घ्य ।
प्रणा का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।९९ ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रणायै नमः, अर्घ्य ।
प्रेयसी का अर्घ्य करूँ, वसुविधि द्रव्य मिलाय,
धर्म ध्यान वृद्धि करो, अष्ट ऋद्धि मिल जाय ।।१०० ।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रेयस्यै नमः, अर्घ्य ।

मंत्रजाप १०८ लौंग से

ॐ ह्रीं श्री पद्मावती देव्यै नमः । मम इच्छित फल प्राप्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

पूर्ण अर्घ्य

जल फल आठो शुसार मात को अर्घ्य करो ।
तुम को पूजों दुःखतार, दुखतरी, कार्य करो ।।
पद्मावती श्री जिन भक्त आनन्द कंद सही,
तुम्हें जजत हरत दुःख फंद पावन सुखवही ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावत्यादि प्रेयस्यन्त शतनामधारिण्यै अर्घ्य समर्पयामि
शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

तृतीय कोष्ठ का अर्घ्य शतक

नानाविधि के पुष्प लें, पुष्पांजलि कराय।
कोमल हो तुम पुष्पसम, वासित जग हो जाय।।१।।
ॐ दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
महाज्योतिष्मति देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाज्योतिष्मत्यै नमः, अर्घ्य।
मातृ देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मात्रे नमः, अर्घ्य।
महा देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मायायै नमः, अर्घ्य।
माया देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महायै नमः, अर्घ्य।
महासती देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महासत्यै नमः, अर्घ्य।
महादीप्ति देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महादीप्त्यै नमः, अर्घ्य।
मति देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मत्यै नमः, अर्घ्य।
मित्रा देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मित्रायै नमः, अर्घ्य।

महाचण्डी देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।१०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाचण्ड्यै नमः, अर्घ्य।
मंगला देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।११।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मंगलायै नमः, अर्घ्य।
महिषी देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।१२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महिष्यै नमः, अर्घ्य।
मानसी देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।१३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मानस्यै नमः, अर्घ्य।
मेध देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।१४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मेधायै नमः, अर्घ्य।
महालक्ष्मी देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।१५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः, अर्घ्य।
मनोहरा देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।१६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मनोहरायै नमः, अर्घ्य।
मदापहारिणी देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।१७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पदापहारिण्यै नमः, अर्घ्य।
मृग्या देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।१८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मृग्यायै नमः, अर्घ्य।
मानिनी देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।१९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मानिन्यै नमः, अर्घ्य।

मानशालिनी देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।२०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मानशालिन्यै नमः, अर्घ्य।
मार्गदात्री देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।२१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मार्गदात्र्यै नमः, अर्घ्य।
मुहूर्ता देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।२२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मुहूर्तायै नमः, अर्घ्य।
माधवी देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।२३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं माधव्यै नमः, अर्घ्य।
मधुमती देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।।२४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मधुमत्यै नमः, अर्घ्य।
मही देवी, सर्व विघ्न का नाश करो।
धर्म ध्यान में लीन रहो, करो जगत उद्धार।। ५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मह्यै नमः, अर्घ्य।
महेश्वरी मात तुम, सब जग में विख्यात।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं महेश्वर्यै नमः, अर्घ्य।
महेज्या मात तुम, सब जग में विख्यात।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार।।२७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं महेज्यायै नमः, अर्घ्य।
मुक्ताहारविभूषिणी मात तुम, सब जग में विख्यात।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार।।२८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मुक्ताहारविभूषिण्यै नमः, अर्घ्य।
महामुद्रा मात तुम, सब जग में विख्यात।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार।।२९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं महामुद्रायै नमः, अर्घ्य।

मनोज्ञा मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३० । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं मनोज्ञायै नमः, अर्घ्य ।
महाश्वेता मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३१ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं महाश्वेतायै नमः, अर्घ्य ।
अतिमोहिनी मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३२ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं अतिमोहिन्यै नमः, अर्घ्य ।
मधुप्रिया मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३३ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं मधुप्रियायै नमः, अर्घ्य ।
महूया मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३४ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं महूयायै नमः, अर्घ्य ।
माया मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३५ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं मायायै नमः, अर्घ्य ।
मोहघ्नी मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३६ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं मोहघ्न्यै नमः, अर्घ्य ।
मनस्विनी मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३७ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं मनस्विन्यै नमः, अर्घ्य ।
माहिष्मती मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३८ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं माहिष्मत्यै नमः, अर्घ्य ।
महावेगा मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार । ।३९ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं महावेगायै नमः, अर्घ्य ।

मानदा मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४० ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मानदायै नमः, अर्घ्य ।
मानहारिणी मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४१ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मानहारिण्य नमः, अर्घ्य ।
महाप्रभा मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४२ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं महाप्रभायै नमः, अर्घ्य ।
मदना मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेंवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४३ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मदनायै नमः, अर्घ्य ।
मंत्रवश्या मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४४ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मंत्रवश्यायै नमः, अर्घ्य ।
मुनिप्रिया मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४५ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मुनिप्रियायै नमः, अर्घ्य ।
मंत्ररूपा मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मंत्ररूपायै नमः, अर्घ्य ।
मंत्रज्ञा मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४७ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मंत्रज्ञायै नमः, अर्घ्य ।
मंत्रदा मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४८ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मंत्रदायै नमः, अर्घ्य ।
मंत्रसागरा मात तुम, सब जग में विख्यात ।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार ।।४९ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मंत्रसागरायै नमः, अर्घ्य ।

मनःप्रिया मात तुम, सब जग में विख्यात।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार।।५०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मनःप्रियायै नमः, अर्घ्य।
महाकाया मात तुम, सब जग में विख्यात।
मुनियों की सेवा करो, करो धर्म प्रचार।।५१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाकायायै नमः, अर्घ्य।
महाशीलवती देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।५२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महशीलायै नमः, अर्घ्य।
महाभुजा देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।५३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाभुजायै नमः, अर्घ्य।
महाशया देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।५४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महशयायै नमः, अर्घ्य।
महारक्षा देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।५५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महारक्षायै नमः, अर्घ्य।
मनोभेदा देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।५६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मनोभेदायै नमः, अर्घ्य।
महाक्षमा देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।५७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाक्षमायै नमः, अर्घ्य।
महाकान्तिधरा देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।५८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाकान्तिधरायै नमः, अर्घ्य।
मुक्ता देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।५९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मुक्तायै नमः, अर्घ्य।

महाव्रतसहायिनी देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाव्रतसहायिन्यै नमः, अर्घ्य।
मधुस्रवा देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मधुस्रवायै नमः, अर्घ्य।
मूर्च्छना देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मूर्च्छनायै नमः, अर्घ्य।
मृगाक्षी देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मृगाक्ष्यै नमः, अर्घ्य।
मृगावती देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मृगावत्यै नमः, अर्घ्य।
मृणालिनी देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मृणालिन्यै नमः, अर्घ्य।
मनःपुष्टि देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मनःपुष्टयै नमः, अर्घ्य।
महाशवती देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाशवत्यै नमः, अर्घ्य।
महार्थदा देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महार्थदायै नमः, अर्घ्य।
मूलाधारा देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।६९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मूलाधारायै नमः, अर्घ्य।

मृडानी देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।७०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मृडान्यै नमः, अर्घ्यं।
मत्ता देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।७१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मत्तायै नमः, अर्घ्यं।
मातंगगामिनी देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।७२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मातंगगामिन्यै नमः, अर्घ्यं।
मंदाकिनी देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।७३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मंदाकिन्यै नमः, अर्घ्यं।
महाविद्या देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।७४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाविद्यायै नमः, अर्घ्यं।
मर्यादा देवी, इस जग में आनन्द करती हो।
दुःख दूर करो इस जग का, सबको आनन्द करती हो।।७५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मर्यादायै नमः, अर्घ्यं।
मेघमालिनी है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।७६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मेघमालिन्यै नमः, अर्घ्यं।
माता है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।७७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मात्रे नमः, अर्घ्यं।
मातामही है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।७८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मातामह्यै नमः, अर्घ्यं।
मन्दगति है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।७९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मंदगत्यै नमः, अर्घ्यं।

महाकेशी है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाकेश्यै नमः, अर्घ्यं।
महीधरा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महीधरायै नमः, अर्घ्यं।
महोत्साहा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महोत्साहायै नमः, अर्घ्यं।
महादेवी है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महादेव्यै नमः, अर्घ्यं।
महिला है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महिलायै नमः, अर्घ्यं।
मानवर्द्धिनी है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मानवर्द्धिन्यै नमः, अर्घ्यं।
महाग्रहा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाग्रहायै नमः, अर्घ्यं।
महाहरा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाहरायै नमः, अर्घ्यं।
महामाया है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महामायायै नमः, अर्घ्यं।
मोक्षमार्गप्रकाशिनी है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।८९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मोक्षमार्गप्रकाशिन्यै नमः, अर्घ्यं।

मान्या है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मान्यायै नमः, अर्घ्यं।
मानवती है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मानवत्यै नमः, अर्घ्यं।
मानी है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मान्यै नमः, अर्घ्यं।
मणिनूपुरशोभिनी है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मणिनूपुरशोभिन्यै नमः, अर्घ्यं।
मणिकान्तिधरा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मणिकान्तिधरायै नमः, अर्घ्यं।
मीना है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मीनायै नमः, अर्घ्यं।
महामतिप्रकाशिनी है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महामतिप्रकाशिन्यै नमः, अर्घ्यं।
महातन्त्रा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महातन्त्रायै नमः, अर्घ्यं।
महादक्षा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महादक्षायै नमः, अर्घ्यं।
मेधा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।६९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मेधायै नमः, अर्घ्यं।

मुग्धा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।१००।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मुग्धायै नमः, अर्घ्य।
महागुणा है तव नाम, शीघ्र करो तुम सबका काम।
जन-जन पूजे मिल भक्ति भाव, हरो सभी का संकट जाल।।१०१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महागुणायै नमः, अर्घ्य।

मंत्र जाप्य १०८ लौंग से।

ॐ ह्रीं श्री पद्मवती देवी मम इच्छितफलप्राप्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्ण अर्घ्य

जलफलादि समस्त मिलायके, यजत हूँ देवि गुण गायके।
भगतवत्सल दीन दयाल हो, करहु भक्त को, सुखी हे मात जी।।
ॐ आं क्रों ह्रीं महाज्योतिष्मत्यादि महागुणान्तशतनामधारिण्यै अर्घ्य समर्पयामि।

शांतिधारा, पुष्पांजलिंक्षिपेत।

चतुर्थ कोष्ठ का अर्घ्य शतक

ये पुष्य अनोखे हे जगदम्बे, तव ढिग लेकर मैं आया।
चरणों में अर्पण करता हूँ माँ मिटे जगत का अँधियारा।।
हम तेरे चरणों में आये, शुभ कर्म की इच्छा लेकर ।
अति शीघ्र करो माता तेरी शरण गही, दया कर दो।।१।।
इति चतुर्थ कोष्ठ पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।

जिनमाता भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जिनमात्रे नमः, अर्घ्य।

जिनेन्द्रा भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जिनेन्द्रायै नमः, अर्घ्य।

जयंती भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जयंत्यै नमः, अर्घ्य।

जगदीश्वरी भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जगदीश्वर्यै नमः, अर्घ्य।

जेया भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जेयायै नमः, अर्घ्य।

जयवती भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जयवत्यै नमः, अर्घ्य।

जाया भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जायायै नमः, अर्घ्य।

जननी भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।9।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जनन्यै नमः, अर्घ्य।
जनपालिनी भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।10।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जनपालिन्यै नमः, अर्घ्य।
जगन्मातृ भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।11।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जगन्मात्रे नमः, अर्घ्य।
जगन्माया भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।12।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जगन्मायायै नमः, अर्घ्य।
जगज्योतिष् भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।13।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जगज्योतिषे नमः, अर्घ्य।
जगज्जिता भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।14।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जगज्जितायै नमः, अर्घ्य।
जागरा भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।15।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जागरायै नमः, अर्घ्य।
जर्जरा भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।16।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जर्जरायै नमः, अर्घ्य।
जेत्री भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।17।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जेत्र्यै नमः, अर्घ्य।
जमुना भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।18।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जमुनायै नमः, अर्घ्य।

जलवासिनी भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।१९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जलवासिन्यै नमः, अर्घ्य।
योगिनी भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।२०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं योगिन्यै नमः, अर्घ्य।
योगमूला भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।२१।
ॐ आं क्रों ह्रीं योगमूलायै नमः, अर्घ्य।
जगद्धात्री भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।२२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जगद्धात्र्यै नमः, अर्घ्य।
जगद्धरा भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।२३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जगद्धरायै नमः, अर्घ्य।
योगपट्टधरा भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।२४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं योगपट्टधरायै नमः, अर्घ्य।
ज्वाला भी नाम तुम्हारा, गुणी जन गुण को गाये प्यारा।
नाम लेत सब दुःख मिट जावे, सब संकट क्षण में नश जावे।।२५।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्वालायै नमः, अर्घ्य।
ज्योतिरूपा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्योतिरूपायै नमः, अर्घ्य।
ज्वालिनी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।२७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्वालिन्यै नमः, अर्घ्य।
ज्वालामुखी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।२८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्वालामुख्यै नमः, अर्घ्य।

ज्वालमाला सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।२९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्वालमालायै नमः, अर्घ्य।

जाज्वल्या सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जाज्वल्यायै नमः, अर्घ्य।

जगद्धिता सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जगद्धितायै नमः, अर्घ्य।

जैनेश्वरी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जैनेश्वर्यै नमः, अर्घ्य।

जिनाधारा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जिनाधारायै नमः, अर्घ्य।

जीवनी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जीवन्यै नमः, अर्घ्य।

यशःपालिनी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं यशःपालिन्यै नमः, अर्घ्य।

यशोदा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं यशोदायै नमः, अर्घ्य।

ज्यायसी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्यायस्यै नमः, अर्घ्य।

ज्येष्ठा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्येष्ठायै नमः, अर्घ्य।

ज्योत्स्ना सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्योत्स्नायै नमः, अर्घ्यं।

ज्वरनाशिनी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्वरनाशिन्यै नमः, अर्घ्यं।

ज्वरलोपा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ज्वरलोपायै नमः, अर्घ्यं।

जराजीर्णा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जराजीर्णायै नमः, अर्घ्यं।

जांगुलाऽभयतर्जिनी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जांगुलाऽभयनर्जिन्यै नमः, अर्घ्यं।

युगभद्रा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं युगभद्रायै नमः, अर्घ्यं।

जगन्मित्रा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जगन्मित्रायै नमः, अर्घ्यं।

यंत्रिणी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं यंत्रिण्यै नमः, अर्घ्यं।

जनभूषणा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जनभूषणायै नमः, अर्घ्यं।

योगेश्वरी सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं योगेश्वर्यै नमः, अर्घ्यं।

योगांगा सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।४९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं योगांगायै नमः, अर्घ्यं।
योगयुक्ता सब संकट हारी, ध्यान करें सब नर-नारी।
इच्छित वस्तु सभी मिल जावे, दुःखियों के संकट मिट जावे।।५०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं योगयुक्तायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही युगादिजा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।५१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं युगादिजायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही यथार्थवादिनी कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।५२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं यथार्थवादिन्यै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही जंबूनदकान्तिधरा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।५३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जंबूनदकान्तिधरायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही जया कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।५४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जयायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही निमेषा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।५५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निमेषायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही नर्तिनी कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।५६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नर्तिन्यै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही ता कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।५७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही नारायणी कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।५८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नारायण्यै नमः, अर्घ्यं।

युग के आदि में जो जाये, वही निर्मदा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।५६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निर्मदायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही नीलात्मिका कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नीलात्मिकायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही निराकारा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निराकारायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही निराधारा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निराधारायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही निराश्रया कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निराश्रयायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही नृपवश्या कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नृपवश्यायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही निरामान्या कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निरामान्यायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही निःसंगा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निःसंगायै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही नृपनंदिनी कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नृपनंदिन्यै नमः, अर्घ्यं।
युग के आदि में जो जाये, वही नृपधर्ममयी कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नृपधर्ममय्यै नमः, अर्घ्यं।

युग के आदि में जो जाये, वही नीति कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।६९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नीत्यै नमः, अर्घ्य।
युग के आदि में जो जाये, वही नूतनी कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।७०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नूतन्यै नमः, अर्घ्य।
युग के आदि में जो जाये, वही नरपालिनी कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।७१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नरपालिन्यै नमः, अर्घ्य।
युग के आदि में जो जाये, वही नंदा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।७२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नंदायै नमः, अर्घ्य।
युग के आदि में जो जाये, वही नन्दवती कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।७३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नन्दवत्यै नमः, अर्घ्य।
युग के आदि में जो जाये, वही निष्ठा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।७४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निष्ठायै नमः, अर्घ्य।
युग के आदि में जो जाये, वही नीरदा कहलाए।
नाम तुम्हारा है अति प्यारा, देव करें सब मिल जयकारा।।७५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नीरदायै नमः, अर्घ्य।
नागों का राजा अति प्यारा, धरणीधर ने जग को धारा।
नाग वल्लभा तुम्ह कहलाई, तव भक्ति करी मनलाइ।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागवल्लभायै नमः, अर्घ्य।
नृत्यप्रिया तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।७७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नृत्यप्रियायै नमः, अर्घ्य।
नन्दिनी तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।७८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नन्दिन्यै नमः, अर्घ्य।

नित्या तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नित्यायै नमः, अर्घ्य।
नौका भी तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नौकायै नमः, अर्घ्य।
निरामया तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निरामयायै नमः, अर्घ्य।
नागपाशधरा तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागपाशधरायै नमः, अर्घ्य।
नौका तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नौकायै नमः, अर्घ्य।
निष्कलंका तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निष्कलंकायै नमः, अर्घ्य।
निरागसा तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निरागसायै नमः, अर्घ्य।
नागवल्ली तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागवल्ल्यै नमः, अर्घ्य।
नागकन्या तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागकन्यायै नमः, अर्घ्य।
नागिनी तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागिन्यै नमः, अर्घ्य।

नागकुण्डली तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागकुण्डल्यै नमः, अर्घ्यं।
निद्रा तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निद्रायै नमः, अर्घ्यं।
नागदमनी तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागदमन्यै नमः, अर्घ्यं।
नेत्रीदेवी तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नैत्र्यै नमः, अर्घ्यं।
नाराचवर्षिणी तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नाराचविर्षण्यै नमः, अर्घ्यं।
निर्विकारा तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निर्विकारायै नमः, अर्घ्यं।
निर्वैरा तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निर्वैरायै नमः, अर्घ्यं।
नागनाथा तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागनाथायै नमः, अर्घ्यं।
नागकल्पभा तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागकल्पभायै नमः, अर्घ्यं।
नागस्वामिननी तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागस्वामिन्यै नमः, अर्घ्यं।

नागरमणी तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।९९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नागरमण्यै नमः, अर्घ्य।
निर्लोभा तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।१००।।
ॐ आं क्रों ह्रीं निर्लोभायै नमः, अर्घ्य।
नित्या तुम्ह कहलाई, भक्त जनों की करो सहाई।
भूत-प्रेत सब ही भग जावे, नाना संकट भी मिट जावे।।१०१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं नित्यानन्दविधायिन्यै नमः, अर्घ्य।

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मावतीदेव्यै नमः। मम इच्छितफलं देहि, स्वाहा।
१०८ बार लौंग से।

जलफलादि वसु द्रव्य मिलाकर तव चरणों में आया हूँ।
पूर्ण अर्घ्य से पूजा करके मनवांछित फल पाया हूँ।।
पद्मावती चरण कमल पर वारि वारि जाऊँ मन वच काय।
हे करुणा निधि, सब दुख मेटे, याते मैं पूजूँ अब आय।।
ॐ आं क्रों ह्रीं जिनमात्रादि नित्यानन्दविधायिन्यन्त शतनामधरिण्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।

।। शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

पंचम कोष्ठ का अर्घ्य शतक

नानाविध सुमन ले, मन में अति हर्षाय ।
पद्मावती पूजा करूँ, पुष्पांजलि चढ़ाय ।।१।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

चिन्तामणि वज्रहस्ता का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।२।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वज्रहस्तायै नमः, अर्घ्य ।

चिन्तामणि वरदा का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।३।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वरदायै नमः, अर्घ्य ।

चिन्तामणि वज्रशीला का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।४।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वज्रशीलायै नमः, अर्घ्य ।

चिन्तामणि वरूथिनी का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।५।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वरूथिन्यै नमः, अर्घ्य ।

चिन्तामणि व्रजा का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।६।।
ॐ आं क्रो ह्रीं व्रजायै नमः, अर्घ्य ।

चिन्तामणि वज्रायुधा का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।७।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वज्रायुधायै नमः, अर्घ्य ।

चिन्तामणि वाणी का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।८।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वाण्यै नमः, अर्घ्य ।

चिन्तामणि विजया का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।९।।
ॐ आं क्रो ह्रीं विजयायै नमः, अर्घ्य ।

चिन्तामणि विश्वव्यापिनी का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।१० ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं विश्वव्यापिन्यै नमः, अर्घ्य ।
चिन्तामणि वसुदा का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।११ ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वसुदायै नमः, अर्घ्य ।
चिन्तामणि बलदा का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।१२ ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं बलदायै नमः, अर्घ्य ।
चिन्तामणि वीरा का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।१३ ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वीरायै नमः, अर्घ्य ।
चिन्तामणि विषया का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।१४ ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं विषयायै नमः, अर्घ्य ।
चिन्तामणि विषमर्दिनी का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।१५ ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं विषमर्दिन्यै नमः, अर्घ्य ।
चिन्तामणि वसुधरा का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।१६ ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वसुधरायै नमः, अर्घ्य ।
चिन्तामणि वरा का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।१७ ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वरायै नमः, अर्घ्य ।
चिन्तामणि विश्वा का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।१८ ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं विश्वायै नमः, अर्घ्य ।
चिन्तामणि वर्णिनी का, गाऊँ गुण अपार ।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार ।।१९ ।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वर्णिन्यै नमः, अर्घ्य ।

चिन्तामणि वायुगामिनी का, गाऊँ गुण अपार।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार।।२०।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वायुगामिन्यै नमः, अर्घ्य।
चिन्तामणि बहुवर्णा का, गाऊँ गुण अपार।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार।।२१।।
ॐ आं क्रो ह्रीं बहुवर्णायै नमः, अर्घ्य।
चिन्तामणि बीजवती का, गाऊँ गुण अपार।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार।।२२।।
ॐ आं क्रो ह्रीं बीजवत्यै नमः, अर्घ्य।
चिन्तामणि विद्या का, गाऊँ गुण अपार।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार।।२३।।
ॐ आं क्रो ह्रीं विद्यायै ममः, अर्घ्य।
चिन्तामणि बुद्धिमती का, गाऊँ गुण अपार।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार।।२४।।
ॐ आं क्रो ह्रीं बुद्धिमत्यै नमः, अर्घ्य।
चिन्तामणि विभा का, गाऊँ गुण अपार।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार।।२५।।
ॐ आं क्रो ह्रीं विभायै नमः, अर्घ्य।
चिन्तामणि वेधा का, गाऊँ गुण अपार।
जो जपे इस नाम को पावे सुख अपार।।२६।।
ॐ आं क्रो ह्रीं वेधायै नमः, अर्घ्य।
वामवती देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।२७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वामवत्यै नमः, अर्घ्य।
वामा देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।२८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वामायै नमः, अर्घ्य।
विनिद्रा देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।२९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विनिद्रायै नमः, अर्घ्य।

वंशभूषणा देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वंशभूषणायै नमः, अर्घ्यं।
वरारोहा देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वरारोहायै नमः, अर्घ्यं।
विशोका देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विशोकायै नमः, अर्घ्यं।
वेदरूपा देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वेदरूपायै नमः, अर्घ्यं।
विभूषणा देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विभूषणायै नमः, अर्घ्यं।
विशाला देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विशालायै नमः, अर्घ्यं।
वारुणी देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वारुण्यै नमः, अर्घ्यं।
वल्या देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वल्यायै नमः, अर्घ्यं।
बालिका देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बालिकायै नमः, अर्घ्यं।
बालकप्रिया देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।३९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बालकप्रियायै नमः, अर्घ्यं।

वर्तिनी देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वर्तिन्यै नमः, अर्घ्य।
विषघ्नी देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विषघ्न्यै नमः, अर्घ्य।
बाला देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बालायै नमः, अर्घ्य।
विविक्ता देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विविक्तायै नमः, अर्घ्य।
वनवासिनी देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वनवासिन्यै नमः, अर्घ्य।
वंध्या देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वंध्यायै नमः, अर्घ्य।
विधिसुता देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विधिसुतायै नमः, अर्घ्य।
वेला देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वेलायै नमः, अर्घ्य।
विश्वयोनि देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वयोन्यै नमः, अर्घ्य।
बुधप्रिया देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।४९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बुधप्रियायै नमः, अर्घ्य।

बलदा देवी अति प्यारी, सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।५०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बलदायै नमः, अर्घ्य।
वीरमाता देवी अति प्यारी सब मिल गुण गावें नर-नारी।
हम सब तेरी भक्ति करते, पल में संकट सारे हरते।।५१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वीरमात्रे नमः, अर्घ्य।
वीरसू को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।५२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वीरस्वै नमः, अर्घ्य।
वीरनन्दिनी को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।५३।।
ॐ जां क्रों ह्रीं वीरनन्दिन्यै नमः, अर्घ्य।
वरायुधधरा को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।५४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वरायुधधरायै नमः, अर्घ्य।
वेषा को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।५५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वेषायै नमः, अर्घ्य।
वारिदा को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।५६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वारिदायै नमः, अर्घ्य।
बलशालिनी को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।५७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बलशालिन्यै नमः, अर्घ्य।
बुद्धमाता को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।५८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बुद्धमात्रे नमः, अर्घ्य।
वैद्यमाता को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।५९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वैद्यमात्रे नमः, अर्घ्य।

बंधुरा को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बंधुरायै नमः, अर्घ्य।
बन्धुरूपिणी को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बन्धुरूपिण्यै नमः, अर्घ्य।
विद्यामती को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विद्यामत्यै नमः, अर्घ्य।
विशालाक्षी को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विशालाक्ष्यै नमः, अर्घ्य।
वेदमाता को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वेदमात्रे नमः, अर्घ्य।
विभास्वरी को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विभास्वर्यै नमः, अर्घ्य।
वात्याली को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वात्याल्यै नमः, अर्घ्य।
विषमा को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विषमायै नमः, अर्घ्य।
वीशा को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वीशायै नमः, अर्घ्य।
वेदवेदांगधारिणी को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।६९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वेदवेदांगधारिण्यै नमः, अर्घ्य।

वेदमार्गरता को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।७०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वेदमार्गरतायै नमः, अर्घ्य।
व्यक्ता को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।७१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं व्यक्तायै नमः, अर्घ्य।
विलोमा को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।७२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विलोमायै नमः, अर्घ्य।
वादशालिनी को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।७३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वादशालिन्यै नमः, अर्घ्य।
विश्वमाता को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।७४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वमात्रे नमः, अर्घ्य।
विपंका को ध्यायकर, पूजे मन वच लाय।
मनवांछित ही फल मिले, दुःख दूर हो जाय।।७५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विपंकायै नमः, अर्घ्य।
जय वंशजा धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वंशजायै नमः, अर्घ्य।
जय विश्वदीपिका धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।७७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वदीपिकायै नमः, अर्घ्य।
जय वसंतरूपिणी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।७८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वसंतरूपिण्यै नमः, अर्घ्य।
जय वर्षा धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।७९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वर्षायै नमः, अर्घ्य।

जय विमला धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विमलायै नमः, अर्घ्य।
जय विविधायुधा धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विविधायुधायै नमः, अर्घ्य।
जय विज्ञानिनी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विज्ञानिन्यै नमः, अर्घ्य।
जय विपाशा धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विपाशायै नमः, अर्घ्य।
जय विपंची धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विपंच्यै नमः, अर्घ्य।
जय बंधमोक्षिणी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बंधमोक्षिण्यै नमः, अर्घ्य।
जय विश्वरूपवती धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वरूपवत्यै नमः, अर्घ्य।
जय वृद्धायै धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वृद्धायै नमः, अर्घ्य।
जय विनीता धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विनीतायै नमः, अर्घ्य।
जय विशिखाविभा धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।८९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विशिखाविभायै नमः, अर्घ्य।

जय व्यालिनी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं व्यालिन्यै नमः, अर्घ्यं।
जय व्याललीला धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं व्याललीलायै नमः, अर्घ्यं।
जय व्याप्तव्याधिविनाशिनी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं व्याप्तव्याधिविनाशिन्यै नमः, अर्घ्यं।
जय विमाहा धर्म कमाये, सु ख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विमोहायै नमः, अर्घ्यं।
जय बाणसन्दोहा धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बाणसन्दोहायै नमः, अर्घ्यं।
जय वर्द्धिनी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वर्द्धिन्यै नमः, अर्घ्यं।
जय वर्द्धमानकाया धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वर्द्धमानकायायै नमः, अर्घ्यं।
जय व्यालेश्वरप्रिया धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं व्यालेश्वरप्रियायै नमः, अर्घ्यं।
जय प्राणप्रेयसी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं प्राणप्रेयस्यै नमः, अर्घ्यं।
जय वसुदायिनी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।६९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वसुदायिन्यै नमः, अर्घ्यं।

जय विश्वेश्वरी धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।१००।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विश्वेश्वर्यै नमः, अर्घ्य।
जय व्यन्तरेन्दीवरदात्री धर्म कमाये, सुख को पाये मनहारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ पुण्य कमाऊँ, फल को पाऊँ सुखकारी।।१०१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं व्यन्तरेन्दीवरदात्र्यै नमः, अर्घ्य।

मंत्र जाप्य १०८ लौंगो से

ॐ ह्रीं श्री पद्मावतीदेव्यै नमः। मम इच्छितफलप्राप्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्ण अर्घ्य।

जल चंदन अक्षतादि लेकर आया हूँ माँ तेरे पास।
हाथ जोड़कर वंदन कर मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ तेरे पास।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वज्रहस्तादि व्यन्तरेन्दीवरदात्र्यन्तशतनामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामि, स्वाहा।

।। शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

षष्ठ कोष्ठ का अर्घ्यशतक

पुष्प सुगन्धित ले कर पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
पद्मावती माता के चरणों में अर्पण करूँ।।१।।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जय-जय श्री कामदा देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कामदायै नमः, अर्घ्य।

जय-जय श्री कमला देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कमलायै नमः, अर्घ्य।

जय-जय श्री काम्या देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं काम्यायै नमः, अर्घ्य।

जय-जय श्री कामांगा देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कामांगायै नमः, अर्घ्य।

जय-जय श्री काम्यसाधिनी देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं काम्यसाधिन्यै नमः, अर्घ्यं ।
जय-जय श्री कलावती देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।७ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलावत्यै नमः, अर्घ्यं ।
जय-जय श्री कलापूर्णा देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।८ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलापूर्णायै नमः, अर्घ्यं ।
जय-जय श्री कलाधरा देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलाधरायै नमः, अर्घ्यं ।
जय-जय श्री कनीयसी देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।१० ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनीयस्यै नमः, अर्घ्यं ।
जय-जय श्री कामिनी देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।११ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कामिन्यै नमः, अर्घ्यं ।

जय-जय श्री कमनीयांगा देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।१२ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कमनीयांगायै नमः, अर्घ्य ।
जय-जय श्री कनककांचनसन्निभा देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।१३ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनककांचनसन्निमायै नमः, अर्घ्य ।
जय-जय श्री कात्यायनी देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।१४ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कात्यायन्यै नमः, अर्घ्य ।
जय-जय श्री कान्तिदा देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।१५ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कान्तिदायै नमः, अर्घ्य ।
जय-जय श्री केवला देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।१६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं केवलायै नमः, अर्घ्य ।
जय-जय श्री कामरूपिणी देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।१७ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कामरूपिण्यै नमः, अर्घ्य ।

जय-जय श्री कानीना देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।१८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कानीनायै नमः, अर्घ्य।
जय-जय श्री कमलामोदा देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।१९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कमलामोदायै नमः, अर्घ्य।
जय-जय श्री कम्रा देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।२०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कम्रायै नमः, अर्घ्य।
जय-जय श्री कान्ता देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।२१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कान्तायै नमः, अर्घ्य।
जय-जय श्री करप्रिया देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।२२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं करप्रियायै नमः, अर्घ्य।
जय-जय श्री कायस्था देवी हमारी।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ।।२३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कायस्थायै नमः, अर्घ्य।

जय-जय श्री कालिका देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।२४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कालिकायै नमः, अर्घ्य ।
जय-जय श्री काली देवी हमारी ।
जय सर्व विघ्ननाश सकल जीव उबारी ।।
जय-जय श्री इस देवी की मैं वन्दना करूँ ।
जय अष्ट रिद्धि पाय मैं अर्चना करूँ ।।२५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं काल्यै नमः, अर्घ्य ।
श्री कुमारी आज सब दुःख दूर करो ।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे ।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को ।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ ।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुमार्यै नमः, अर्घ्य ।
श्री कालरूपिणी आज सब दुःख दूर करो ।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे ।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को ।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ ।।२७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कालरूपिण्यै नमः, अर्घ्य ।
श्री काला आज सब दुःख दूर करो ।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे ।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को ।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ ।।२८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कालायै नमः, अर्घ्य ।
श्री कारा आज सब दुःख दूर करो ।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे ।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को ।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ ।।२९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कारायै नमः, अर्घ्य ।

श्री कामधेनु आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कामधेन्वै नमः, अर्घ्य।
श्री कासी आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कास्यै नमः, अर्घ्य।
श्री कमललोचना आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कमललोचनायै नमः, अर्घ्य।
श्री कुन्तला आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुन्तलायै नमः, अर्घ्य।
श्री कनकाभा आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कनकाभायै नमः, अर्घ्य।
श्री काश्मीर कुंकुमप्रिया आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं काश्मीरकुंकुमप्रियायै नमः, अर्घ्य।

श्री कृपावती आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कृपावत्यै नमः, अर्घ्य।

श्री कुण्डलिनी आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुण्डलिन्यै नमः, अर्घ्य।

श्री कुण्डलाकारशायिनी आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुण्डलाकारशायिन्यै नमः, अर्घ्य।

श्री कर्कशा आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।३९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कर्कशायै नमः, अर्घ्य।

श्री कोमला आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कोमलायै नमः, अर्घ्य।

श्री काष्ठा आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं काष्ठायै नमः, अर्घ्य।

श्री कौलिकी आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कौलिक्यै नमः, अर्घ्य।

श्री कुलबालिका आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुलबालिकायै नमः, अर्घ्य।

श्री कालचक्रधरा आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कालचक्रधरायै नमः, अर्घ्य।

श्री कल्पा आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कल्पायै नमः, अर्घ्य।

श्री कलिका आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलिकायै नमः, अर्घ्य।

श्री काम्यकारिणी आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं काम्यकारिण्यै नमः, अर्घ्य।

श्री कविप्रिया आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कविप्रियायै नमः, अर्घ्यं।
श्री कौशाम्बी आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कौशाम्ब्यै नमः, अर्घ्यं।
श्री कारिणी आज सब दुःख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।५०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कारिण्यै नमः, अर्घ्यं।
श्री कोषवर्द्धिनी आज सब दुख दूर करो।
मैं भक्ति करूँ निशिदिन ज्ञान की ज्योति बढे।।
मैं आया द्वार तुम्हारे पूजन करने को।
तुम हृदय विराजो आज चरणों का ध्यान करूँ।।५१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कोषवर्द्धिन्यै नमः, अर्घ्यं।
कुशावती को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।५२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुशावत्यै नमः, अर्घ्यं।
करालाभा को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।५३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं करालाभायै नमः, अर्घ्यं।
कौशस्था को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।५४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कौशस्थायै नमः, अर्घ्यं।

कान्तिवर्द्धिनी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।५५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कान्तिवर्द्धिन्यै नमः, अर्घ्य।
कादम्बरी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।५६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कादम्बर्यै नमः, अर्घ्य।
कोशधरा को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।५७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कोशधरायै नमः, अर्घ्य।
कोशाक्षी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।५८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कोशाक्ष्यै नमः, अर्घ्य।
कोशवासिनी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।५९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कोशवासिन्यै नमः, अर्घ्य।
कालघ्नी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कालघ्न्यै नमः, अर्घ्य।
कालहननी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कालहनन्यै नमः, अर्घ्य।
कौमारी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कौमार्यै नमः, अर्घ्य।
कुलजा को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुलजायै नमः, अर्घ्य।
कृती को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कृत्यै नमः, अर्घ्य।

कैवल्यदायिनी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।६५ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं कैवल्यदायिन्यै नमः, अर्घ्य ।
केका को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।६६ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं केकायै नमः, अर्घ्य ।
कर्मधनी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।६७ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं कर्मधन्यै नमः, अर्घ्य ।
कालवर्जिनी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।६८ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं कालवर्जिन्यै नमः, अर्घ्य ।
कलंकरहिता को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।६९ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलंकरहितायै नमः, अर्घ्य ।
कन्या को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।७० । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं कन्यायै नमः, अर्घ्य ।
करुणालयवासिनी को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।७१ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं करुणालयवासिन्यै नमः, अर्घ्य ।
कर्पूरामोदनिःश्वासा को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।७२ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं कर्पूरामोदनिःश्वासायै नमः, अर्घ्य ।
कामबीजवत्ती को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।७३ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं कामबीजवत्यै नमः, अर्घ्य ।
कली को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम ।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान । ।७४ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं कल्यै नमः, अर्घ्य ।

कुलीना को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।७५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुलीनायै नमः, अर्घ्यं।

कुन्दपुष्पाभा को भक्ति वश कोटि-कोटि प्रणाम।
भक्ति का फल मैं चाहूँ पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुन्दपुष्पाभायै नमः, अर्घ्यं।

कुक्कुटोरगवाहिनी की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।७७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुक्कुटोरगवाहिन्यै नमः, अर्घ्यं।

कलिप्रिया की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।७८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कलिप्रियायै नमः, अर्घ्यं।

कामबाणा की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।७९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कामबाणायै नमः, अर्घ्यं।

कमठोपरिशायिनी की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कमठोपरिशायिन्यै नमः, अर्घ्यं।

कठोरा की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कठोरायै नमः, अर्घ्य।
कठिना की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कठिनायै नमः, अर्घ्य।
क्रूरा की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्रूरायै नमः, अर्घ्य।
कन्दला की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कन्दलायै नमः, अर्घ्य।
कदलीप्रिया की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कदलीप्रियायै नमः, अर्घ्य।
क्रोधिनी की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्रोधिन्यै नमः, अर्घ्य।

क्रोधरूपा की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्रोधरूपायै नमः, अर्घ्यं।
चक्रहुँकारवर्तिनी की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रहुँकारवर्तिन्यै नमः, अर्घ्यं।
कम्बोजिनी की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।८९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कम्बोजिन्यै नमः, अर्घ्यं।
काण्डरूपा की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।९०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं काण्डरूपायै नमः, अर्घ्यं।
कोदण्डकरधारिणी की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।९१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कोदण्डकरधारिण्यै नमः, अर्घ्यं।
कुहुक्रीडावती की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।९२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुहुक्रीडावत्यै नमः, अर्घ्यं।

कीडा की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कीडायै नमः, अर्घ्य।
कुमारानंददायिनी की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुमारानंददायिन्यै नमः, अर्घ्य।
कुतूहला की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुतूहलायै नमः, अर्घ्य।
केतुरूपा की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं केतुरूपायै नमः, अर्घ्य।
केतकी की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं केतक्यै नमः, अर्घ्य।
कमलासना की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कमलासनायै नमः, अर्घ्य।

कोपिनी की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।९९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कोपिन्यै नमः, अर्घ्य।
कोपरूपा की जो वन्दना करें।
वे अल्पमृत्यु जित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें भजूँ।
सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने को तुम्हें भजूँ।।१००।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कोपरूपायै नमः, अर्घ्य।
कुसुमावासवासि की वन्दना करे।
वे अल्पमुत्युजित पूर्ण आयु को धरें।।
मैं कर्म अशुभ मेटने को ही तुम्हें मजूं।
सम्पूर्ण सिद्धि प्रापत करने को तुम्हें मजूं।।१०१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कुसुमावास वासिन्यै नमः अर्घ्य।

मंत्रजाप १०८ लौंगों से करें।

ॐ ह्रीं श्री पद्मावतीदेव्यै नमः। मम इच्छितफलप्राप्तिं कुरु कुरु, स्वाहा।

पूर्ण अर्घ्य

जय मलय तन्दुल सुमन चरु दीप, धूप फलावलि।
करि अरघ चरचों चरनयुग माँ मोही दुःख से टार हि।।
पद्मावती शत नाम की जयमाल सुन्दर गावहुँ।
तव भक्ति करहुं शोणपाणे मात सब दुःख टार हि।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कामदादिकुसुमावास वासिन्यन्तशतनामधारिण्यै
अर्घ्य समर्पयामि।

।। शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सप्तम कोष्ठ का अर्घ्यशतक

सरस्वती सत नाम की पुष्पांजलि चढ़ाय।
पुष्पों के अर्पण से मिले, सुख शान्ति महान्।।१।।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।
सरस्वती मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सरस्वत्यै नमः, अर्घ्य।
शरण्या मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शरण्यायै नमः, अर्घ्य।
सहस्राक्षी मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सहस्राक्ष्यै नमः, अर्घ्य।
सरोजगा मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सरोजगायै नमः, अर्घ्य।
शिवा मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शिवायै नमः, अर्घ्य।
सती मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सत्यै नमः, अर्घ्य।
सुधारूपा मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुधारूपायै नमः, अर्घ्य।

ि शिवमाया मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
र हे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शिवमायायै नमः, अर्घ्य।

सिता मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।१०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सितायै नमः, अर्घ्य।

शुभा मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।११।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शुभायै नमः, अर्घ्य।

सुमेधा मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।१२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुमेधायै नमः, अर्घ्य।

सुमुखी मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।१३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुमुख्यै नमः, अर्घ्य।

सत्या मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।१४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सत्यायै नमः, अर्घ्य।

सावित्री मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।१५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सावित्र्यै नमः, अर्घ्य।

सामगायिनी मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।१६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सामगायिन्यै नमः, अर्घ्य।

सुरोत्तमा मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।१७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुरोत्तमायै नमः, अर्घ्य।

सुप्रभा मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।१८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुप्रभायै नमः, अर्घ्य।

श्रीरूपा मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।१९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीरूपायै नमः, अर्घ्य।
शास्त्रशालिनी मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।२०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शास्त्रशालिन्यै नमः, अर्घ्य।
शान्ता मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।२१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शान्तायै नमः, अर्घ्य।
सुलोचना मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।२२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुलोचनायै नमः, अर्घ्य।
साध्वी मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।२३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं साध्व्यै नमः, अर्घ्य।
सिद्धसाध्या मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।२४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सिद्धसाध्यायै नमः, अर्घ्य।
सुधात्मिका मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।२५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुधात्मिकायै नमः, अर्घ्य।
शारदा मम उर बसो पूर्ण तिष्ठो आय।
रहे सदैव दयालुता, कहता सेवक गाय।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शारदायै नमः, अर्घ्य।
सरला मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।२७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सरलायै नमः, अर्घ्य।

सारा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।२८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सारायै नमः, अर्घ्य।
सुवेणी मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।२९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवेण्यै नमः, अर्घ्य।
सुयशप्रदा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुयशप्रदायै नमः, अर्घ्य।
शंका मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शंकायै नमः, अर्घ्य।
शमता मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शमतायै नमः, अर्घ्य।
शुद्धा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शुद्धायै नमः, अर्घ्य।

शकमान्या मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं शकमान्यायै नमः, अर्घ्य।
शुभंकरी मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभंकर्यै नमः, अर्घ्य।
सुधाहाररता मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सुधाहाररतायै नमः, अर्घ्य।
श्यामा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्यामायै नमः, अर्घ्य।
शमा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं शमायै नमः, अर्घ्य।
शीलवती मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।३९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं शीलवत्यै नमः, अर्घ्य।

शरा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शरायै नमः, अर्घ्य।
शीतला मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शीतलायै नमः, अर्घ्य।
सुभगा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुभगायै नमः, अर्घ्य।
सावी मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं साव्यै नमः, अर्घ्य।
सुकेशी मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुकेश्यै नमः, अर्घ्य।
शैलवासिनी मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शैलवासिन्यै नमः, अर्घ्य।

शालिनी मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शालिन्यै नमः, अर्घ्य।
साक्षिणी मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं साक्षिण्यै नमः, अर्घ्य।
सोमा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सोमायै नमः, अर्घ्य।
सुभिक्षा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।४९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुभिक्षायै नमः, अर्घ्य।
शिवप्रेयसी मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।५०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शिवप्रेयस्यै नमः, अर्घ्य।
सुवर्णा मेरी बात को सब भाँति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो, विघ्न निवारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करपंख की छाया करो दुःख दर्द निवारो।।५१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुवर्णायै नमः, अर्घ्य।

तुम शोणवर्णरूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।५२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शोणवर्णायै नमः, अर्घ्यं।
तुम सुन्दरी रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।५३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुन्दर्यै नमः, अर्घ्यं।
तुम सुरसुन्दरी रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।५४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुरसुन्दर्यै नमः, अर्घ्यं।
तुम शक्ति रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।५५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शक्त्यै नमः, अर्घ्यं।
तुम सुषा रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।५६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुषायै नमः, अर्घ्यं।
तुम शौरिका रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।५७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शौरिकायै नमः, अर्घ्यं।

तुम सेव्या रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।५८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सेव्यायै नमः, अर्घ्य।
तुम श्रिया रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।५९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्रियै नमः, अर्घ्य।
तुम सुजानिर्चिता रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुजानिर्चितायै नमः, अर्घ्य।
तुम शिवदूती रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शिवदूत्यै नमः, अर्घ्य।
तुम श्वेतवर्णा रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्वेतवर्णायै नमः, अर्घ्य।
तुम शुभ्राभा रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शुभ्राभायै नमः, अर्घ्य।

तुम शोभनाशिखा रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शोभनाशिखायै नमः, अर्घ्य।
तुम सिंहिका रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सिंहिकायै नमः, अर्घ्य।
तुम सकला रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सकलायै नमः, अर्घ्य।
तुम शोभा रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शोभायै नमः, अर्घ्य।
तुम स्वामिनी रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं स्वामिन्यै नमः, अर्घ्य।
तुम शिवपोषिणी रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया।।६९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शिवपोषिण्यै नमः, अर्घ्य।

तुम श्रेय का रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया ।
चिन्ताम गे समान कामना की भरैया ।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया ।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया ।।७० ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्रेयस्कायै नमः, अर्घ्य ।
तुम श्रेयसी रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया ।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया ।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया ।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया ।।७१ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्रेयस्यै नमः, अर्घ्य ।
तुम शौर्या रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया ।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया ।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया ।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया ।।७२ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शौर्यायै नमः, अर्घ्य ।
तुम सौदामिनी रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया ।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया ।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया ।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया ।।७३ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सौदामिन्यै नमः, अर्घ्य ।
तुम शुचि रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया ।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया ।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया ।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया ।।७४ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शुच्यै नमः, अर्घ्य ।
तुम सौभागिनी रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया ।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया ।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया ।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया ।।७५ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सौभागिन्यै नमः, अर्घ्य ।

तुम शोषिणी रूपा मन्त्र मूर्ति धरैया ।
चिन्तामणि समान कामना की भरैया ।।
जग जाप योग जैन की सब सिद्धि करैया ।
परवाद के पुरयोग को तत्काल हरैया ।।७६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शोषिण्यै नमः, अर्घ्य ।
मुख चन्द्र सा सुगन्धि चन्द्र धरा है ।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है ।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है ।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है ।।७७ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुगन्ध्यै नमः, अर्घ्य ।
मुख चन्द्र सा सुमनःप्रिया चन्द्र धरा है ।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है ।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है ।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है ।।७८ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुमनःप्रियायै नमः, अर्घ्य ।
मुख चन्द्र सा सौरभेयी चन्द्र धरा है ।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है ।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है ।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है ।।७९ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सौरभेय्यै नमः, अर्घ्य ।
मुख चन्द्र सा सुसुरभि चन्द्र धरा है ।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है ।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है ।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है ।।८० ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुसुरभ्यै नमः, अर्घ्य ।
मुख चन्द्र सा श्वेतातपत्रधारिणी चन्द्र धरा है ।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है ।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है ।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है ।।८१ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्वेतातपत्रधारिण्यै नमः, अर्घ्य ।

मुख चन्द्र सा शृंगारिणी चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।८२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शृंगारिण्यै नमः, अर्घ्य।

मुख चन्द्र सा सत्यवक्त्री चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।८३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सत्यवक्त्र्यै नमः, अर्घ्य।

मुख चन्द्र सा सिद्धार्था चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।८४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सिद्धार्थायै नमः, अर्घ्य।

मुख चन्द्र सा शीलभूषणा चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।८५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शीलभूषणायै नमः, अर्घ्य।

मुख चन्द्र सा सत्यार्थिनी चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सत्यार्थिन्यै नमः, अर्घ्य।

मुख चन्द्र सा संध्याभा चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।८७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं संध्याभायै नमः, अर्घ्य।

मुख चन्द्र सा शची चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।८८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शच्यै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा सत्कृती चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सत्कृत्यै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा सिद्धिदा चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सिद्धिदायै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा संहारकारिणी चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं संहारकारिण्यै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा सिंही चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सिंह्यै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा सप्तार्चिषु चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सप्तार्चिषि नमः, अर्घ्य।

मुख चन्द्र सा सफला चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सफलायै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा अर्घ्यदा चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अर्घ्यदायै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा संध्या चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं संध्यायै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा सिन्दूरवर्णाभा चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सिन्दूरवर्णाभायै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा सिन्दूरतिलकप्रिया चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सिन्दूरतिलकप्रियायै नमः, अर्घ्य।
मुख चन्द्र सा सारंगा चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।६९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सारंगायै नमः, अर्घ्य।

मुख चन्द्र सा सुतरा चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।100।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सुतरायै नमः, अर्घ्य।

मुख चन्द्र सा शुभभाषिणी चन्द्र धरा है।
भुवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरी करा है।।
जुग भान कर्ण कुण्डल सो ज्योति धरा है।
अंग वस्त्र फूल माला अति शोभ धरा है।।101।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शुभभाषिण्यै नमः, अर्घ्य।

मंत्रजाप 108 लौंगों से

ॐ ह्रीं श्री पद्मावतीदेव्यै नमः। मम इच्छितफलप्राप्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्ण अर्घ्य

वसुद्रव्यसंवारी, तुमढिगधारी, आनन्दकारी दृग प्यारी।
तुम हो सुखकारी, करुनाधारी याते तव शरण नरनारी।।
त्वं पद्मेशं भक्तजिनेशं नुत जनेशं वृष राजेशं राजेशं।
हनो दुःख अरिशेषं, गुणगण ईशं दयामूर्त्तेशं मूर्तेशं।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सरस्वत्यादि शुभभाषिण्यन्तशतकनामधारिण्यै अर्घ्य समर्पयामि।

।। शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अष्टम कोष्ठ का अर्घ्यशतक

नानाविधि के पुष्प मँगाकर देवी के चरणों में चढ़ाय।
पुष्पांजलि कर मन हर्षायों दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।१।।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

भुवनेश्वरी भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः, अर्घ्यं।

भूषणा भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूषणायै नमः, अर्घ्यं।

भुवना भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुवनायै नमः, अर्घ्यं।

भूमिपप्रिया भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूमिपप्रियायै नमः, अर्घ्यं।

भूमिभूर्षा भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूमिभूषायै नमः, अर्घ्यं।

भूपवंद्या भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूपवंद्यायै नमः, अर्घ्यं।

भुजगेशप्रिया भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुजगेशप्रियायै नमः, अर्घ्यं।

भुजंगाम्बिका भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।9।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुजंगाम्बिकायै नमः, अर्घ्यं।
भुजंगभूषणा भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।10।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुजंगभूषणायै नमः, अर्घ्यं।
भोगा भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।11।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भोगायै नमः, अर्घ्यं।
भुजंगकरशायिनी भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।12।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुजंगकरशायिन्यै नमः, अर्घ्यं।
मृगी भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।13।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मृग्यै नमः, अर्घ्यं।
भीतिहरा भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।14।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भीतिहरायै नमः, अर्घ्यं।
भाग्या भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।15।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाग्यायै नमः, अर्घ्यं।
भीमभीमाट्टहासिनी भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।16।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भीमभीमाट्टहासिन्यै नमः, अर्घ्यं।
भारती भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।17।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भारत्यै नमः, अर्घ्यं।
भवती भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।18।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भवत्यै नमः, अर्घ्यं।

भंगी भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।१६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भंग्यै नमः, अर्घ्य।
भगिनी भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।२०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भगन्यै नमः, अर्घ्य।
भोगमदिरा भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।२१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भोगमदिरायै नमः, अर्घ्य।
भद्रिका भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।२२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भद्रिकायै नमः, अर्घ्य।
भद्ररूपा भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।२३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भद्ररूपायै नमः, अर्घ्य।
भूतात्मा भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।२४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूतात्मायै नमः, अर्घ्य।
भूतभंजिनी भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।२५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूतभंजिन्यै नमः, अर्घ्य।
भवानी भी नाम है भक्तों के उर आय।
वसुविधि द्रव्य लगायके मैं पूजूँ तुम पाय।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भवान्यै नमः, अर्घ्य।
भैरवी भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।२७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भैरव्यै नमः, अर्घ्य।
भीमा भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।२८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भीमायै नमः, अर्घ्य।

भामिनी भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भामिन्यै नमः, अर्घ्य।
भ्रमनाशिनी भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भ्रमनाशिन्यै नमः, अर्घ्य।
भुजगिनी भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुजगिन्यै नमः, अर्घ्य।
भुशुण्डी भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुशुण्ड्यै नमः, अर्घ्य।
भेदिनी भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भेदिन्यै नमः, अर्घ्य।
भूमि भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूम्यै नमः, अर्घ्य।
भूषणा भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूषणायै नमः, अर्घ्य।
भिन्ना भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भिन्नायै नमः, अर्घ्य।
भाग्यवती भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाग्यवत्यै नमः, अर्घ्य।
भाषा भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाषायै नमः, अर्घ्य।

भोगिनी भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भोगिन्यै नमः, अर्घ्यं।
भोगवल्लभा भी नाम कहायो इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी तुम सब को शान्ति जु दीनी।।४०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भोगवल्लभायै नमः, अर्घ्यं।

भूरिदा भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।४१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूरिदायै नमः, अर्घ्यं।
मुक्तिदा भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।४२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं मुक्तिदायै नमः, अर्घ्यं।
भुक्ति भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।४३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुक्त्यै नमः, अर्घ्यं।
भवसागरतारिणी भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।४४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भवसागरतारिण्यै नमः, अर्घ्यं।
भास्वती भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।४५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भास्वत्यै नमः, अर्घ्यं।
भास्वरा भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भास्वरायै नमः, अर्घ्यं।
भूति भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।४७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूत्यै नमः, अर्घ्यं।
भूतिदा भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।४८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूतिदायै नमः, अर्घ्यं।

भूतिवर्द्धिनी भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूतिवर्द्धिन्यै नमः, अर्घ्य।
भाग्यदा भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम सबको शान्ति जु दीनी।।५०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाग्यदायै नमः, अर्घ्य।
भोगदा भी नाम कहायो, इस युग में नाम बढ़ायो।
देवादिक स्तुति जु कीनी, तुम, सबको शान्ति जु दीनी।।५१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भोगदायै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भोग्या पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।५२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भोग्यायै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भाविनी पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।५३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाविन्यै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भवनाशिनी पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।५४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भवनाशिन्यै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भिक्षु को पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।५५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भिक्षवे नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भट्टारिका पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।५६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भट्टारिकायै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भीरू पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।५७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भीर्वै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भ्रामा पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।५८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भ्रामायै नमः, अर्घ।

अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय ।
भ्रामरी पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व । ।५९ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भ्रामर्यै नमः, अर्घ ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय ।
भवा पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व । ।६० । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भवायै नमः, अर्घ ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय ।
भण्डिनी पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व । ।६१ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भण्डिन्यै नमः, अर्घ ।
भाण्डदा की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय । ।६२ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाण्डादायै नमः, अर्घ ।
भाण्डी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय । ।६३ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाण्ड्यै नमः, अर्घ ।
भल्लकी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय । ।६४ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भल्लक्यै नमः, अर्घ ।
भूरिभजिनी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय । ।६५ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूरिभजिन्यै नमः, अर्घ ।
भूमिगा की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय । ।६६ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूमिगायै नमः, अर्घ ।
भूमिदा की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय । ।६७ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूमिदायै नमः, अर्घ ।
भाष्या की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय । ।६८ । ।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाष्यायै नमः, अर्घ ।

भक्षिणी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भक्षिण्यै नमः, अर्घ।
भृगुरजिनी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।७०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भृगुरजिन्यै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भाराकृन्ता पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।७१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाराकृन्तायै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भूमिभूषा पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।७२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूमिभूषायै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भंजिनी पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।७३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भंजिन्यै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भूमिपालिनी पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।७४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भूमिपालिन्यै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भद्रा को पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।७५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भद्रायै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भगवती को पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भगवत्यै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भक्ता को पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।७७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भक्तायै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
वत्सला पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।७८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वत्सलायै नमः, अर्घ।

अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
भाग्यशालिनी पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भाग्यशालिन्यै नमः, अर्घ।
अष्ट रिद्धि को पायकर इष्ट मित्र सब पाय।
खेचरी पूजूँ सदा हरे सभी का गर्व।।८०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खेचर्यै नमः, अर्घ।
खड्गहस्ता की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।८१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खड्गहस्तायै नमः, अर्घ।
खण्डिनी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।८२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खण्डिन्यै नमः, अर्घ।
खलमर्दिनी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।८३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खलमर्दिन्यै नमः, अर्घ।
खट्वांगधारिणी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।८४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खट्वांगधारिण्यै नमः, अर्घ।
खट्वा की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।८५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खट्वायै नमः, अर्घ।
खड्गा की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खड्गायै नमः, अर्घ।
खगवाहिनी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।८७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खगवाहिन्यै नमः, अर्घ।
षट्चक्रभेदिनी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।८८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं षट्चक्रभेदिन्यै नमः, अर्घ।

ख्याता की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ख्यातायै नमः, अर्घ।
खगपूज्या की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खगपूज्यायै नमः, अर्घ।
खगेश्वरी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं खगेश्वर्यै नमः, अर्घ।
लांगली की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लांगल्यै नमः, अर्घ।
ललना की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ललनायै नमः, अर्घ।
लेखा की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लेखायै नमः, अर्घ।
लेखिनी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लेखिन्यै नमः, अर्घ।
ललितालता की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ललितालतायै नमः, अर्घ।
लक्ष्मी की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लक्ष्म्यै नमः, अर्घ।
लक्ष्मवती की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लक्ष्मवत्यै नमः, अर्घ।

लक्ष्या की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय ।।६६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लक्ष्यायै नमः, अर्घ ।
लाभदा की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय ।।१०० ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लाभदायै नमः, अर्घ ।
लोभवर्जिता की पूजा करके मन अति आनन्द सुख उपजाय ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर नाचूँ गाऊँ मन हर्षाय ।।१०० ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लोभवर्जितायै नमः, अर्घ ।

मंत्रजाप

१०८ लौंगों से

ॐ ह्रीं श्री पद्‌मावतीदेव्यै नमः । मम इच्छितफलप्राप्तिं कुरु कुरु स्वाहा ।

पूर्ण अर्घ्य

जल आदि साजि सब द्रव्य लिया ।
कनकथार धार हम नृत्य किया ।।
सुखदाय पाय यह अर्घ है ।
देवी तुम चरण सेवत हैं ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं भुवनेश्वर्यादिलोभवर्जितान्त शतनामधारिण्यै अर्घ समर्पयामि

शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

नवम कोष्टक का अर्घ्यशतक

कमल केतकी जुही चमेली नाना विधि के पुष्प मँगाय।
देवी जी को अर्पण करके पुष्पांजलि कर मन हर्षाय।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

लीलावती की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लीलावत्यै नमः, अर्घ।

ललामाभा की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ललामाभायै नमः, अर्घ।

लोहमुद्रा की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लोहमुद्रायै नमः, अर्घ।

लिपिप्रिया की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लिपिप्रियायै नमः, अर्घ।

लोकेश्वरी की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लोकेश्वर्यै नमः, अर्घ।

लोकमाता की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लोकमात्रे नमः, अर्घ।

लब्धि की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लब्ध्यै नमः, अर्घ।

लोकान्तपालिनी की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लोकान्तपालिन्यै नमः, अर्घ।
लीला की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लीलायै नमः, अर्घ।
ललामदा की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ललामदायै नमः, अर्घ।
लीला की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।११।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लीलायै नमः, अर्घ।
लावण्या की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लावण्यायै नमः, अर्घ।
ललिता की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ललितायै नमः, अर्घ।
अर्थदा की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अर्थदायै नमः, अर्घ।
लोभघ्नी की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लोभघ्न्यै नमः, अर्घ।
लम्बिनी की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लम्बिन्यै नमः, अर्घ।
लंका की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लंकायै नमः, अर्घ।

लक्षणा की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लक्षणायै नमः, अर्घ।
लक्षवर्जिता की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।१९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लक्षवर्जितायै नमः, अर्घ।
उमा की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।२०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उमायै नमः, अर्घ।
उर्वशी की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।२१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उर्वश्यै नमः, अर्घ।
उदीची की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।२२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उदीच्यै नमः, अर्घ।
उद्योता की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।२३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उद्योतायै नमः, अर्घ।
उद्योतकारिणी की पूजा करूँ मन वच और शरीर।
ज्ञान ध्यान वृद्धि करो हरो जगत की पीर।।२४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उद्योतकारिण्यै नमः, अर्घ।
उदारिणी जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।२५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उदारिण्यै नमः, अर्घ।
उद्धरोदक्या जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उद्धरोदक्यायै नमः, अर्घ।
उद्भिज्या जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।२७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उद्भिज्यायै नमः, अर्घ।

उदकवासिनी जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।२८ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उदकवासिन्यै नमः, अर्घ ।
उदाहारा जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।२६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उदाहारायै नमः, अर्घ ।
उत्तमा जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।३० ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उत्तमायै नमः, अर्घ ।
उत्तमा जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।३१ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उत्तमायै नमः, अर्घ ।
ओषधि उदधितारिणी जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।३२ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ओष्ध्यै नमः, अर्घ ।
उदधितारिणी जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।३३ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उदधितारिण्यै नमः, अर्घ ।
उत्तरा जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।३४ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उत्तरायै नमः, अर्घ ।
उत्तरवादिनी जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।३५ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उत्तरवादिन्यै नमः, अर्घ ।
उद्धरा जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।३६ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उद्धरायै नमः, अर्घ ।
उद्धरनिवासिनी जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद ।।३७ ।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उद्धरनिवासिन्यै नमः, अर्घ ।

उत्कलिनी जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।३८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उत्कलिन्यै नमः, अर्घ।
उत्कलिन्या जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।३९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उत्कलिन्यायै नमः, अर्घ।
उत्कीर्णा जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उत्कीर्णायै नमः, अर्घ।
उत्कररूपिणी जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उत्कररूपिण्यै नमः, अर्घ।
ॐकारा जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ॐकारायै नमः, अर्घ।
ओंकारूपा जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ओंकारूपायै नमः, अर्घ।
अम्बिका जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अम्बिकायै नमः, अर्घ।
अम्बरचारिणी जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अम्बरचारिण्यै नमः, अर्घ।
अमोघाशायुजा जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अमोघाशायुजायै नमः, अर्घ।
अन्ता जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अन्तायै नमः, अर्घ।

अणिमादिगुणसंयुता जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अणिमादिगुणसंयुतायै नमः, अर्घ।
अनादिनिधना जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अनादिनिधनायै नमः, अर्घ।
अनन्ता जगत् चन्द्र भविक खेत की मेघ।
वसु द्रव्यादिक ले पूजूँ हूँ ज्ञानानंद अमंद।।५०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अनन्तायै नमः, अर्घ।
कोदण्डपरिहासिनी की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।५१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दण्डपरिहासिन्यै नमः, अर्घ।
अर्पणा की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।५२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अर्पणायै नमः, अर्घ।
अर्था की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।५३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अर्थायै नमः, अर्घ।
बिन्दुधरा की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।५४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं बिन्दुधरायै नमः, अर्घ।
अलोका की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।५५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अलोकायै नमः, अर्घ।
अलल्यालिवांगना की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।५६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अलल्यालिवांगनायै नमः, अर्घ।
आनन्दा की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।५७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं आनन्दायै नमः, अर्घ।

आनन्दा की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।५८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं आनन्दायै नमः, अर्घ।
अलका की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।५९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अलकायै नमः, अर्घ।
लज्जा की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लज्जायै नमः, अर्घ।
सिद्धिप्रदायिका की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सिद्धिप्रदायिकायै नमः, अर्घ।
अव्यक्ता की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अव्यक्तायै नमः, अर्घ।
अश्रमया की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अश्रमयायै नमः, अर्घ।
अमूर्ति की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अमूर्त्यै नमः, अर्घ।
अजीर्णा की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अजीर्णायै नमः, अर्घ।
अजीर्णहारिणी की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अजीर्णहारिण्यै नमः, अर्घ।
अहंकृत्या की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अहंकृत्यायै नमः, अर्घ।

अजरा की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अजरायै नमः, अर्घ।
अरजस् की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।६९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अरजसे नमः, अर्घ।
अंह्कारा की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।७०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अंह्कारायै नमः, अर्घ।
अराति की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।७१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अरात्यै नमः, अर्घ।
अन्तदा की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।७२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अन्तदायै नमः, अर्घ।
अनुरूप की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।७३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अनुरूपायै नमः, अर्घ।
अर्थमूला की भक्ति वश पूजा करें।
ज्ञान ध्यान समृद्धि पाकर सुख शान्ति में झूला करें।।७४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अर्थमूलायै नमः, अर्घ।
क्रीड़ा क्रीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।७५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्रीड़ायै नमः, अर्घ।
कैरवा क्रीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं कैरवायै नमः, अर्घ।
पालिनी क्रीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।७७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं पालिन्यै नमः, अर्घ।

अनोकहाससुता कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।७८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अनोकहाससुतायै नमः, अर्घ।
अभिद्या कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।७९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अभिद्यायै नमः, अर्घ।
अच्छेद्या कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अच्छेद्यायै नमः, अर्घ।
आकाशगमिनी कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं आकाशगमिन्यै नमः, अर्घ।
अन्तरा कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अन्तरायै नमः, अर्घ।
आराधिता कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं आराधितायै नमः, अर्घ।
आधारा कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं आधारायै नमः, अर्घ।
उदुग्धा कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं उदुग्धायै नमः, अर्घ।
गंधजालिनी कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गंधजालिन्यै नमः, अर्घ।
अलका कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अलकायै नमः, अर्घ।

अलम्बना कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८८।।
ॐ आं कों ह्रीं अलम्बनायै नमः, अर्घ।
अलंघ्या कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।८६।।
ॐ आं कों ह्रीं अलंघ्यायै नमः, अर्घ।
शीता कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६०।।
ॐ आं कों ह्रीं शीतायै नमः, अर्घ।
शेखरधारिणी कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६१।।
ॐ आं कों ह्रीं शेखरधारिण्यै नमः, अर्घ।
आकर्षणा कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६२।।
ॐ आं कों ह्रीं आकर्षणायै नमः, अर्घ।
अधरा कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६३।।
ॐ आं कों ह्रीं अधरायै नमः, अर्घ।
अरागा कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६४।।
ॐ आं कों ह्रीं अरागायै नमः, अर्घ।
मोदजा कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६५।।
ॐ आं कों ह्रीं मोदजायै नमः, अर्घ।
मोदधारिणी कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६६।।
ॐ आं कों ह्रीं मोदधारिण्यै नमः, अर्घ।
अहिनाथा कीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६७।।
ॐ आं कों ह्रीं अहिनाथायै नमः, अर्घ।

अहिप्रिया क्रीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अहिप्रियायै नमः, अर्घ।
अहिप्राणा क्रीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अहिप्राणायै नमः, अर्घ।
अहोश्वरी क्रीड़ा करो सब जगत में घूम।
जल फलादि से पूजकर भक्त मचावे धूम।।१००।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अहोश्वर्यै नमः, अर्घ।

मंत्रजाप १०८ लौंगों से

ॐ ह्रीं श्री पद्मावतीदेव्यै नमः। मम इच्छितफलप्राप्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्ण अर्घ।

जलफलादि मिलाय मनोहरं, अरघ धारत ही सब सुख करं।
जजत हों माँ के गुण गायके, चरण अम्बुज प्रीति लगायके।।
ॐ आं क्रों ह्रीं लीलावत्यादिअहोश्वर्यन्तशतनामधारिण्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

शांति धारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दशम कोष्ठ का अर्घ्य शतक

केतकी, कंज, गुलाब, जुही, पर, सुमन सुवासित मनहारी ।
धारत चरण लहे सुखसारं नसै रोग सब दुःखकारी ।।१।।
पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

यह त्रिनेत्रा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं ।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं ।।२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिनेत्रारं नमः, अर्घ ।

यह त्र्यम्बिका करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं ।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं ।।३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्र्यम्बिकायै नमः, अर्घ ।

यह तन्त्री करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं ।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं ।।४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तंत्र्यै नमः, अर्घ ।

यह त्रिपुरा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं ।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं ।।५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिपुरायै नमः, अर्घ ।

यह त्रिपुरभैरवी करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं ।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं ।।६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिपुरभैरव्यै नमः, अर्घ ।

यह त्रिपृष्ठा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं ।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं ।।७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिपृष्ठायै नमः, अर्घ ।

यह त्रिफणा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं ।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं ।।८।।
ॐ आं क्रों ह्रींत्रिफणायै नमः, अर्घ ।

यह तारा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तारायै नमः, अर्घ।
यह तोतिला करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।१०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तोतिलायै नमः, अर्घ।
यह त्वरिता करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।११।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्वरितायै नमः, अर्घ।
यह तुला करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।१२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तुलायै नमः, अर्घ।
यह तपःप्रिया करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।१३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तपःप्रियायै नमः, अर्घ।
यह तापसी करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।१४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तापस्यै नमः, अर्घ।
यह तपोनिष्ठा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।१५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तपोनिष्ठायै नमः, अर्घ।
यह तपस्विनी करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।१६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तपस्विन्यै नमः, अर्घ।
यह त्रैलोक्यदीपिका करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।१७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिलोक्यदीपिकायै नमः, अर्घ।
यह त्रेधा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।१८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रेधायै नमः, अर्घ।

यह त्रिसन्ध्या करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।१९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिसन्ध्यायै नमः, अर्घ।
यह त्रिपदाश्रया करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।२०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिपदाश्रयायै नमः, अर्घ।
यह त्रिरूपा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।२१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिरूपायै नमः, अर्घ।
यह त्रिपथत्राणा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।२२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिपथत्राणायै नमः, अर्घ।
यह तारा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।२३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तारायै नमः, अर्घ।
यह त्रिपुरसुन्दरी करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।२४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः, अर्घ।
यह त्रिलोचना करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।२५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिलोचनायै नमः, अर्घ।
यह त्रिपथगा करत उपकारं हरत विकारं अघ भारं।
जय यश दातारं बुद्धि विस्तारं करत अपारं सुख सारं।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिपथगायै नमः, अर्घ।
तारामानमर्दिनी की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।२७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं तारामानमर्दिन्यै नमः, अर्घ।
धर्मप्रिया की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।२८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धर्मप्रियायै नमः, अर्घ।

धर्मदा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धर्मदायै नमः, अर्घ।
धर्मिणी की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धर्मिण्यै नमः, अर्घ।
धर्मपालिनी की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धर्मपालिन्यै नमः, अर्घ।
धरा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धरायै नमः, अर्घ।
धरधरा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धरधरायै नमः, अर्घ।
धारा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धारायै नमः, अर्घ।
धात्री की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धात्र्यै नमः, अर्घ।
धर्मांगपालिनी की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धर्मांगपालिन्यै नमः, अर्घ।
धौता की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धौतायै नमः, अर्घ।
धृति की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धृत्यै नमः, अर्घ।

धुरी की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धुर्यै नमः, अर्घ।
धीरा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धीरायै नमः, अर्घ।
धुनुनी की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धुनुन्यै नमः, अर्घ।
धनुर्धरा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धनुर्धरायै नमः, अर्घ।
ब्रह्माणी की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ब्रह्माण्यै नमः, अर्घ।
ब्रह्मगोत्रा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ब्रह्मगोत्रायै नमः, अर्घ।
ब्राह्मणिका की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ब्राह्मणिकायै नमः, अर्घ।
ब्रह्मपालिनी की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ब्रह्मपालिन्यै नमः, अर्घ।
ब्राह्मी की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ब्राह्म्यै नमः, अर्घ।
विद्युत्प्रभा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं विद्युत्प्रभायै नमः, अर्घ।

वीरा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वीरायै नमः, अर्घ।
वीणा की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।५०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वीणायै नमः, अर्घ।
वासवपूजिता की भक्ति वश अर्चा करूँ।
सब रोग शोक नशाय ध्यान तुम चरणन करूँ।।५१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वासवपूजितायै नमः, अर्घ।
गीतप्रिया आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।५२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गीतप्रियायै नमः, अर्घ।
गर्भधरा आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।५३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गर्भधरायै नमः, अर्घ।
गर्भदा आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।५४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गर्भदायै नमः, अर्घ।
गजगामिनी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।५५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गजगामिन्यै नमः, अर्घ।
गंगा आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।५६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गंगायै नमः, अर्घ।
गोदावरी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।५७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गोदावर्यै नमः, अर्घ।
गोर्गा आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।५८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गोर्गायै नमः, अर्घ।

गायत्री आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।५९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गायत्र्यै नमः, अर्घ।
गणपालिनी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गणपालिन्यै नमः, अर्घ।
गोचरी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गोचर्यै नमः, अर्घ।
गोमती आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गोमत्यै नमः, अर्घ।
गुर्वी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गुर्व्यै नमः, अर्घ।
गन्धा आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गन्धायै नमः, अर्घ।
गन्धारिणी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गन्धारिण्यै नमः, अर्घ।
गुहा आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गुहायै नमः, अर्घ।
गरीयसी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गरीयस्यै नमः, अर्घ।
गुणोपेता आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गुणोपेतायै नमः, अर्घ।

गरिष्ठा आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गरिष्ठायै नमः, अर्घ।
गरमर्दिनी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।७०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गरमर्दिन्यै नमः, अर्घ।
गंभीरा आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।७१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गंभीरायै नमः, अर्घ।
गुरुरूपा आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।७२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गुरुरूपायै नमः, अर्घ।
गीता आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।७३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गीतायै नमः, अर्घ।
गर्वापहारिणी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।७४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गर्वापहारिण्यै नमः, अर्घ।
गृहिणी आओ देवी मन आनन्दित होता आज।
तव चरणों की पूजा से माँ दुःख दारिद्र सभी नश जाय।।७५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गृहिण्यै नमः, अर्घ।
ग्राहिणी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ग्राहिण्यै नमः, अर्घ।
गौरी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।७७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गौर्यै नमः, अर्घ।
गन्धारी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।७८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गन्धार्यै नमः, अर्घ।

गन्धवासिनी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गन्धवासिन्यै नमः, अर्घ।
गरुडी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।८०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गरुड्यै नमः, अर्घ।
ग्रासिनी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।८१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ग्रासिन्यै नमः, अर्घ।
गूठा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।८२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गूठायै नमः, अर्घ।
गेहिनी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।८३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गेहिन्यै नमः, अर्घ।
गुणदायिनी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।८४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गुणदायिन्यै नमः, अर्घ।
चक्रमाध्या देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।८५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रमाध्यायै नमः, अर्घ।
चक्रधारा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रधारायै नमः, अर्घ।
चित्रिणी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।८७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चित्रिण्यै नमः, अर्घ।
चित्ररूपिणी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।८८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चित्ररूपिण्यै नमः, अर्घ।

चर्चिता देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चर्चितायै नमः, अर्घ ।
चतुरा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चतुरायै नमः, अर्घ ।
चित्रा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चित्रायै नमः, अर्घ ।
चित्रमाया देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चित्रमायायै नमः, अर्घ ।
चतुर्भुजा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चतुर्भुजायै नमः, अर्घ ।
चन्द्राभा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्राभायै नमः, अर्घ ।
चन्द्रवर्णा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रवर्णायै नमः, अर्घ ।
चक्रिणी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रिण्यै नमः, अर्घ ।
चक्रधारिणी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रधारिण्यै नमः, अर्घ ।
चक्रायुधा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय ।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय ।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रायुधायै नमः, अर्घ ।

चक्रधरा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रधरायै नमः, अर्घ।
चण्डी देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।१००।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चण्ड्यै नमः, अर्घ।
चण्डपराक्रमा देवी का है ठाठ सुन्दर काया मन हर्षाय।
इनकी पूजा करके आज मन में शान्ति सभी मिल जाय।।१०१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चण्डपराक्रमायै नमः। अर्घ समर्पयामि।

मंत्र जाप १०८ लौंगों से

ॐ ह्रीं श्रीपद्मावतीदेव्यै नमः। मम इच्छितफलप्राप्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्ण अर्घ्य

जलगंध आदि मिलाय आठोदरब अर्घ सजायके।
पूजूँ चरन रज भक्तियुत जाते जगत संकट टरे।।
तुम मात जग की नाथ माता मुनिजन की सेवा करो।
तिस चरन आनन्द भरन तारन तरन विरद विशाल हो।।
ॐ आं क्रों ह्रीं त्रिनेत्रादि चण्डपराक्रमान्त शतनाम धारिण्यै अर्घ समर्पयामि।

शांतिधारा, पुष्पांजलिंक्षिपेत्।

ग्यारहवें कोष्टक का अर्घ्यशतक

महके फूल अपार अलि गुंजें जो स्तुति करे।
भौतिक रोग निवार सम्यक् रीति से भजूं। पुष्पांजलिंक्षि०।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चक्रेश्वरी को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रश्वर्यै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चसूचिन्त्या को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चसूचिन्त्यायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चंचला को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चंचलायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चंचलात्मिका को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चंचलात्मिकायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चन्द्रलेखा को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रलेखायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चन्द्रभागा को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रभागायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चन्द्रिका को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रिकायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चन्द्रमण्डला को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रमण्डलायै नमः, अर्घ।

अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चन्द्रकान्ति को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रकान्त्यै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चन्द्रमश्री को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।१०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रमश्रियै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चन्द्रमण्डलवर्तिनी को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।११।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रमण्डलवर्तिन्यै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चतुःसमुद्रपारान्ता को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।१२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चतुःसमुद्रपारान्तायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चतुराश्रमवासिनी को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।१३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चतुराश्रमवासिन्यै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चतुर्मुखी को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।१४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चतुर्मुख्यै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय क्षन्द्रमुखी को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात माह सुख होय।।१५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्षन्द्रमुख्यै नमः, अर्घ्य।।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चतुर्वर्गफलप्रदा को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।१६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चित्स्वरूपा को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।१७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चित्स्वरूपायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चिदानन्दा को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।१८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चिदानन्दायै नमः, अर्घ।

अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चिंतामणि को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।१६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चिंतामण्यै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चिरंतनी को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।२०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चिरंतन्यै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चन्द्रहासा को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।२१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चन्द्रहासायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चामुण्डा को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।२२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चामुण्डायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चेतना को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।२३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चेतनायै नमः, अर्घ।
अष्ट द्रव्यमय अर्घ्य बनाय चौर्यतर्जिनी को मन में ध्याय।
महासुख होय जय-जय मात महा सुख होय।।२४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चौर्यतर्जिन्यै नमः, अर्घ।
चैत्यप्रिया नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।२५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चैत्यप्रियायै नमः, अर्घ।
चैत्यलीना नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चैत्यलीनायै नमः, अर्घ।
चिन्तितार्थफलप्रदा नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।२७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चिन्तितार्थफलप्रदायै नमः, अर्घ।
ह्रींरूपा नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।२८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रींरूपायै नमः, अर्घ।

हंसगामिनी नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।२६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हंसगामिन्यै नमः, अर्घ।

हाकिनी नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हाकिन्यै नमः, अर्घ।

हिंगुला नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हिंगुलायै नमः, अर्घ।

हिता नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हितायै नमः, अर्घ।

हला नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हलायै नमः, अर्घ।

हलधरा नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हलधरायै नमः, अर्घ।

हाला नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हालायै नमः, अर्घ।

हंसवर्णा नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हंसवर्णायै नमः, अर्घ।

हर्षदा नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हर्षदायै नमः, अर्घ।

हिमानी नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हिमान्यै नमः, अर्घ।

हरिता नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।३६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हरितायै नमः, अर्घ।
हीरा नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हीरायै नमः, अर्घ।
हर्षिणी नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हर्षिण्यै नमः, अर्घ।
हरिमर्दिनी नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं हरिमर्दिन्यै नमः, अर्घ।
गोपिनी नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गोपिन्यै नमः, अर्घ।
गौरी देवी नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गौर्यै नमः, अर्घ।
गीर्देवी नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गिरे नमः, अर्घ।
गाथा नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं गाथायै नमः, अर्घ।
दुर्गा नमन तुनको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दुर्गायै नमः, अर्घ।
दुर्ललितादरा नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दुर्ललितादरायै नमः, अर्घ।

दामिनी नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।४६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दामिन्यै नमः, अर्घ।
दीर्घिका नमन तुमको सब दुःख बाधा हर दो माँ।
वसुविधि द्रव्य को लेकर आया धर्म ध्यान रत कर दो माँ।।५०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दीर्घिकायै नमः, अर्घ।
दुग्धा की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।५१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दुग्धायै नमः, अर्घ।
दुर्गमा की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।५२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दुर्गमायै नमः, अर्घ।
दुर्लभोदया की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।५३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दुर्लभोदयायै नमः, अर्घ।
द्वारिका की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।५४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं द्वारिकायै नमः, अर्घ।
दक्षा की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।५५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दक्षायै नमः, अर्घ।
दीक्षा की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।५६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दीक्षायै नमः, अर्घ।
दीक्षितपूजिता की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।५७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दीक्षितपूजितायै नमः, अर्घ।
दमयन्ती की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।५८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दमयन्त्यै नमः, अर्घ।

दानवती की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।५९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दानवत्यै नमः, अर्घ।
द्युति की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं द्युत्यै नमः, अर्घ।
दीप्ता की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दीप्तायै नमः, अर्घ।
दीपमती की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दीपमत्यै नमः, अर्घ।
दरिद्रघ्नी की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दरिद्रघ्न्यै नमः, अर्घ।
वैरिदरा की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वैरिदरायै नमः, अर्घ।
दरा की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दरायै नमः, अर्घ।
दुर्गतिनाशिनी की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दुर्गतिनाशिन्यै नमः, अर्घ।
दर्प्पघ्नी की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दर्प्पघ्न्यै नमः, अर्घ।
दैत्यनाशा की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दैत्यनाशायै नमः, अर्घ।

दर्शिनी की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे। ।६९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दर्शिन्यै नमः, अर्घ।
दर्शनप्रिया की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फ़लादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे। ।७०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं दर्शनप्रियायै नमः, अर्घ।
वृषप्रिया की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे। ।७१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वृषप्रियायै नमः, अर्घ।
वृषभा की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे। ।७२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वृषभायै नमः, अर्घ।
वृषारूढा की पूजाकर के सब दुःख बाधा हर ले रे।
जल फलादि सब द्रव्य को लेकर माता को अर्पण कर ले रे। ।७३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं वृषारूढायै नमः, अर्घ।
प्रबोधिनी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये। ।७४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं प्रबोधिन्यै नमः, अर्घ।
सूक्ष्मा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये। ।७५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सूक्ष्मायै नमः, अर्घ।
सूक्ष्मगती माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये। ।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं सूक्ष्मगत्यै नमः, अर्घ।

श्लक्ष्णा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।७७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं श्लक्ष्णायै नमः, अर्घ।
धनमाला माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।७८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं धनमालायै नमः, अर्घ।
घनध्वनि माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।७६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं घनध्वन्यै नमः, अर्घ।
छाया माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं छायायै नमः, अर्घ।
छत्रच्छवि माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं छत्रच्छव्यै नमः, अर्घ।
क्षीरा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्षीरायै नमः, अर्घ।

क्षीरदा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्षीरदायै नमः, अर्घ।
क्षेत्ररक्षिणी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्षेत्ररक्षिण्यै नमः, अर्घ।
अमरात्मा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अमरात्मने नमः, अर्घ।
अतिरात्री माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं अतिरात्र्यै नमः, अर्घ।
रागिनी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं रागिन्यै नमः, अर्घ।
रतिदारुपा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं रतिदारुपायै नमः, अर्घ।

स्थूला माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।८६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं स्थूलायै नमः, अर्घ।
स्थूलतरा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६०।।
ॐ आं क्रों ह्रीं स्थूलतरायै नमः, अर्घ।
स्थूली माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं स्थूल्यै नमः, अर्घ।
स्थंडिलशया माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं स्थंडिलशयायै नमः, अर्घ।
स्थंडिलवासिनी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं स्थंडिलवासिन्यै नमः, अर्घ।
स्थिरा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६४।।
ॐ आं क्रों ह्रीं स्थिरायै नमः, अर्घ।

स्थाणुमती माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं स्थाणुमत्यै नमः, अर्घ।
देवी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं देव्यै नमः, अर्घ।
घना माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६७।।
ॐ आं क्रों ह्रीं घनायै नमः, अर्घ।
घोरनिनादिनी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं घोरनिनादिन्यै नमः, अर्घ।
क्षेमका माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।६९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्षेमकायै नमः, अर्घ।
क्षेमवती माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।१००।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्षेमवत्यै नमः, अर्घ।

क्षेमदा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।१०१।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्षेमदायै नमः, अर्घ।
क्षेमवर्द्धिनी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।१०२।।
ॐ आं क्रों ह्रीं क्षेमवर्द्धिन्यै नमः, अर्घ।
शैलूषरूपिणी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।१०३।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शैलूषरूपिण्यै नमः, अर्घ।
शिष्टा माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।१०५।।
ॐ आं क्रों ह्रीं शिष्टायै नमः, अर्घ।
संसारार्णवतारिणी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।१०६।।
ॐ आं क्रों ह्रीं संसारार्णवतारिण्यै नमः, अर्घ।
सदासहायिनी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।१०७।।
ॐ आं क्रों ह्रींसदासहायिन्यै नमः, अर्घ।

परमेश्वरी माता भारी सबही को उज्ज्वल करे।
चिरकाल से जो दुःख लागे दरस तैं छिन में भागे।।
तुम परम पावन पुण्य दायक अतुल महिमा जानिये।
अरु हे अनुपम माता रूपवर तास पूजन ठानिये।।१०८।।
ॐ आं क्रों ह्रीं परमेश्वर्यै नमः, अर्घ।

मंत्रजाप १०८ लौंगों से

ॐ ह्रीं श्री पद्मावतीदेव्यै नमः। मम इच्छितफलप्राप्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

पूर्ण अर्घ्य

जल फल वसु साजि हिम थार तन मन मोद धरो।
गुण गाऊँ दुःखो दधितारण पूजत दुःख हरो।।
जय पद्मावती तुम मात जग की नायक हो।
जय सुख सागर भवपार सन्मतिदायक हो।।१०९।।
ॐ आं क्रों ह्रीं चक्रेश्वर्यादि परमेश्वर्यन्ताष्टोत्तरशतनामधारिण्यै
श्री पद्मावतीदेव्यै पूर्णअर्घ समर्पयामि।।

शांतिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ जयमाला

दोहा - पद्मावती सहस्रनाम की जयमाला लिखूँ बनाय।
देवी स्वरूप वर्णन करूँ सुनो भविक जन आय।।१।।
जय पद्मावती देवी महान करते जन तेरे गुणगान।
जो तेरे चरणों में है आया उसको तुम आश्रय देदो माय।।
दुःखों से भटके भविक आज कुछ समझ नहीं आये हे माय।
कोई रोग शोक पीड़ा दुःखाय कोई भूत पिशाच पीड़ा कराय।।२।।
कहाँ व्यन्तर बाधादिक दिखाय कहाँ इति-भीति व्याधि दिखाय।
कोई पुत्र रहित होकर दिखाय कोई धन वैभव से रहित माय।।
जग में इस विध जन कष्ट पाय, कहीं आश्रम दिखता नहीं माय।।
तुम सम्यक्दृष्टि हो हे माय प्रभु चरणों की सेवा महान।।३।।
करके तुमने यश पाय-पाय कीर्ति फैली जग में महान।
सुनकर आया चरणों में माय जग का दुःख मेटो मेरी माय।।
करते व्रत तुम्हारा जग हे माय, उस व्रत का नाम है शुक्रवार।
सप्त शक्रव्रत भी कहाय इस व्रत का फल देवी है माय।।४।।
जग-जन की पीड़ा मेटो माय, करो जन की इच्छा पूरी माय।
जिसकी जो बाधा है जो माय उसकी बाधा तुम हरो माय।।
हम दुःखिया दुःख मेटन को आज आये तेरे द्वारे हे माय।
मति दे करो मेरी ऐ माय छूटे धीरज अब कष्ट पाय।।५।।
दुःख दूर करो सबही प्रकार तुम बिन अब कौन करे सहाय।
तुम बिन हम किसकी शरण जाय, दुःख दूर न करे कोई सहाय।।
पारस उपसर्ग तुम दूर कीना कमठोपसर्ग तुम दूर कीना।
अपने फणपर धारा प्रवीण धरणी ने तुम पर छाया कीना।।६।।
प्रभु ने जब केवल लक्ष्मी पाय इन्द्रादिक से तुम प्रशंसा पाय।
प्रभु चरणों में तुम नृत्य कीना बाजे नाना विध ढोल बीन ।।
तब कर्मों का क्षय अल्प कीना पुण्यानुबन्धि हे पुण्य कीनो।
एकावतार का भव जो प्राप्त तुमने जो कीना सुख प्राप्त।।७।।
सम्यक्ती बनकर तुम महान जिन धर्म की सेवा करो महान।

दुःखियों ने दुःख की करी पुकार तुम आ सहाय अब करो हे माय।
जो सहस्रनाम से करे गान पूजा अर्चा भी करे महान।।
संकट सब उसके शीघ्र जाय सब रोग शोक बाधा पलाय।
इस कारण पूजा करी बनाय कुन्थु का कष्ट मेटो हे माय।।८।।

श्रद्धा सुमन चढ़ायके वसु द्रव्य ले निज हाथ में
जयमाला का मैं अर्घ्य देता, पूर्ण अर्घ्य है साथ में।।६।।

ॐ आं क्रों ह्रीं सहस्रनाम सहित हे पद्मावति देवि जयमाला अर्घ्य समर्पयामि स्वाहा।

जल की झारी लेकर शान्ति धारा दे
शान्ति दे सब जगत को मुझको शान्ति दे
शान्तये शान्तिधारा

कर अंजुल बनाय कर पुष्प समूह ले हाथ
पुष्पांजलि में करत हूँ मन में बहु हर्षाय
परि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आग्रह देख क्षेमा शिष्या का पूजा करी बनाय।
भविक जन पूजा करो मन में शान्ति लाय।।
इति पूजा समाप्त।

पूजा समाप्त होने के बाद विसर्जन करें जिस मंत्र का जितना जाप किया है उस मंत्र की दशांग आहुति अग्नि प्रज्वलित कर होम कुण्ड में दें सप्त शुक्रवार व्रत के उद्यापन में मुनि, आर्यिका श्रावक-श्राविका को भोजन दें विद्वानों का यथा योग्य सत्कार करें। त्यागियों को उनकी योग्यतानुसार उपकरण प्रदान करें। रथोत्सव पूर्वक कार्य को समाप्त करें?

इति

अणिन्दापार्श्व नाथ का अतिशय क्षेत्र महान्।
शुक्रवार व्रत की लिखी पूजा मन हर्षाय।।
दो हजार उनचास का आषाढ शुक्ल महान।
अष्टाणिका की अष्टमी रचना करी समाप्त।।
उदयपुर राजस्थान में क्षेत्र है यह जान।
मेवाड़ बाठरडा बड़ा, उसके नजदीक जान।।

संस्था के नियम

प्रकाशक की ओर से साधु-सन्तों, स्वाध्यायशालाओं, धार्मिक शिक्षण संस्थाओं, शोधरत छात्रों, असमर्थ भाई-बहिनों को पुस्तकें निःशुल्क भेंट की जाती हैं। पूर्ण सेट क्रय करने पर पुस्तकालय, वाचनालय, शिक्षण संस्थाओं के लिए २५% छूट से शास्त्र भेज दिये जाएंगे। सामान्य स्वाध्याय प्रेमियों के लिए १०% छूट है, डाक खर्च अलग से है। आजीवन-सदस्य के लिए सदस्यता शुल्क ११०१.०० रु० है। रुपये अग्रिम भेजने की आवश्यकता है। द्रव्यदाता, आजीवन सदस्य, कार्यकर्ताओं को संस्था की समस्त पुस्तकें निःशुल्क मिलती हैं। आर्थिक दृष्टि से समर्थ सामान्य व्यक्ति से उचित मूल्य इसलिए प्राप्त किया जाता है कि जिससे साहित्य का अवमूल्यन न हो, योग्य व्यक्ति को साहित्य प्राप्त हो, साहित्य का आदर हो, साहित्य प्रकाशन के लिए ज्ञान, दान (सहयोग) हो, साधु आदि को निःशुल्क साहित्य भेजने में आर्थिक आपूर्ति हो एवं उस सहयोग से अधिक से अधिक साहित्य प्रकाशन, प्रचार, प्रसार हो। द्रव्यदाता को उस द्रव्य से प्रकाशित प्रतियों की एक दशमांश प्रतियां भी निःशुल्क प्राप्त होंगी। पुस्तक छापने वाले यदि लागत रुपयों में से कुछ रुपये देने में असमर्थ होंगे तो संस्था उसकी आर्थिक सहायता के साथ-साथ अन्यान्य सहायता करके उसके नाम पर ही उसको पुस्तक छपवा देगी। इसमें संस्था का कोई निहित स्वार्थ नहीं है परन्तु ज्ञान-प्रचार का एकमात्र उद्देश्य है।

निवेदक :

महामन्त्री सतीश जैन

चिन्तामणि ग्रन्थमाला शोध प्रकाशन

श्री चिन्तामणि भगवान पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र

दि. जैन मन्दिर, मोहल्ला सराय, रोहतक-१२४००१

दान दातार सची

क्र.	नाम	राशि
१.	स्व० कैलाशचन्द जैन की याद में द्वारा श्रीमती सुगनमाला जैन पिथवाड़ा मौहल्ला रोहतक	३१००
२.	श्री गोविन्दराम अनिलकुमार जैन गोहाना अड्डा रोहतक	१५००
३.	स्व० हैडमास्टर जगाधरमल जैन की याद में द्वारा श्री ऋषभचन्द जैन उदमीपुरा रोहतक	११००
४.	श्रीमती कान्तीदेवी जैन धर्मपत्नी श्री अग्रचन्द जैन सराय मौ० रोहतक	११००
५.	श्रीमती कुसुमलता जैन धर्मपत्नी श्री द्वीपकुमार जैन सराय मौ० रोहतक	११००
६.	धर्मपत्नी श्री अमरचन्द जैन नवल रेलवे रोड रोहतक	११००
७.	श्रीमती कुसुम जैन धर्मपत्नी श्री राकेशकुमार जैन रेलवे रोड रोहतक	११००
८.	ला० चम्पतराय निपुणकुमार जैन रेलवे रोड रोहतक	११००
९.	श्री विजयकुमार जैन लक्ष्मी प्रिसिजन स्क्रयूज रोहतक	११००
१०.	श्री आदेशकुमार जैन, जैन टैंट हाऊस रोहतक	११००
११	श्री ज्ञानीराम अग्रवाल नई अनाज मण्डी रोहतक	११००
१२.	स्व० नरेशचन्द जैन एडवोकेट की याद मे द्वारा श्री राहुल जैन बाबरा मौ० रोहतक	११००
१३.	स्व० रोशनलाल जैन पसारी की याद में द्वारा श्रीमती प्रकाशवती जैन नया पड़ाव रोहतक	११००
१४	श्रीमती सरलादेवी जैन धर्मपत्नी स्व० ला० लीलूराम जैन सराय मौ० रोहतक	५०१
१५.	श्री जयप्रकाश किशोरकुमार जैन बाबरा मौ० रोहतक	५०१
१६.	श्री लालचन्द अजयकुमार जैन नवल बाबरा मौ० रोहतक	५०१
१७.	श्रीमती शशि जैन धर्मपत्नी श्री राजेश जैन प्रिंसिपल बाबरा मौ० रोहतक	५०१
१८.	श्री महावीरप्रसाद शैलेशकुमार जैन प्रताप टाकीज रोहतक	२५१
१९	श्री रमेशचन्द अजयकुमार जैन उदमीपुरा रोहतक	२५१
२०.	गुप्तदान मार्फत श्री नरेश जैन रोहतक	२५१
२१.	श्री नेमसागर जैन रोहतक	२५१
२२.	श्री महेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमार जैन पिथवाड़ा मौ० रोहतक	१५१

जिन धर्मानुरागी बन्धुओं ने नवरात्रि पूजा विधान छपवाने में आर्थिक सहायता दी, आर्थिक सहायता दिलवाई या अन्य किसी प्रकार का सहयोग दिया, हम उनके सदैव आभारी रहेंगे।

— सतीश जैन, महामन्त्री